बरिस 8 अंक 31

ISSN – Applied For

www.sirijan.com

सिरिजन

भोजपुरी तिमाही ई-पत्रिका

जुलाई-सितम्बर 2026

jai bhojpuri jai bhojpuri @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका
सिरिजन (अंक 31 : जुलाई-सितम्बर 2026)

प्रबंध निदेशक	:	सतीश कुमार त्रिपाठी
संरक्षक	:	नरसिंह तिवारी , (दिल्ली)
प्रधान सम्पादक	:	सुभाष पाण्डेय
सम्पादक	:	डॉ अनिल चौबे
	:	
उपु सम्पादक कार्यकारी सम्पादक सलाहकार सम्पादक	: : :	तारकेश्वर राय संजय कुमार मिश्र राजीव उपाध्याय
सह सम्पादक	:	1. भावेश अंजन
		2. अमरेन्द्र कुमार सिंह
		3. माया चौबे
		4. गणेश नाथ तिवारी
प्रबंध सम्पादक	:	माया शर्मा
आमंत्रित सम्पादक	:	चंद्र भूषण यादव
बिदेश प्रतिनिधि	:	रवि शंकर तिवारी
ब्यूरो चीफ	:	ज्वाला सिंह
ब्यूरो चीफ (बिहार)	:	1.अरविंद सिंह, 2. मिथिलेश साह
ब्यूरो चीफ (प. बंगाल)	:	दीपक कुमार सिंह
ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश)	:	1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी
ब्यूरो चीफ (झारखण्ड)	:	राठौर नितान्त
	:	
दिल्ली, NCR प्रतिनिधि	:	बिनोद गिरी
क़ानूनी सलाहकार	:	नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

मुखपृष्ठ के चित्रकार - श्री अंतरिक्ष

अनुक्रम

संपादकीय
- संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 4

आपन बात
- आपन बात - तारकेश्वर राय / 7

कनखी
- राम जी के चिरई राम जी के खेत - डॉ. अनिल चौबे /12

धारावाहिक
- श्रीमद्भगवद्गीता (भोजपुरी)- कृष्ण मुरारी राय/ 14

अंउजा पथार
- बाहुबली -बिनोद सिंह गहरवार / 18

कविता/गीत/ गजल
- का बतलाईं - संजय मिश्र 'संजय'/24
- ई रात कट जाई - संजय मिश्र 'संजय'/24
- लाली लाली डोलिया-कनक किशोर/25
- सुसुकत बेटी आजु-कनक किशोर/25
- सरग से नींक बाटे गाँव जननी जन्म के भूँई-संगीत सुभाष/32
- राम, लवटि आइत ऊ मौसम-संगीत सुभाष/36
- तनी तनी-संगीत सुभाष/37
- चार गो ग़ज़ल - मनोज भावुक/38
- सब एहीजे मिली-राघवेंद्र प्रकाश 'रघु'/54
- अंगना में उतरे लें सूरज मुंडेर से-डॉ मोहन पाण्डेय 'भ्रमर'/55
- अइबऽ कब?-डॉ दिनेश प्रसाद सिन्हा/56
- पहिलहीं भँवर में डूब जाला-डॉ दिनेश प्रसाद सिन्हा/56
- नाज-नखरा-कृष्ण कुमार श्रीवास्तव "कृष्णा"/57
- राह चलत मुलाकात हो गइल-रंजन प्रकाश/58
- गाँव अभी जिंदा बा-अनीता सिद्धि/68
- नहीं आए सजनवाँ-रामा कांत सिन्हा "सुजीत"/69
- रोपनी के बा दिन आइल-डॉ. मधुबाला सिन्हा/70
- कहऽ कह दीं-डॉ अनिल कुमार दूबे " अंशु "/71
- कर के' देखीं-डॉ अनिल कुमार दूबे " अंशु "/71
- अनजान बा-डॉ अनिल कुमार दूबे " अंशु "/72
- भोजपुरी में बशीर बद्र-नक्कू मझव्वी/73
- बुझाते नइखे-विशाल विद्रोही/74
- आँख उनसे लड़ल-राम अचल पटेल/75
- साँच कहीं तऽ-राम अचल पटेल/75
- निक दिन आवत बा-राम अचल पटेल/76
- जेठ के गरमी-उमेश चौबे "अश्क"/80
- उड़ल जाला बदरा-उमेश चौबे "अश्क"/80
- बीतल जिनगी-सूर्येश प्रसाद निर्मल/111
- बाबूजी-सूर्येश प्रसाद निर्मल/111

पुरुखन के कोठार से
- अंजन जी के कविता / 6
- स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के कविता / 10
- स्व. रामजी सिंह मुखिया के कविता / 11

कथा-कहानी
- भिखारिन - अंकुश्री /23
- चुटकी भर सेनुर-विद्या शंकर विद्यार्थी /40
- रघुनाथ के दालान-विद्या शंकर विद्यार्थी /42
- भीतरी के घाव-बिम्मी कुंवर/60
- सँझवति-गणेश नाथ तिवारी"विनायक"/66
- प्रायश्चित-सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा/81
- करनी के भोग-उमेश कुमार राय/97
- अंतिम पन्ना-अभियन्ता सौरभ कुमार/105
- बड़का नेता आ दुआर प के नीम-अभियन्ता सौरभ कुमार/108

आलेख
- सरग लोक आ नरक लोक - प्रो. (डॉ.) जयकान्त सिंह ' जय '/20
- कोइल-मार्कण्डेय शारदेय/44
- मैनी-मार्कण्डेय शारदेय/49
- भोजपुरी संस्कृति के मिलल बड़ा सम्मान-ओ.पी. पाण्डेय/77
- संस्कृति आ बियाह : मधेशी जीवन के आईना-प्रकाश कट्टारी/95
- जनता जागी त लोकतंत्र बची...सुजीत सिंह (शिक्षक)/103

पुस्तक समीक्षा
- मधेशिया आह से उपजल कथा संग्रह : लालपुर्जा- कनक किशोर/26

हँसी-ठिठोली - संगीत सुभाष / 101

सतमेझरा – 1-3, 13,102,112-113

www.bhojpurisahityangan.com

बरखा, माटी आ मन के मौसम

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

भारतीय जीवन में ऋतु ख़ाली मौसमे ना ह, ऊ लोक संस्कृति के आधारो ह। खासकर भोजपुरी अंचल में आषाढ़, सावन आ भादो—ई तीनू महीना प्रकृति, कृषि, लोकगीत आ मानवीय संवेदना के एगो अद्भुत त्रिवेणी रचेले। आषाढ़ के पहिला बादर से लेके भादो के झमाझम बरखा ले, धरती के रंग बदल जाला, मन के भाव बदल जाला आ जीवन में एगो नया लय उतर आवेला। बरखा के पहिला बूँद जइसे ही धरती पर गिरेला , सूखल माटी से उठे वाली सोंधी गंध मन के भीतर ले उतर जाले।

आषाढ़ के बादर जब उमड़ेला, तब किसान के आँख में उम्मीद के चमक जग जाला। सूखल खेत पानी के बाट जोहत रहेला। पहिला फुहार गिरते ही जोतनी , बोअनी की साथे किसान के मेहनत के नया अध्याय शुरू हो जाला। भोजपुरी लोकगीतन में आषाढ़ के बादर ख़ाली पानी ना ह, बल्कि आशा के दूत ह। एह महीना में धरती अन्न के सपना देखे लागेली । आषाढ़ के तपन के बाद सावन के आगमन केवल मौसम के बदलाव ना ह, ई मनुष्य के भीतर के कोमलता, प्रेम आ नवजीवन के उत्सव ह।

सावन—बरखा के सबसे रसीला, सबसे भावुक महीना ह । झुलुआ, कजरी, हरियाली, मेंहदी आ शिवभक्ति से पूरा जनजीवन भींज उठेला। गाँव के बगइचा में पड़ल झुलुआ आ औरतन के कजरी के स्वर जइसे समय के गति रोक देला। सावन प्रेम के भी महीना ह, प्रतीक्षा के भी आ प्रकृति से आत्मीय संवाद के भी। एह महीना में मनुष्य के भीतर के कोमलता बाहर निकल पड़ेला। भोजपुरी लोकगीतन में सावन के विशेष स्थान बा। बिरहिन के आँख में मेघ देख के साजन के इयाद उमड़ पड़ेला। नवविवाहिता के मन नइहर जाए खातिर मचल उठेला । कजरी के स्वर में प्रेम भी बा, प्रतीक्षा भी, मिलन भी बा आ विरह के कसक भी। लोकसाहित्य के ई समृद्ध परंपरा बतावेला कि प्रकृति के साथ जीए के कला हमनीं के पूर्वज केतना सहज ढंग से जानत रहलें।

लेकिन आज के सावन पहिले जइसन कहाँ रह गइल बा? शहर के कंक्रीट जंगल में झूला के जगह मोबाइल के स्क्रीन ले लिहले बा। कजरी के स्वर धीरे-धीरे शोरगुल में दबत जा रहल बा। पर्यावरण संकट के कारण बरखा के मिजाज बदल रहल बा। कहीं अतिवृष्टि बा, कहीं सूखा। नदी सिकुड़ रहल बाड़ी, तालाब पाटल जा रहल बा आ हरियाली के जगह सीमेंट के इमारत खड़ा हो रहल बा। प्रकृति से दूर होत समाज के ई बदलाव चिंता के विषय बा।

www.bhojpurisahityangan.com

आ भादो? भादो बरखा के परिपक्वता के महीना ह। नदी-नाला भर जालें, पोखरा लबालब हो जालें, खेत हरियर चादर ओढ़ लेवेला। लेकिन भादो खाली समृद्धि के प्रतीक ना ह, ई प्रकृति के विराट शक्ति के एहसास भी करावेला। कबो बाढ़, कबो अतिवृष्टि, कबो गाँव के डूबल पगडंडी—भादो सिखावेला कि प्रकृति के सामने मनुष्य के अहंकार बहुत छोट बा।

आज जब आषाढ़, सावन आ भादो के बात होत बा त एह बात के स्वीकार करे के पड़ी कि बदलत समय में ई ऋतु चक्रो प्रभावित भइल बा। कहीं समय पर बरखा नइखे होख़त, त कहीं असमय बाढ़ आ जात बा। तालाब भरल जा रहल बा, पेड़ कट रहल बाड़ें, नदी सिकुड़त जा रहल बाड़ी। जलवायु परिवर्तन अब किताब के विषय ना, हमनीं के रोजमर्रा के अनुभव बन चुकल बा। बरखा के अनिश्चितता किसान के चिंता बढ़ा रहल बा आ गाँव के जीवन-व्यवस्था पर नया संकट खड़ा करत बा।
एह तीन महीना के सबसे बड़ी देन हमार लोकसंस्कृति ह। कजरी, बिरहा, झूमर, सावनी गीत आ लोककथन में बरखा के जे सौंदर्य चित्रित भइल बा, ऊ केवल साहित्य ना, हमार सामूहिक स्मृति ह। अगर नई पीढ़ी एह धरोहर से कट जाई, त हमनीं के केवल गीत ना, अपना जीवन-दर्शन के एगो महत्वपूर्ण हिस्सा खो देब।
बरखा के खाली मौसम मत समझीं, एगो सांस्कृतिक उत्सव के रूप में जीहीं । एगो पौधा लगाईं, तालाब-नदी बचावे के संकल्प लीं, अपना बच्चन के कजरी सुनाईं आ अपना मातृभाषा भोजपुरी के गर्व से बोलल सिखाईं।
नई पीढ़ी से विशेष उम्मीद बा। आज युवा मोबाइल पर घंटों समय बितावेलें ,अगर ऊ अपना भाषा में पढ़े, लिखे आ सृजन करे लागें त भोजपुरी के भविष्य केहू रोक ना सकी। डिजिटल मंच भोजपुरी साहित्य खातिर चुनौती भी ह आ अवसर भी। जरूरत केवल एह बात के बा कि गुणवत्ता, संवेदना आ भाषा के गरिमा के साथ आगे बढ़ीं।
भाषा केवल संवाद के माध्यम ना ह, ई हमनीं के सामूहिक स्मृति, इतिहास आ अस्मिता के आधार ह। जवन समाज अपना भाषा से कट जाला, ऊ धीरे-धीरे अपना जड़ से भी दूर हो जाला। एह से आज जरूरत बा कि भोजपुरी के केवल बोली भाषा ना, बल्कि ज्ञान, साहित्य आ आधुनिक विमर्श के भाषा बनावे के अभियान में सहभागी बनीं।
आईं , एह बदलत समय में भोजपुरी के अतीत के गौरव आ भविष्य के संभावना के बीच एगो मजबूत पुल बनल जाव । काहे कि भाषा बची त संस्कृति बची, संस्कृति बची त समाज के आत्मा भी जीवित रही।

राउर

संपादक,

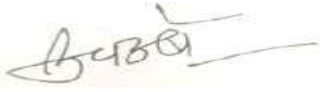

डॉ. अनिल चौबे

www.bhojpurisahityangan.com

अंजन जी के कविता

भोजपरी गीत सम्राट
पं० राधा मोहन चौबे
'अंजन जी'

बिहार-दर्शन

जइबो पुरूबी बनिजिया से सजनियाँ सुनबे ना !!
मूंगेरी लाठी, भागलपुर से रेशमी चदरिया,
बाबा बैजनाथ से मँगबो लमहर एक उमिरिया
सीतामढ़ी में जा छूवबो सीता के चरनियाँ,
मैथिल कोकिल विद्यापति के, गा-गा के भजनियाँ
मिथिले में भारती-पती मन्डन पंडित के डेरा,
जय-जय-जय जयदेव जनम धरती के करबो फेरा
लीची आम मुजफ्फरपुर से, चिउरा चम्पारन ,
वैशाली के दर्शन करबो आ भैंसा लोटन से
बाल्मीकि जी जहाँ राम के लिखनी अमर कहानी,
गण्डक के बराज से सुनबे, कथा सुनावे पानी
हाजीपुर से केला कीमबो, देखबि, सोनपुर के मेला,
गया पितर के तारब लाइब सुन्दर-सुन्दर पेड़ा
ले मनेर के लड्डू, खाजा हम सिलाव से लाइब,
कुँवर सिंह के राग जोशीला आजादी के गाइब
राँची से खाँची भरि लाइबि रूप राशि मुस्कान,
टाटा हटिया अउर बोकारो लोहा के समान से
पटना थाहरबी कुछ दिन सजनी देखबी हम राजधानी,
जहां आजादी खातिर भइली बलिदान जवानी
ले सीवान से अइबी सजनी सतुआ और सुराही,
आ जइबी गोपालगंज में, दे देबो गलबान्ही

◆◆◆

www.bhojpurisahityangan.com

समय के चक्र कतनो तेजी से घूमे, बाकी हमनीं के माटी के महक आ परंपरा कहियो फींका ना पड़ेला। मनुष्य के स्वभाव ह ऊ आगे बढ़े के पहिले एक बेर पाछे मुड़ के जरूर देखेला। अगर पाछे बीतल तिमाही पर नजर डालल जाव त ई समय पूरा देश आ समाज खातिर बड़हन उथल-पुथल आ बदलाव के गवाह रहल बा। आज के जमाना में 'ग्लोबल विलेज' (पूरा दुनिया एगो गाँव) के नियम प चलेला। युद्ध भूमि कहीं होखे प्रभाव पूरा विश्व पर परेला। वर्तमान में ईरान-अमरीका-इजराइल के बीच चलत सैन्य टकराव के असर खाली लड़ाई के मैदान तक सीमित नइखे, बल्कि दुनिया भर के आदमी के दिन-रात के जिंदगी आ घर-परिवार पर एकर गहरा प्रभाव पड़ रहल बा। लड़ाई के चलते समुद्री मार्ग ईरान के होर्मुज जलडमरूमध्य से कच्चा तेल आ गैस के सप्लाई लेके आवत जहाज के रुके के पड़ता, जेकरा चलते अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चा तेल के दाम तेजी से बढ़ रइल बा। तेल महंग भइला से गाड़ी में पेट्रोल-डीजल आ रसोई गैस (LPG) सिलेंडर महंग हो गइल बा, जेकरा से आम परिवार के महीना के खर्चा बिगड़ गइल बा। युद्ध से बिगड़ल माहौल के चलते देश के मुखिया के देशवासी से सोना चाँदी खरीदे में परहेज करे के अपील करे के पड़ल, विदेशी मुद्रा के बचावे खातिर। मध्य पूर्व में हो रहल ई लड़ाई सीधे तौर पर गाँव-जवार के आम नागरिक के थरिया , गाड़ी के तेल, रोजगार आ घर-गृहस्थी के बजट, मांगलिक काम शादी बियाह आदि के भी प्रभावित कर रहल बा।

चैत-बैसाख में जहाँ एक तरफ पूरा देश लोकतंत्र के महापर्व (चुनाव) में व्यस्त रहल, ओहिजे दोसरा तरफ मौसम के कड़ा तेवर आ प्रचण्ड लू हमनी के धैर्य के कस के परीक्षा लेहलस। गरमी से पानी के किल्लत आ पर्यावरण के बिगरत संतुलन हमनीं के ई सोचे पर मजबूर क देहलस कि अगर अबहूँ ले हमनी के प्रकृति के प्रति सचेत ना भइनीं जा त आगे के रस्ता अउरी कठिन हो जाई।

वर्तमान तिमाही संस्कृति आ खेती-किसानी के रीढ़ हउवे। पुरवा बयार आ रिमझिम फुहार, आसाढ़ आ सावन के महीना अइला से मौसम के मिजाज बदल गइल बा। आसमान में करिया बदरा के देख के सुकून मिलेला, ओकर कवनो जोड़ नइखे। धरती के पियास बुझत बा आ मौसम में ई हरियाली हमनीं के मन-मिजाज के भी तरोताजा कर रहल बा। तीन महीना हमनीं के

अन्नदाता लोग खातिर कड़ा मेहनत के दिन हउवे। धान के बीया उखाड़ल आ रोपनी सुरु बा। सावन-भादो के पानी में भींजत किसान जब खेत में हल-ट्रैक्टर लेके उतरेलन, त ऊ सिर्फ फसल ना, बल्कि पूरा समाज के पेट भरे के आस रोपेलन। अगहन में नींक पैदावार मिले, एकर बुनियाद इहे जुलाई-अगस्त के मेहनत हउवे। भगवान से निहोरा बा कि अबकी बेर मॉनसून हमनी के किसान भाई लोगन के पूरा साथ देव।

तीज-तिउहार आ लोक-रंग भोजपुरिया संस्कृति के असली रंग इहे तीन महीना में खिलेला। बोल-बम के जयकारा आ शिवभक्ति में डूबत पूरा समाज सावन के सोमवारी खातिर साँच मन से लाग जाला।

मधुश्रावणी, नागपंचमी आ रक्षाबंधन, भाई-बहिनी के अटूट प्रेम के ई परब हमनीं के पारिवारिक ताना-बाना के मजबूत करेला।

जिउतिया लोकसंस्कृति के ऊ धागा ह जवन इंसानो के प्रकृति, पशु-पक्षी आ अपना जड़ से जोड़ के राखेला। माई के ममता खाली अपना संतान तक ही सीमित नइखे, बल्कि ऊ पूरा प्रकृति आ जीव-जगत के मंगलकामना के प्रतीक ह, कथा सुन के त इहे लागेला।

भोजपुरिया संस्कृति बिना लोकगीत के अधूरा ही बा। रक्षाबंधन के मौका पर गाए जाए वाला पारंपरिक गीत में भाई-बहन के प्रेम, हँसी-मजाक औरी नइहर खातिर तड़प के बड़ा ही मार्मिक चित्रण मिलेला। जइसे कजरी आ सावन के गीत में बहिन बेटी गावेली "सावन मास हे सखी, रिमझिम बरसे कजरिया... भैया अइहें लिवावे, बाट जोहे डगरिया । एह समय भोजपुरिया इलाकन में धान के रोपनी खतम होखे के कगार प होला। खेतिहर खेती किसानी के काम से फारिग हो जालन। एहिसे ई त्योहार मानसिक शांति, आपसी मेलजोल औरी आवे वाली निक फसल के खुशी के एक साथ मनावे क जरिया बन जाला।

स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) हमनीं के देश खातिर खाली एगो ऐतिहासिक तारीख ना ह, बल्कि ई एगो अइसन आइना ह जेकरा में हमनीं के हर साल अपना समाज के प्रगति आ ओकर चुनौतियन के देखिले जा। आज के वर्तमान समाज 1947 के समाज से तकनीकी, आर्थिक आ वैचारिक रूप से बहुते आगे निकल गइल बा, बाकिर एकरा साथ ही देशप्रेम के प्रगटीकरण आ सामाजिक ताना-बाना में भी बड़का बदलाव आइल बा। आज स्वतंत्रता दिवस के मूल संदेश इहे बा कि हमनीं के सीमा के सुरक्षा के साथ-साथ आंतरिक रूप से एगो अइसन समाज बनावल जाव जे जाति, धर्म आ ऊँच-नीच के भेदभाव से मुक्त होखे। असल आजादी तबहीं पूरा होई जब समाज के हर आदमी सुरक्षित, शिक्षित आ आत्मनिर्भर महसूस करिहन।

एही तिमाही में परी पितर पख हमनीं के सनातन परंपरा के एगो अइसन महत्वपूर्ण पर्व ह, जे हमनीं के आपन जड़, आपन पुरखा आ आपन सांस्कृतिक विरासत से जोड़ेला। आज के पढ़ुवा समाज, जे विज्ञान, तर्क आ व्यस्त जीवनशैली पर आधारित बा, श्राद्ध के एगो नया आ व्यापक नजरिया से देखे लागल बा। ई मानल कि आज के पीढ़ी एह परंपरा से पूरी तरह दूर हो गइल बा, पूरा साँच नइखे। साँच त ई बा कि समय के साथ श्राद्ध के रूप आ

ओकर स्वीकार्यता में सकारात्मक आ व्यवहारिक बदलाव आइल बा। आज के पढ़ल-लिखल आ जागरूक समाज श्राद्ध के खाली कर्मकांड, डर भा अंधविश्वास के रूप में ना देखेला, बल्कि अपना पुरखा लोग के प्रति सम्मान, स्मरण आ आभार जतावे के एगो पवित्र अवसर मानेला। मनोवैज्ञानिक नजरिया से भी ई पर्व बहुत महत्वपूर्ण बा, काहे कि ई हमनीं के एह बात के एहसास करावेला कि आज हमनीं के जे अस्तित्व बा, ऊ अपना माई-बाप आ पुरखा लोग के त्याग, संघर्ष आ संस्कार के चलते बा। आधुनिक समाज भले बाहरी आडंबर आ कठिन कर्मकांड के कुछ हद तक कम कइले होखे, बाकिर श्राद्ध के असल भावना के अउरी मजबूत आ समय के हिसाब से प्रासंगिक बना देले बा। आज श्राद्ध के मतलब खाली तर्पण भा पिंडदान तक सीमित नइखे रह गइल, बल्कि पुरखा लोग के आदर्श के अपना जीवन में उतारल, ओह लोग के देखावल राह पर चलल आ समाज के जरूरतमंद लोग के सेवा कइलो श्राद्ध के एगो श्रेष्ठ रूप मानल जा रहल बा।

सनातन धर्म के मूल सिद्धांत बा— "श्रद्धया दीयते इति श्राद्धम्", अर्थात जवन काम सच्ची श्रद्धा आ निष्कपट भाव से कइल जाव, ऊहे श्राद्ध ह। एह भावना के समझत आज बहुत लोग अपना पुरखा लोग के इयाद में अनाथालय, वृद्धाश्रम, दिव्यांग सेवा संस्थान आ कुष्ठ आश्रम में भोजन, कपड़ा, दवाई आ जरूरत के सामान दान करेला। एहसे ना खाली अन्न के बर्बादी रुकेला, बल्कि सहायता सही मायने में ओह लोग तक पहुँचेले जेकरा सबसे अधिक जरूरत होला। एह तरह आधुनिक समाज श्राद्ध के परंपरा के छोड़त नइखे, बल्कि ओकर आत्मा के नया समय के हिसाब से अउरी सार्थक रूप में जी रहल बा। परंपरा आ आधुनिकता के ई सुंदर संतुलन श्राद्ध के आवे वाली पीढ़ी खातिर भी प्रेरणादायक, प्रासंगिक आ जीवंत बनवले राखी।

सिरिजन' के ई अंक सिर्फ पन्ना प छपल अक्षर ना हउवे, ई हमनीं के माटी के सोन्ह महक, खेतिहर के पसीना आ माई-बहिनन के अँचरा के छाँह हउवे। आईं, बदलत मौसम के आनंद लीं, परंपरा के सँजोईं आ अपना भोजपुरी भाषा-साहित्य के अउरी समृद्ध बनाईं। रउआ सभे के ई अंक कइसन लागल, जरूर बताइब।

राऊर आपन,

तारकेश्वर राय
उप सम्पादक, सिरिजन

भोजपुरी के आचार्य कवि

पं. धरीक्षण मिश्र

स्व. पं. धरीक्षण निश्र जी के कविता

कौना दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ

भारत स्वतंत्र भैल साढ़े तीन प्लान गैल ।
बहुत सुधार भैल जानि गैल दुनियाँ ।
वोट के मिलल अधिकार मेहरारुन का
किन्तु कम भैल ना दहेज के चलनियाँ ।
एही दहेज खातिर बेटिहा पेरात बाटे
तेली मनों गारि गारि परेत बा घनियाँ ।
बेटी के जनम बा बवाल भैल भारत में
एही दुखें डोली में रोवति जाति कनियाँ ॥1॥

दिल्ली का गद्दी पर बैठल मेहरारुवे बा
ओही के बाटे उहाँ चलत परधनियाँ ।
जल थल आ नभ तीनूँ सेना के सेनापति
दागे सलामी ओके साथ ले पलटनियाँ ।
यू.पी. में तिरिया राज बाटे सुतारन भैल
गुप्ता आ त्रिपाठी जी में होत बा बजनियाँ ।
एहू तिरिया राज में ना सुख भैल बेटिन का
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ ॥2॥

एके दू कौर खा के रातो दिन रहे के परी
देहि के जरावे लगी भूखि के अगिनियाँ ।
खैला का पहिले आ पाछे थारी जाँच करे
अइहें बला के कुछ माई आ बहिनियाँ ।
अधिका खैला से लोग लागी बदनाम करें
ऐसने बा एकरा खन्दान के रहनियाँ ।
एही तरे केतने महीना ले रहे के परी
एही दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ ॥3॥

शेष अगिला अंक में .....

www.bhojpurisahityangan.com

स्व. रामजी सिंह मुखिया

स्संक्षिप्त परिचय: लगभग 1925 में ग्राम पवट, जिला भोजपुर, बिहार में जनम। बचपने से धर्मग्रन्थन्हि आ साहित्य-संगीत में रुचि। किशोरावस्था से भोजपुरी साहित्य में ब्यंग अवरू भक्ति क्षेत्र में पद्यरचना। भारत से लेके बिदेशन्हि तक ब्यंग रचननन्हि के प्रसिद्धि। भोजपुरी साहित्य में अनन्य योगदान। समाजसुधार खाति ग्रामीण राजनीति में अइनी - बेहरा ग्राम पंचायत के मुखिया अवरू आरा अंचल के बी.डी.सी. के अध्यक्ष पद के सुशोभित कइनी। 3 अप्रैल 1999 के निधन। इहाँ के कबिता-संग्रह 'हमहूँ मुखिया होखबि' भोजपुरी साहित्यांगन के वेबसाईट प उपलब्ध बा।

गीता

भगवान भारतवर्ष में,
तूं दरस द फिर आइकें।
मोह अर्जुन के भेंटाव,
ज्ञान गीता गाइकें।।

अभिमान में दुरूजोधना,
आंखि रहते अन्ध बा।
काहे ना अइसन होइहें,
जब बाप नैना बन्द बा।।

संग में शकुनी जुआड़ी,
दाव पर बा बइठले।
धरम राज करेज के,
लोभ बहुवे अइठले।।

दुष्ट दुशासन खड़ा बा,
द्रोपति के टोह में।
भीष्म द्रोणाचार्य परले,
मोह में विद्रोह में।।

लाज नारी के बचाव,
तन ढपन के चीर द।
कंस केसी के संधार,
पेट पूतना चीरि द।।

भीम भकुआइल बुड़त बा,
दउर बंहिया थाम्ही लह।
सारथी बन रथ संभाल,
बाग भारत थाम्ही लह।।

◆◆◆

www.bhojpurisahityangan.com

राम जी के चिरई राम जी के खेत

कहल जाला कि कलजुग में भगवान जी सीधे अपना भगत से ना मिलिले, एहिसे उहाँ के अपना आ अपना भगतन के बीच में मिडियेटर रखले बानीं। त्रेतायुग में प्रभु श्री राम जी लंका विजय के बाद विभीषण के सगरी राजपाठ सउपि के खुद अयोध्या लवटि अइनीं । उहाँ के का पता रहे कि कलयुग में उहाँ के अपने 'सेवक' लोग दरबार की तिजोरिए में 'लंका' लगा दी !

आजकल अयोध्या जी के चढ़ावा चोरी के मामला सोशल मीडिया से ले गली-गली ले छवले बा । श्रीराम जी के भगत लोग दूर-दूर से दान स्वरूप दस-बीस रुपया के फुटकर से ले के सोना-चाँनी के सिक्का ले एह उम्मीद में चढ़ावेलें कि उनकर लोक आ परलोक सुधर जाई । लेकिन मंदिर के भीतर बइठल आधुनिक 'चिरई' कलजुगी कालनेमि रूप में बइठल बिया । ऊ प्रभु के चरन में गिरत नोटन के देख के सोचेले कि —"भगवान त अंतर्जामी बानी, मोह माया से परे, इहाँ के कागज़ के टुकड़न के का ज़रूरत बा ? असली ज़रूरत हमनीं के गृहस्थी के नू बा जी ।"

चोरी के ई 'डिजिटल' आ 'सिस्टमैटिक' रूप त आधुनिक विज्ञानो के चकमा दे रहल बा । सीसीटीवी कैमरन के फुसला के , बकायदा व्हाट्सएप ग्रुप बना के , कोड वर्ड में 'डील' होत रहल ह कि आज प्रभु की कृपा से के केतना माल बटोरले बा । एही के कहल जाला “राम जी के चिरई राम जी के खेत”...। अब देखीं ना जवन प्रभु राम जी पूरा संसार के सगरी भार संभालिले, उहाँ के अपने घर के खजाना संभाले खातिर बकायदा एसआईटी (SIT) बइठावे के पड़ल । जब पुलिस ए कलजुगी सेवक लोग से पूछताछ कइलस त पता चलल कि करोड़न के हेराफेरी से ई सभे ज़मीन खरीदले बा आ बैंकों में खाता भरले बा । कमाल के श्रद्धा के श्रद्धांजलि दिहले बा लोग । भगवाने के नाम पर खाए के बा आ भगवाने के घरे डाका डाले के बा । भगत लोग बहरी लमहर लाइन में घामे खड़ा 'जय श्री राम' चिल्लाता आ भीतर व्यवस्था में बइठल कुछ खास 'खासमखास' लोग नोटन के गड्डी बहकावात “धन हऊ लछमी जी” कहि के मुस्काता ।

पहिले के ज़माना में मंदिर से चप्पल चोरी भइला पर लोग छाती पीटे लागी । हम सोचीले कि एह समय के सेवादार लोग के सोच बड़हन बा । ई लोग सोचले होई कि—"जब राम जी के भव्य महल बन सकऽता त सेवादार के लगे शानदार फ्लैट आ लग्जरी गाड़ी काहें ना होखे के चाहीं ? बस, एही उच्च परोपकारी भावना से 'रामदान कोष' के काउंटिंग रूमे के 'करोड़पति बने के शॉर्टकट' बना दिहल लोग ।

"भगवान जी सब देख रहल बानीं ... बाकी पुलिस नइखे देख पावत !"

चोरी के तकनीक एतना हाई-टेक रहल कि नासा (NASA) वैज्ञानिक भी रिसर्च करे लगिते कि ए भाई ई कइसे । दान की पेटी से नोट आ सोना चाँनी के सिक्का पार करे खातिर सीसीटीवी कैमरा के 'राम-राम' क के बाईपास कइल जात रहे । विपक्ष कहऽता "महापाप भइल बा " सत्तापक्ष कहऽता "रामद्रोही बा ऊ जे दान पर सवाल उठावत बा "। जे राम जी के जन्म पर सवाल कोर्ट में उठवले रहे कि उहाँ के कवना नर्सिंग होम में जन्म लिहले रहनीं ऊ दान के पइसा वापस मांगत बा । जे आज ले राम जी के दर्शन करे ना गइल ऊ राम जी के जबरा भक्त बने के कोशिश में लागल बा ।

अब राजनीति के बँगला में आ प्रशासन के असोरा में इस्तीफा अउरी बैठकबाजी के दौर शुरू हो गइल बा । बड़का-बड़का बयानबीर लोग साख बचावे खातिर बयान दे रहल बा। बाकी साँच त इहे बा कि एह कलजुग में राम जी के खेत उहे बा, राम जी के चिरई उहे बिया । बस फरक एतने बा कि अब चिरई खाली 'भर-भर पेट' नइखे खात, बल्कि सगरी गोदमवे अपनी नामे करवावे पर तुलल बिया ! प्रभु रामो जी गर्भगृह में मुस्कुरा के सोचत होखबि कि — "इंसान आपन भूख मिटावे खातिर हमरो घरे डकैती करे से बाज नइखे आवत ।

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

www.bhojpurisahityangan.com

मुखपृष्ठ के चित्रकार अंतरिक्ष के परिचय

सितंबर 2006 के जनमल अंतरिक्ष के स्थाई निवास गाँव महादेव, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश ह। अंतरिक्ष वर्तमान में बी०सी०ए० (2nd Sem) के छात्र बाड़ें। अंतरिक्ष के फोटोग्राफी, पेंटिंग आ लेखन में रूचि बा। अंतरिक्ष के पेंटिंग आ रचना कई पत्र-पत्रिकनन में प्रकाशित भइल बा। सितंबर 2022 से अंतरिक्ष फोटोग्राफी क रहल बाड़ें आ ए छोटे अंतराल में उनके सैकड़न फोटो आ डिजिटल आर्ट्स देश-विदेश के जानल-मानल पत्रिकन जइसे हंस, पक्षधर, नया ज्ञानोदय, सेतु, वर्तमान साहित्य, कथाक्रम, परिकथा, विपाशा, वीणा, पाखी, समयांतर, सरस्वती, उत्तर प्रदेश, प्रस्ताव, अदम्य, जलवायु, सार-समीक्षा, प्रेमचंद पथ, नाद रंग, अंतरंग, छाँह, रचना उत्सव, हिम भारती, समीरा, आउटलुक, अक्षरा, संवदिया, बरोह, शीतल वाणी, पाती, पतहर, प्रस्ताव, प्रश्नचिन्ह, समकाल, हरिगंधा, सत्राची (शोध पत्रिका), मुक्तांचल, कलम हस्ताक्षर, समकालीन अभिव्यक्ति, शैक्षिक दखल, साहित्य समय, साहित्य यात्रा, शब्दिता, शुभ तारिका, शब्द संयोजन (नेपाल से प्रकाशित), हिमप्रस्थ, हिमतरू, अभिदेशक, दि अण्डरलाइन, राजस्थली, साहित्य समीर दस्तक, पाठशाला, आधारशिला साहित्यम्, परिवर्तन, प्रकृति मेल, प्रकृति दर्शन वगैरह के मुख पृष्ठ आ भीतरी पन्नन पर प्रकाशित भइल बा। साथहीं, देश के जानल-मानल प्रकाशन जइसे बोधि प्रकाशन, समय साक्ष्य, डायमंड बुक्स, समर प्रकाशन, शिल्पायन बुक्स, पुस्तकनामा, न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन्स, पाखी पब्लिशिंग हाउस, सत्राची फाउंडेशन, कामायनी, सी जी ज्ञान प्रकाशन, मैत्रेयी प्रकाशन, चतुरंग प्रकाशन, किसुन संकल्प लोक वगैरह के पुस्तकन के आवरणो पर अंतरिक्ष के फोटो आ आर्ट स्थान पवले बा। देश के दुसरो चर्चित साहित्यिक पत्रिका आ प्रकाशन अंतरिक्ष के फोटो आवे वाला अंकन आ पुस्तकन खातिर चयनित कइले बा।

अंतरिक्ष

सुपुत्र श्री पवन चौहान, गाँव व डा० महादेव, तहसील- सुन्दरनगर, जिला- मण्डी (हि०प्र०)- 175018

मो०- 9805402242, 8894122242

Email : antriksh92006@gmail.com

◆ ◆ ◆

अंतरिक्ष

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक क नाम –श्रीमद्भगवद्गीता, भोजपुरी भावानुवाद (काव्यात्मक)

---- कृष्ण मुरारी राय ----

प्रकाशक - सर्व भाषा ट्रस्ट, दिल्ली

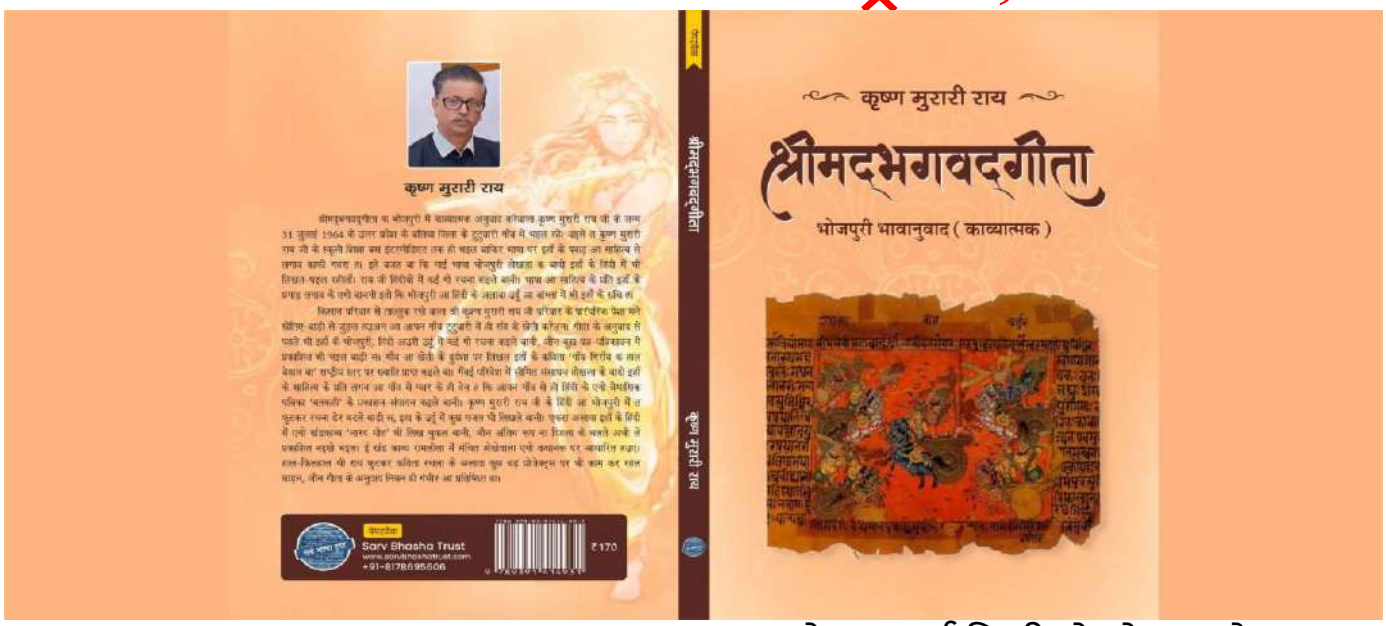

अध्याय 2

(पिछला अंक में अध्याय एक तक भइल रहल ह।)

संजय फिर लगलन कहे, युद्ध छेत्र क बात।
अँखियन में आँसू भरल, अर्जुन मन पछतात।।
बइठल व्याकुल शोक में, अर्जुन अस बलवान।
होय सजग लगलन कहे, मधुसूदन भगवान।।1।।

एह समय तोहके अर्जुन, ई बताव कि मोह बा कइसन भइल।
एसे ना स्वर्ग मिली तोहके, कबो अइसन ना पहिले बाट भइल।2।।

नाहीं कमइब तू जस एसे, हिजड़ापन छोड़ि के युद्ध करऽ।
तेजि करेजा क दुर्बलता, चल युद्ध कर, अब युद्ध करऽ।।3।।

अर्जुन का मुँह से निकलल, रणभूमि में कइसे चलीं मधुसूदन।
ओहि भीष्म आ द्रोण से युद्ध करीं, जेकरे दिन रात करीं हम पूजन।।4।।

एह लोग के मारे से बा बढ़िया, संसार में
घूमि के भीख जुटाईं।
गुरु लोग के मारि के खून सनल, हमसे नाहीं
अइसन भोग भोगाई।।5।।

युद्ध करीं आ कि नाहिं करीं, बाटे दूनो में
कवन ठीक ना जानीं।
जीतब हम कि ऊ जितिहें, नाहीं जानत बा
ना कबो केहू जानी।।6।।

धइले कदराई बाटे मोह में सनाइल चित,
धरम हमार का बा कुछ ना बुझात बा।
कुछ त सुझाईं आपे हमरा भलाई बदे,
अपना से हमरा ना कुछऊ सुझात बा।।
तनी सुझराईं मन बड़ा अझुराइल बाटे,
बार-बार धरीं कृष्ण तोहरी चरनिया।
काहें से कि चेला हम कृष्ण बानीं आपही क,
आइ के पड़ल बानीं आपकऽ सरनिया।।7।।

चाहे पूरा धरती के मिले मलिकाई मोहे,
चाहे राजपाट मिले बिना रोकटोक के।
चाहे कूल्हि देवतन क मालिके जो बन जाईं,
पीछा कइसे छूटी तन सोखे वाला शोक
से।।8।।

सब कुछ जाने वाला कृष्ण महराज जी से,
निनिया के जीते वाला अर्जुन सुनवलन।
'युद्ध ना करब' साफ-साफ कहि चुप
भइलन,
आगे फेरु एकहू ना, बतिया कढ़वलन।।9।।

सब कुछ जाने वाला कृष्ण महराज
तब,
शोक से बेकल देखि अर्जुन के
मतिया।
संजय सुनावे महाराज धृतराष्ट्र सुनीं,
लगलन सुनावे मुसकाई कृष्ण
बतिया।।10।।

बे मतलब के शोक के, अर्जुन करि
दऽ त्यक्त।
बुद्धिमान पंडित नियर बात करेलऽ
व्यक्त।।
बाकिर बाटे जे मुअल, भा बा मूअल
नाहिं।
पंडित जन ना शोक करस, ए लोग के
मन माँहि।।11।।

अइसन त बाटे ना कि, कबो हम
रहनी ना,
चाहे तू भा राजा लोग ई पहिले ना
रहलन।।
ईहो नाहीं होई फेरु आगहूँ रहब जा
ना,
किसन कन्हाई अर्जुन जी से
कहलन।।12।।

जइसे जीव देह में निवास करे लइका
बनि,
बूढ़ या जवान फेरु ऊहे बनि जाला।
ओसहीं मिलेला फेरु दोसर शरीरिया
भी,
मोह ना करेला केहू धीर मति
वाला।।13।।

सर्दी-गर्मी, सुख-दुख देबे वाला अंग अउरी,
विषयन क होखे रोज मरन-जनमवा।
सभ ह विनाशशील, सब ह अनित्य ए से,
सहन करऽ तू एके मानि लऽ कहनवा।।14।।

हे पुरुष श्रेष्ठ! ऊ धीर पुरुष, जेकरा बाटे ग्यान।
मानेला सुख-दुख के, हरदम एक समान।।
इनके बेकल ना करे, इंद्रिय विषयन क योग।
मोक्ष प्राप्ति क लायकऽ, होलें अइसन लोग।।15।।

चीज त असत् कवनो दुनिया में होखे नाहीं,
सत् क अभाव भी त कबो ना देखाइल।
ए तरे दूनो तत्व तत्व ज्ञानियन के द्वारा,
पहिले से देखत चलल जाता आइल।।16।।

हमनीं का आंँखि से दिखाई देले दुनिया जे,
जेवना भी कारण से होला ओके जान लऽ।
कारण ई होला अविनाशी एके बूझि ल तू,
केहू का बेवंँत ना बा नाश क दी मानलऽ।।17।।

भरत के हउव खानदान अर्जुन सुनऽ,
जीव अविनाशी ह खतम नाहीं होखेला।
देह ऊ खतम होला जवना में रहे जीव,
ए से करऽ युद्ध जीव साबितो ना होखेला।।18।।

जीव यानी आत्मा के मारे वाला समझे जे,
चाहे जे भी समझे कि खुद जीव मरेला।
दूनो बूझे वाला खुद दूनो लोग बुझे नाहीं,
आत्मा ना मारे, नाहीं खुद कबो मरेला।।19।।

कवनो भी काल में ना जनमे ना मरे जीव,
नाहीं उत्पन्न होके फेरू कुछ होखेला।
होखेला अजन्मा, सनातन पुरातन नित्य,
मरेला शरीर जीव नाश नाहीं होखेला।।20।।

जे भी अविनाशी एह आत्मा के समझेला,
होला ईहे नित्य, ना जनम कबो पावेला।
अब तू बतावऽ ऊ पुरुष कइसे केहुए के,
पार्थ! खुद मारेला या चाहे मरवावेला।।21।।

जइसे पुरनका के तजि देला आदमी आ,
पेन्हि लेला एकरा जगह नया चीर के
ओसहीं शरीरिया पुरनकी के छोड़ि जीव,
पाई जाला झटपट नयका शरीर के।।22।।

कटे हथियार से ना, जले कबो आग से ना,
पानी ना गलावे कबो हवा ना सुखावेला।
नाहीं होखे छेद ना ही गील, नाहीं जले कबो

चारु ओर थिर रहे केहू ना चलावेला।
हउवे सनातन आ ई व्यक्त भी ना हो सकेला,
सोच से भी परे, निर्विकार ई कहावेला।।
एही से कहत बानी, शोक ना उचित बाटे,
शोक मति करऽ शोक बहुते थकावेला।।
23-25।।

शेष अगिला अंक में.....

◆ ◆ ◆

कृष्ण मुरारी राय

टुटुवारी, बलिया (यू. पी.)

बाहुबली

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

कानून प जे थूके , वर्दी के धौंस से गरीबन के लूटे आ नजायज पइसा लेवे से मत चूके भला ऊ काहे ना आग में मूते? हाथ में बंदूक, तन प खाकी आ जेकरा पीठ प होखे खादी ऊ काहे ना होखे फर्जी इनकाउंटरवादी? अबहीं अतने लिखलहीं रहीं कि ना जाने कइसे एकर भनक बिहार पुलिस के लाग गइल। प्रदेश में रोज चोरी - डकइती, अपहरण, हत्या आ बलत्कार के घटना घटेला। एह सभ घटना के अनठिया के ई लोग घोड़ा बेंच के सूतल रहेला। बाकिर हम अपना मड़ई में बइठ के चुपचाप कुछ लिख रहल बानीं त एकर भनक एह लोग के लाग गइल। आवते हमरा से कहलख लोग, "अपना चाल-चलन सुधारो नहीं तो नतीजा भुगतना पड़ेगा"। मनवाँ में कहनीं देशी मुर्गी बिलाइती बोल। वर्दी मिलते भाषा बदल गइल। ओह लोग में एक जना हमरा के बड़ा गौर से देखत रहन। उनका बुझा गइल कि हम मने - मने कुछ भुनभुना रहल बानीं। ऊ तुरंत हमरा प गुरना के कहलन, "अपराधी, माफिया, गुंडा और अपहरण करने वालों के लिए बिहार में कोई जगह नहीं है। या तो वो बिहार छोड़ दें नहीं तो ऊपर भेज दिए जाएँगे "। ई बात हमरा बड़ा खराब लागल। हमरा बुझा गइल कि ई मुँह तू इनकर ह बाकिर इनका मुँह से सतवाँ पास वाला साहेब के बकार निकल रहल बा। राजावा के तबदारी करत - करत लँउड़ियो रजवे के बोली बोले लागेले।बर्दाश्त करे के एगो सीमा होला। हमरा से रहाइल ना। हम कहनीं, " रउआ उलटा बोल रहल बानीं। रउआ ई कहीं कि शरीफ, बेगुनाह, सीधासाधा, ईमानदार आ जनता के हक खातिर आवाज उठावे वाला के बिहार में कवनो जगह नइखे। ऊ बिहार छोड़ के चल जास, ना त उनका के सीधे ऊपर भेज देल जाई "। साँच कड़ुआ होला। साँच के आँच सभे ना सह सके। बेचारु तिलमिला गइलन।

आ हमरा प एकदमे लाल-पियर होके तरजनी देखा के कहलन, "तुम्हारी ये अवकात! हमारे खिलाफ अँउजा - पथार लिखकर सोशल मीडिया में डालते हो? हमारी बुराई करते हो? परशासन से टकराते हो? उसके कार्यों पर सवाल उठाते हो "? हम बड़ा अदब से कहनीं, "गँवार के गँवार, हतेयार के हतेयार, बेसरम के बेसरम, निर्दयी के निर्दयी, निर्लज्ज के निर्लज्ज आ कायर के कायर ना कहल जाई त का कहल जाई "? अतना प त ओह लोग के जे कप्तान रहन ऊ पेनी से गरमा गइलन। हमार बात उनका करेजा में तीर लेखा समा गइल। एने कुछ दिन से बैंटौटी में अतना ना बिरोध - परदशन हो रहल बा आ सगरो एह लोग के अतना ना थू - थू हो रहल बा कि एह लोग के दुनिया केनहूँ मुँह देखावे के जगह नइखे। एह से एह लोग के मगज कामे नइखे करत। ना तऽ कप्तान महोदय फट से आपन पुटपुटिया हमरो प चला के बिहार सरकार से परमबीर चक्र पावे के हकदार हो जइतन। तबहुँओ चोर चोरी से जाला तुमाफेरी से ना जाय। ऊ हमरा के एकदम डपट के कहलन, "तुम्हारी ये हिम्मत कि तू बिहार के वर्दी को कायर कह रहे हो "? हम कहनीं, "तऽ ....जे निहत्था, निरीह आ भल इंसान प आपन मर्दानगी देखावे ओकरा के बुजदिल, कायर, डरपोक आ मउगा ना कहीं त का उनका के हम मेजर ध्यान सिंह, मेजर योगेन्द्र सिंह, आ मेजर धन सिंह थापा कहीं ? एगो ऊ लोग रहे जे देश के दुश्मनन के छठ्ठी के दूध इयाद करा के देश के रक्षा कइलन। आ एगो तू लोग बाड़ऽ । एगो समाजिक , निस्वार्थी समाजसेवी नवजवान से डेरा गइलऽ। डेरा के ओह निहत्था नौजवान प बंदूक चला के आपन पीठ अपने थपथपा रहल बाड़ऽ आ बड़का बाहुबली बनल फिरऽ तारऽ। तोहरा लोग के करतूत से सँउसे देश में नाक नइखे देल जात। बिहार के नाम रसातल में चल गइल। नकल करे खातिर अकिल के जरुरत होला। बुलडोजर के नकल कवनो बुद्धिमान, बिबेकी आ भीतर से बलवान आदमी कर सकेला। सतवाँ पास आ तोहरा लोग लेखा बुजदिल ना। एगो त तहरा लोग के वर्दी प असहीं दाग लागल रहे। अब ई महा पाप के कलंक लेके सँउसे प्रदेश के कलंकित क देल लोग। "एह तरे ओह लोग के अबहीं हम आउर फिंचती बाकिर ओही घड़ी कप्तान साहेब के मोबाइल प बड़का कप्तान साहेब के फोन आ गइल। हमरा इहे अतना सुनाइल, "हँ सर ! हँ सर! पुलिस का मनोबल गिरने नहीं देना है। एगो आउर यहाँ बड़ा बकबका रहा है । अभी इसको मालूम नहीं कि बिहार पुलिस कितना बड़ा बाहुबली है "। बुझात रहे कवनो बड़का साहेब के फोन रहे। फोन प बात करत - करत ऊ लोग जीप में बइठ के उडंछू हो गइल। हम अपना मड़ई में आके गुनावन क रहल बानीं। हे मन! बिहार छोड़ कहीं आउर चलऽ। एहिजा परशासन के उलटा खँजड़ी बाज रहल बा। सीधासाधा, निरपराध आ सज्जन लोग बिहार छोड़ऽ ना त हमेशा खातिर बिहार का तिरलोक छोड़ा दियाई। हम आपन बोरिया बिस्तर समेटत बानीं। समय मिली त आउर कुछ एह नवका प के उभरल बाहुबलियन के बारे लिखब। जयराम जी की। ◆ ◆ ◆

बिनोद सिंह गहरवार

सरग लोक आ नरक लोक

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

सरग आ नरक स्वर्ग आ नर्क के तद्भव रूप ह। ई रटल - रटावल बात बा सरग आ नरक दूनों अलग-अलग लोक ह। मानव मन में सरग लोक यानी स्वर्ग लोक के चाह होला आ नरक लोक यानी नर्क लोक खातिर दुराव होला। इहो एह से कि परम्परा से कहात - सुनात आइल बा कि स्वर्ग लोक में सुख मिलेला आ नर्क लोक में दुख। अच्छा! एह दूनों के लेके बहुत पहिले से इहो कहात - सुनात आइल बा कि मुअला के बाद नीमन करम करे वाला का स्वर्ग लोक मिलेला आ बाउर करम करे वाला के नरक लोक। अब अइसे एह जीयहूं - मुअहूं के भौतिक आ भावनात्मक दूगो अर्थ होला। जवना पर बात कइल विषय से भटकल कहाई। फिलहाल अबहीं हमनीं स्वर्ग - नर्क पर विचार करीं।

हमरा जाने स्वर्ग आ नर्क के सम्बन्ध मनुष्य का जिनगिये से होला। मुअला का बाद के खबर मुए वाला आज ले नइखे भेजले। भेजी त सोचल जाई। तले आईं एह स्वर्ग आ नर्क के व्युत्पत्तिमूलक अर्थ पर विचार करत एह प्रश्न के उत्तर खोजल जाव कि स्वर्ग आ नर्क असल में ह का ?

स्वर्क आ नर्क मूल शब्द ह। सु आ अर्क के मेल से बनल बा स्वर्क आ अर्क के आगे नकारे के अर्थ में न जुड़ के नर्क बनल बा। अर्क के अर्थ होला - जल, अँजोत (प्रकाश) , अन्न वगैरह। निघंटु में अर्क के अन्न के पर्याय बतावल बा आ यास्क मुनि का निरुक्त में सु आ अर्क के मेल से स्वर्क शब्द बनल बतावल बा। निरुक्त में कहल बा -

" स्वर्कै: स्वंचनै: इति वा स्वर्चनै: इति वा स्वर्चिभि इति। "

(निरुक्त - ११.१४)

इहाँ अर्क आ अर्च के मरम पहिले बूझ लीं। अर्क के अर्थ बा वंदना अउर

आराधना आ अर्च अउर अर्चना के माने होला आराधना। अर्च, अर्चना आ अर्चि के फारसी में शब्द बन गइल बा अर्ज आ अर्जी। एहू शब्दन में उहे भाव बा। स्वर्ग के मूल शब्द स्वर्घ भी बतावल जाला, जवन सु आ अर्घ के हेल-मेल से बनल रहे। एह अर्घ के अर्थ होला - जल, भोजन आ मूल्यवान चीज। आजुओ बहुमूल्य खातिर महार्घ त मूल्य आ पात्रता खातिर अर्हता शब्द के बेवहार होला।

स्वर्क यानी (सु + अर्क) के अर्थ भइल जल, खाद्य सामग्री - अन्न , औषधि, अँजोत वगैरह के अधिकता वाला क्षेत्र। जइसे लोक के क ग उचरित होके लोग, शोक के क ग उचरित होके सोग, शाक के क ग उचरित होके साग वगैरह हो जाला ओइसहीं स्वर्क के क ग उचरित होके स्वर्ग आ फेर भोजपुरी में सरग हो गइल बा।

सु आ अर्क से बनल स्वर्क मतलब प्रचूर मात्रा में अन्न आ खास करके औषधि वाला क्षेत्र के इयाद राखत स्वर्ग के विषय में भारतीय वाङ्मय में लिखल बा -

" स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै यत्र ओषधयो बह्वी: अन्या अन्या इव स्य: " (काठक - २५.२)

" स्वर्गालोका अमृतेन विष्टा इषं उर्जं यजमानाय दुह्राम।"

(अथर्ववेद, १८.४.४)

एह तरह से स्वर्घ, स्वर्क भा स्वर्ग के अर्थ होता सुगमता से जल , अँजोत, अन्न, औषधि वगैरह उपलब्ध होखे वाला क्षेत्र। अब ई जल, अँजोत, अन्न आ औषधि उहँवे मिल सकेलें जहँवा सूर्य यानी सूरज रहिहें। जहाँ सूरज ना रहिहें उहाँ ई सब ना भेंट सके। सूरज अपना ऊष्म उर्मि मतलब गरम किरिन आ हवा (पवन) के मदद से जल के ऊपर ले जालें आ ओहि के फेरु बरसावेलें। सूरज का एही रूप के इन्द्र यानी इनर कहल बा। पानी के इनर कहके बरसे के निहोरा कृषि - व्यापार करे वाला कृषक संस्कृति के जीये वाला पृथु का क्षेत्र के बेवहारिक भासा भोजपुरी में लइका बरखा ना भइला पर गावेलें स -

" हाली हाली बरिसऽ इनर देवता
पानी बिना पड़ल बा अकाल हो राम। "

इनर मतलब पानी के गरहा खोन के सइंते वाला जगह के इनार (इन्द्रागार) कहल गइल बा।

यजुर्वेद में साफ साफ कहल बा कि स्वर्ग में घाम (धूप) बहुत तेज - प्रचंड होला - " स्वर्गो वै लोक: सूर्यो ज्योति: अत्तमम्। " (२०.२१)

तांड्व ब्राह्मण में कहल बा कि स्वर्ग में पानी खूब मिलेला -

" स्वर्गा लोक: सरस्वान् " (१६.५.१५)

शतपथ ब्राह्मण में अइसन स्वर्ग के अनंत बतावल बा - " अनंता असौ लोक: " (१७.१२.३)

एही ब्राह्मण में इहो कहल बा कि स्वर्ग में कवनो तरह के डर - भय ना सतावे -

" स्वर्गा लोकं अभयम् " (१२.८.१.२२)

अब नर्क शब्द पर विचार होखे। जहाँ अर्क मतलब जल, अँजोत , खाद्य सामग्री - अन्न, औषधि वगैरह ना मिले ओकरा के कहल जाई न + अर्क यानी नर्क भा नरक। जब सु अर्क यानी स्वर्ग के प्रकारांतर से सूर्यलोक कहल गइल त जहाँ सूरज के अभाव होखी ऊ नर्क

कहाई। सूरज के चलते ऊ सब अर्क सुगमता से मिले स्वर्ग आ सूरज के अभाव के चलते ऊ सब अर्क के अभाव वाला क्षेत्र भइल नर्क। जहँवा सूरज का अँजोत के अभाव में अँधार होखे उहे ह नर्क भा नरक। एकरा ऋग्वेद में असूर्य कहल बा त ईशोपनिषद में कहल बा -

" अंधं तमः प्रविशंति ये संभूत्वा उपासते। "

ऐतरेय ब्राह्मण में एही से दिन के स्वर्गलोक कहल गइल बा - " अहवै स्वर्गलोकः । " (५.२४)

एकरे से नू उल्टा भइल नर्क यानी नरक। एही भाव के मैत्रायणी संहिता में प्रजापति देव (सुर) के दिन में आ असुर के रात में बनावे के बात कहलें -

" दिवा देवानसृजत् नक्तमसुरान्। " (१.१.९.३)

अच्छा स्वर्ग का स्वः चाहे स्वर के भी अर्थ सूरजे होला। एही चलते कौषीतकि संहिता में कहल गइल कि स्वर्लोक या सूर्यलोक ही देवलोक ह - " देवलोको वै आदित्यः । "

एही कहल जाला कि स्वर्ग में सुखे सुख बा नर्क में होला दुखे दुख। ई स्वर्ग आ नर्क कहीं दोसरा जगे नइखे। सूरज के पाके उपलब्ध अर्कन के सदुपयोग करत अपनो ओर से अपना जरूरत के चीज उत्पन्न करेवाला सुर भा देव खातिर स्वर्ग बा आ उत्पादन ना करके निकम्मा बनके बइठे वाला खातिर इहँवे नर्क बा। कर्मठ खातिर इहे स्वर्ग लोक आ निकम्मा खातिर नर्क लोक इहँवे बा, कहीं आउर ना। मनुष्य अपना कर्म से एही धरती के स्वर्ग बना दी चाहे अकर्म में नर्क।

◆ ◆ ◆

प्रो. (डॉ.) जयकान्त सिंह ' जय '

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारिन

आफिस के बगल में एगो फूटपाथी होटल रहे। ओह छोटमुट होटल में समोसा बड़ा अच्छा बनत रहे। आसपास के कएगो आफिस के लोग टिफिन में उहवाँ आ के समोसा खात रहस।ओह दिन रोज लेखा समोसा के दोकान पर लोग के भीड़ लागल रहे। तबे एगो भिखारिन आ के लोग के आगे आपन थाली बढ़ा देलस। भिखारियन के आइल चाहे ओकर हाथ पसारल कवनो नया बात ना रहे। नया बात रहे ओह भिखारिन के कपड़ा आ ओह कपड़ा में से झाँकत ओकर देह। लंब-धरंग ओह भिखारिन के गुदाज बाँह कंधा तकले उघार रहे। ऊपर आधा छाती तकले आ नीचे ठेहुना के नीचे तकले ऊ उघारे रहे। ओकरा कंधा से साड़ी के चार तह करके एगो झोला लेखा लटकल रहे। ओह झोला में कपड़ा भरल रहे। कवनो फिल्मी हिरोइन के पोस्टरो अतना भद्दा ना लागत रहे, जतना ऊ लागत रहे। ऊ भीड़ में घुसिआइल जात रहे आ भीड़ कुछ देवे के बहाने ओकरा के निहरले जात रहे। ओही घड़ी एगो बूढ़ भिखारी ऊहवाँ आ गइल। ऊ लोगन के आगे आपन कटोरा बढ़ा के भीख मांगे लागल। बाकिर ओकरा तरफ कोई धेयान ना देलस। सब लोगन के धेयान भिखारिने के तरफ रहे। भिखारिन लोग के आँख में आँख डाल के आपन थरिया आगे बढ़ा के भीख माँगत रहल। ऊ भीड़भाड़ के बहाने कुछ लोग के देहो में सट जात रहे। टिफीन के समय खतम भ गइल रहे। तबो ऊहवाँ के भीड़ खतम ना भइल। बूढ़ भिखारी सिर झुकवले जल्दी से ऊहवाँ से आगे बढ़ गइल।

◆ ◆ ◆

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

अंकुश्री
राँची (झारखंड)

१) का बतलाईं

का बतलाईं बानीं कइसे ?
जीयत बानीं जइसे तइसे।

के छूँछा के पूछेला जी,
सभका भावे पइसे पइसे।

होरी आ धनिया के हालत,
रऽहे जइसन बाटे ओइसे।

दर्शन राउर दुर्लभ बाटे,
रउरा अइनीं कइसे कइसे ?

अँतरी में त जहर भरल बा,
बोली बाकिर मिसरी जइसे।

'संजय' कहाँ गजल ऊ पाईं,
जवन हिया में रउरा पइसे।

(२) ई रात कट जाई

तोख राखीं ई रात कट जाई।
जोत पसरी अन्हार हट जाई।

आस के डोर कबहूँ मत छोड़ीं,
दुख के बदरी ज़रूर हट जाई।

दिन त होला ना एक लेखाँ जी,
रउरो दिनवाँ कबो पलट जाई।

जाके बोलीं ना प्यार से उनसे,
झगरा झंझट सजी सलट जाई।

अबके अदमी के का भरोसा बा,
केसे छटकी आ केसे सट जाई।

के बा जानत ई आँख के पुतरी,
एक छन में कहाँ उलट जाई।

◆ ◆ ◆

संजय मिश्र 'संजय'
कार्यकारी संपादक 'सिरिजन'

कनक किशोर के दूगो विदाई गीत

1

लाली लाली डोलिया में लाले रे ओहरवा
जाली बेटी ससुरा पहिरि लाले जोड़वा
घरवा दुआर रोवे, भाई बाबू आँखि लोर
माई, फुआ, बहिनी के हाल कहे भेंटवा।

पोसल चिरइया से बिछड़त बा खोंतवा
देखि आजु सुसुकत बा हमरो अँगनवा
गली आजु सून लागे, सून लागे बगिया
डोलिया उठाइ बढ़लें सुसुकत कहरवाँ।

बेटा - बेटी एके पेटे, काहे ई अलग रीत
पड़ते सेनूर बेटी होखी जाली नया हीत
सब कुछ बदलत बा,रोज नया - नया रीत
मितवा बतावऽ कारण, काहे ई बनल रीत?

(भेंटवा - भोजपुरिया संस्कृति में औरत नइहर से जाली भा ससुराल से आवेली त गले मिल भेंट करे के परंपरा बा। जवन विलुप्त हो रहल बा)

◆ ◆ ◆

2. सुसुकत बेटी आजु , सुसुकत माई बाबू
सुसुकेला घरवा दुआर।

बेटी तूहूँ चिरई फुदकऽ दिन रतिया
ऊ अँगना भइल अब विरान
हम त जानत रहनीं साँच ह ई बतिया कि
छोड़ि परइबू गाँव के सिवान
फाटेला करेजवा बिदाई करत तोहरा के
रोअत बाटे गँउवाँ जवार।

बेटवा से बढ़ि के सब दिन बुझनीं हो
रानी बेटी तूहीं त गुमान
काढ़ि के करजवा डाक्टर बनइनीं हम
माई के रहलू तूहूँ शान
भाई भउजाई के तू आँखि के पुतरिया हो
रोवऽतारे बइठ एक किनार।

अनकर धन तूहूँ बाबा त कहत रहन
कहा माने हमरो परान
खेलते कुदते दिनवाँ कइसे के बीत गइल
देखते देखत भइलू आन
आपन हाथे चिरई हो हथवा थमाई दिहनीं
कइनीं जमाई के हम दान
छोड़ि चली दिहलू तू बाबा के दुअरवा हो
रोवतारे डोलिया कहार।

◆ ◆ ◆

कनक किशोर
राँची, झारखण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

मधेशिया आह से उपजल कथा संग्रह : लालपुर्जा

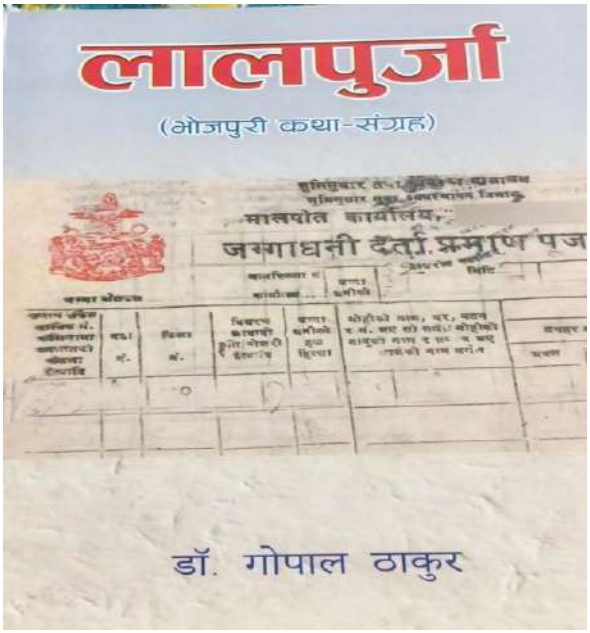

1 कथाकार :

डॉ. गोपाल ठाकुर लोकतंत्र के पक्षधर साम्यवादी विचारधारा के बहुआयामी व्यक्तित्व के नाम ह, जेकर अंतर्राष्ट्रीय पहचान बा भोजपुरी साहित्य जगत में। मूल रूप में इहाँ के राजनीतिज्ञ आ भाषा विद् हईं। इहाँ के कलम भोजपुरी, हिन्दी, नेपाली आ अङरेजी में समान रूप से सक्रिय बा। इहाँ के कृतित्वन के देखि के आजु नेपाल के भोजपुरी के सिरमौर साहित्यकार के संज्ञा से नवाजल जाय त कवनो गलत ना कहाई। मधेश के लाल ठाकुर जी अपना माई भाषा भोजपुरी के समर्पित सपूत हवें।ठाकुर जी के कृतित्व पर नजर डालला पर 9 गो स्वरचित, सहलेखन कृति 10 गो, संपादित कृति 8 गो, पाठ्यक्रम लेखन - संपादन 3 गो, अनुवाद 3 गो आ शोध प्रबंध 3 गो सामने दिखाई देता। कृतित्व सूची इहाँ के बहुवर्णी सिरिजिना के खुद प्रमाण बा। भोजपुरी साहित्य, भाषा, शोध आ व्याकरण के कुल 23 गो संग्रह ऊपर वर्णित कुल विधा में आइल बा। हाले में इहाँ के भाषा आयोग, नेपाल के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत होके साहित्य साधना में रत बानीं। इहाँ के शोध, भाषा प कार्य , इतिहास आ व्याकरण देखि ई प्रतीत होला कि संकलित तथ्य सब मौलिक शोध पर आधारित बा, उहो सप्रमाण आ तकनीकी रूप से दुरुस्त। इहाँ के जन्मभूमि कर्चोवा ह जे 2009 साल के किसान आंदोलन के केंद्र रहे। इहाँ के साहित्यिक रचनन में साम्यवाद आ मधेश के माटी के गंध भरपूर उपलब्ध मिलेला। परिवेश आ विचारधारा के प्रभाव त रचना पर पड़बे करेला। आन्दोलन के धरती के उपज आ साम्यवादी विचारधारा के संवाहक ठाकुर जी के साहित्य प्रगतिशील पथधारी ह आ प्रतिरोध के पक्षधर। हाल फिलहाल ठाकुर जी के भोजपुरी कथा संग्रह ' लालपुर्जा ' आइल बा। एह में कुल 13 गो कथा संग्रहित बाड़ी सं। ई पुस्तक समर्पित बा ' समस्त

उत्पीड़ित वर्ग आ राष्ट्रीयता ' के। ई समर्पण लेखक के उत्पीड़ित वर्ग के पक्षधर के रूप में त खड़ा करत बा बाकिर एगो राष्ट्र प्रेमियो के रूप में। ई इहाँ के दूसरा कथा - संग्रह ह। ठाकुर जी अपना के साहित्यकार ना मानींला बाकिर इहाँ के परोक्ष - प्रत्यक्ष रूप से हरदम साहित्य सिरिजना से जुड़ल रहल बानीं। इहाँ के एगो लोक गायक भी हईं आ अपना गुरु लोगिन के साथे स्वरचित गीतन के स्वर देले बानीं, जवन गीत सब प्रतिरोध के स्वर लहरी हई सं। एह आलेख में गोपाल जी के ' लालपुर्जा ' पर थोरिका बात - बतकही के प्रयास कइल गइल बा।

2 कथा संग्रह पर दू बात :

भारत आ नेपाल के कई गो साहित्यकार ' लालपुर्जा ' पर भरखर बतकही कइले बाड़ें। तब सवाल उठत बा कि बेर - बेर एके कृति पर बतकही काहे? जवाब इहे बा कि जिंदा कृति पर बात होखे के चाहीं आ खूब होखे के चाहीं। संकलित रचनन सब कथा ह कि कहानी? इहो विचारनीय बिन्दु बा काहे कि संग्रह के कथा संग्रह कहल गइल बा। कथा आ कहानी दूनों कवनो घटना आधारित होला बाकिर सुक्ष्म दृष्टि से देखला पर दूनों के उदेश्य में अंतर आ जाला। कथा के उदेश्य ज्ञान, अनुभव साझा कइल भा नैतिक/धार्मिक उपदेश देल ह बाकिर कहानी के उदेश्य मनोरंजन कइल भा एगो विशिष्ट संदेश भा भाव देल। एगो अउर बात कि कथा समान्य रूप में भूतकाल घटना आधारित होला आ कहानी में भूत के साथ वर्तमान आ भविष्य उपस्थित रहेला। एह संकलन के तेरहो कहानी भूतकालीन बाड़ी सं, जे ज्ञान आ अनुभव साझा करत बाड़ी सं। सांच कहल जाव त एह संकलन के सब कथा मधेश के जीवन यथार्थ ह जे मधेशिया आम जन के जिनिगी के आह से उपजल बा। डॉ ठाकुर खुद कहले बाड़े कि ' संकलित कहानी सब यथार्थ के आख्यानीकरण पर खाड़ बाड़न स।जहाँ तक जगह आ पात्र के बात बा त ऐतिहासिकता दर्शावे खातिर वास्तविक जगह आ जे आंदोलन के सम्मानित नेता लोग रहलें, ओह लोग के वास्तविक नाम देहल बा'। संकलित कथन के स्वरूप आ गुन धरम देखत एह संकलन के कथा - संग्रह कहल उचित प्रतीत होत बा।

संकलित कथा के भाषा बोलचाल के मधेशिया (सेमरवनी वैशिष्टय) बा। कुछ लोग मानेला कि लेख्य आ बोलचाल के भाषा एक ना होखे के चाहीं। डॉ गोपाल ठाकुर भाषा विद् हईं फेरु अइसे काहे कइनीं? एकर जवाब डॉ ठाकुर के एह कथन से निकालल जा सकेला - ' कथा में प्रयुक्त भोजपुरी शब्द, शैली आ वर्णविन्यास से सहमति - असहमति के दुविधा भी हमर समकालीन विद्वानन से व्यक्त भइल बा। हमरा निमन से पता बा, ना कौनो भाषा ना कौनो रक्त कहिओ पवित्र रहल बा। दुनिआ के समूचा भाषा के शब्दन के पचाके अङ्रेजी दुनिआ पर राज कर रहल बा । बाँकिर ख्याल करेके पड़ी कि ऊ आपन शब्दन के विकल्प में अइसन नइखे कइले । जहाँ आपन शब्द कम पड़ल बा उहाँ आन भषन से उधार लेके हजम कर गइल बा । हमहूँ एकर पक्षधर हईं। बाँकिर कथित शिष्टता आ स्तरीयता के नाम पर भोजपुरी के मौलिक शब्दन के विकल्प में आन भषन के शब्दन के प्रयोग से अपना के शिष्ट आ मौलिक प्रयोगकर्ता के गँवार कहे में केहू के आनंद मिलता त

ओइसन जलकुम्ही भा अमरलती बने-बनावे से हमरा परहेज बा '। भोजपुरी शब्द संवेदना के संरक्षण से भोजपुरी संस्कृति समृद्ध होई। शिष्ट भोजपुरी के नाम आ मानकीकरण के नाम पर मौलिक शब्दन के गला घोटल कसहूँ उचित ना कहाई। ठाकुर जी के मौलिक स्थानीय भोजपुरी शब्द के संरक्षण से भोजपुरी संस्कृति समृद्ध होई। ठाकुर जी शुद्ध मधेशिया के प्रयोग कइले बाड़न जे मौलिक भाषा के स्वरुप त संरक्षित करत बा साथे ओकर मिठास कथ्य के लोकग्राही बनावत बा।

' लालपुर्जा ' में संग्रहित कुल कथा प्रगतिशील, जन पक्षधर, मधेश के यथार्थ के कहानी कहत बा जे लोकतान्त्रिक आ साम्यवादी मूल्यन के ताकत देत सचमुच प्रतिरोध के स्वर लहरी बन गइल बा। माटी के मनई, माटी के लोक गायक, साम्यवाद के खाँटी समर्थक डॉ गोपाल के एह संकलन के कथा सब में मधेशिया माटी के सच्चाई रखल गइल बा। लेखक कथा के कई घटनन के खुद साक्षी रहल बाड़न। हमरा बुझात बा एगो कथा में खुद नायक के रूप में उपस्थित बाड़न। रचनाकार बड़ी सजिंदगी से कथ्य के कथा सब में रखले बाड़न। कथा के कथ्य पाठक के अइसे जोड़ लेता अपना से की ऊ ओकरा जिनिगी के हिस्सा बुझात बा। लेखक खुद कहले बाड़े अपना कथ्य में कि ' कोसिस कइल गइल बा, यथार्थवादी प्रगतिशीलता के।' कथा सब के समकालीनता के नजरिया से देखला पर जरूर कहल जा सकेला कि अपना समय के सामाजिक, राजनीतिक अउर सांस्कृतिक परिस्थितियन, चुनौतियन आ यथार्थ के एह संकलन में परोसल गइल बा।अपना समय के समस्यन के कथा में बिना लाग लपेट के रखल गइल बा।

ऐतिहासिकता के दृष्टिकोण से कथा सब महत्वपूर्ण बा जे नेपाल के राजशाही से आम आदिमी के चरित्र के बड़ी बेवाकी से सामने रखले बा।

3 संकलित कथा से कुछ बात :

धान के गाँव पुआर से चिन्हा जाला। भात सिझल कि ना? ई दू - चार गो खदकत चाउर देखि बुझा जाला। एह संकलन के तेरह गो कहानी में से तीन - चार गो कहानियन के पड़ताल करि कहानियन के स्वरुप समझे के प्रयास कइल गइल बा। एह संग्रह के पहिला कहानी ह ' सुशीला के समता '। भोजपुरी संस्कृति में सांझा - पराती गायन के परंपरा बा जे आजु बिला चलल बा। भोजपुरियन के कंठ में बसल पराती ' मंदिल देखी डरी हो सुदामा जी मंदिल देखि डरी/ एही जगहिया पर टूटली मड़इआ कहवाँ के भूप उतरी?' पर आधारित ई कथा बा। तीन लोक के ठाकुर कृष्ण आ कङाल बाभन सुदामा के मित्र नेह पर आधारित कथा के माध्यम से उत्कृष्ट साम्यवाद के परिवेश सुदामा के पत्नी सुशीला के माध्यम प्रस्तुत कइल गइल बा। कृष्ण विश्वकर्मा के सुदामा के भवन बनावे के आदेश देलन बाकिर सुशीला के कारण सुदामापुरी - पूरा नगर एक समान बन गइल। सुशीला - विश्वकर्मा के संवाद देखल जा सकत बा -

' कृष्ण के आदेश बा तोहनी खातिर द्वारका के राजमहल जइसन ए झोंपड़ी का जगे एगो राजमहल बनावेके।'

' खाली हमनी सुदमे परिवार खातिर?'

' जी हाँ! हमरा उहे आदेश बा।'

' तब त रउवा लौटिए जाईं। हमरा अइसन राजमहल ना चाहीं।'

' काहे?'

' हम गरीब जरूर बानीं, बाँकिर स्वार्थी ना।'

' ए में स्वार्थ कहाँ से आ गइल। बिना मङले अगर केहू स्वेच्छा से कुछ देवे के चाहता त स्वीकार करे में हर्ज कौन?'

' हर्ज बाटे विश्वकर्मा बाबा। ए गाँव में एगो हमही गरीब नइखीं। पूरा के पूरा गाँव गरीब बा। बाँकिर एही गरीबवन के बीच हमहू रहतानी। अपने गरीब रहला के बादो एही लोग के दान - दक्षिणा से हमर परिवार आज तक चलत आइल बा। त अपनही बताईं जे अब हमरा अकेले राजमहल में रहल केतना उचित होई?'

अंत में सुशीला कहली कि ' ओहीसुके अगर हमरा खातिर राजमहल बनी त एतहाँ के समुचे परिवार खातिर ओइसने राजमहल ओ से पहिले बने के चाहीं, सब से बाद हमरा खातिर।'

सुशीला के जिद आ सोच के परिणाम सुदामापुरी के निर्माण भइल।रचनाकार लोकगीत के कहानी में तनिका आधुनिक सोंच आ विचारधारा के छौंक लगा एगो बढ़िया कहानी खड़ा करे में सफल बाड़ें। लोकगीत/लोककथा साथे अइसन प्रयोग भोजपुरी के लोकभाषायी पहचान बनवले राखे खातिर जरूरी बा।राजस्थान के विजयदान देथा उहाँ के लोककथाअन में तनी-सा आधुनिक सोच के छेवक देके ओके अद्यतन बनावे के कोसिस कइले बाड़न। गोपाल जी के ओइसने कोसिस ' सुशीला के समता ' बा। एने भोजपुरियो लोक कथाअन में कुछ अइसन प्रयोग देखे के मिलत बा।

तैयब हुसैन ' पीड़ित ' जी के कथन ह कि ' साँच पूछीं त आज कवनो बात डार्विन के विकासवाद, मार्क्स के अर्थशास्त्र आ फ्रायड के मनोविज्ञान के कसौटी पर कहाता। अइसन में जो राउरा मिथक आ आस्था-विश्वास के भरोसे कवनो बात परोसब त लोग तर्क के बाण से बेध दी। ऊ ना मानी कि अइसन होत रहे, जबले विज्ञान भा इतिहास के साक्ष्य ओकरा ना मिली '। गोपाल जी एह प्रति सचेत बाड़न आ आपन कथाअन के मिथक आ आस्था के जगे यथार्थ आ इतिहास के आधार बनवले बाड़े।

मधेश के आर्थिक जनजीवन के पहिलका आधार जमीन रहे। सामाजिक संपन्नता के आधार जमीन रहे जेकर मालिकाना हक देत रहे ' लालपुर्जा ' - तनिका पिअरहूँ कागज पर देश के ललका प्रतीक चिन्ह का साथे नेपाली में लिखल प्रमाण पत्र।मधेश के बरियार किसान आंदोलन के बाद नया नापी भइल त अमीन आ दबंग के खेला के बदौलत एकर जमीन ओकरा नामे, ओकर जमीन एकरा नामे के खेल खूब भइल। नांव मिलला के कारण केकरो जमीन के कागज केहू ले लेलस। ओही कथ्य पर आधारित बा कथा ' लालपुर्जा '। लेखक मधेश के आर्थिक संरचना, कम्युनिस्ट आ काङरेस के झगड़ा, पंचायती व्यवस्था के हवाबाजी, खेदुलाल राउत के चालबाजी, पहाड़िया करमचारियन के हेराफेरी, मुसमात रमकलिआ जोरे छल - कपट, पहड़िया बाभन के सामंती प्रवृत्ति, किसान नेता के चरित के सामने रखलें बाड़े एह कहानी में। भूमि सुधार के

नाम पर लालपुर्जा के हेराफेरी आ सामंतन के खेल ह कहानी ' लालपुर्जा '। कहानी मधेश में लालपुर्जा के कारण हो रहल नया हलचल के रेखांकित करत बा।

एगो बड़ खूबी बा एह संकलन के कि संग्रह के कहानियन के स्वर बेसी तींत आ जरावे वाला नइखे, ठीक ओइसने बा जइसे लोक भावना आ संवेदना के धीमी आंच में पकावल गइल होखे कहानियन में परोसे खातिर। ' हमहूँ का लाङा - लफङा हईं?' कथा दूगो सङतियन के कथा ह। एगो शुरूए से लफंदर दूसरका पढ़े में तेज। एगो सिद्धांतवादी प्रगतिशील विचार के आ दूसरका लूट ले आवs के पालन करता। तबहूँ चेतन आ सेतन के हरदम निबहल सेतन के त्याग आ बुद्धिमानी के कारण। बाकिर सेतन हरदम कवनो ना कवनो परेशानी में रहले आ चेतन चालबाजी से सब हासिल कइले जे चहलन। चेतन के परेशानी के कारण नेतागिरी आ सिद्धांतवादी बनि के रहल रहे आ सबसे बड़ ऐब अनुकर स्वाभिमान रहे।चेतन के चाल - ढाल, जात बदलत देखि सेतन पूछले चेतन से ' का हो चेतन, सुनतानी तू आपन जात - जमात बदल लेलs। साँचे ह का? चेतन तींत आवाज में बोललन ' देखs मास्टर, तू जे पढ़ - लिखके, आपन जात - जमात आ राष्ट्र - राष्ट्रीयता ला एतना हाफुड़ धुनलs, मिलल कां?' भल मानस सेतन के जवाब सुनिके चेतन बोलले कि ' गाँव के लोग भलामनुा के रूप में देखेलन। तू का बुझताड़s? हमहूँ का अबो उहे लाङा - लफङा हईं? कहानी के एहिजे अंत होता। अवसरवादी के बोलबाला, सिद्धांतवादी के मुँह काला के बहुत सुंदर प्रस्तुति बा ई कहानी। आज बदलत समय के सच्चाइयो इहे ह।

डॉ अमरकांत के कहल ह ' गरीबी और अशिक्षा कुछ नहीं करने देती, इससे लोग मजबूरी में अंधविश्वासों का शिकार हो जाते हैं'। एह कथन के जीवंत चित्रन संकलित कई गो कहानी में देखे के मिलत बा।' अंधविश्वास कब ले?' में अंधविश्वास, ' कंजुस ' में बढ़िया हास्य - व्यंग्य, ' बंस ' में सपूत के कारनामा, ' रे कि जी ' में सामंतवाद के कोठ में सेन्ह लगावत आज के पीढ़ी, बदलत समाज के स्वरुप, ' महाजन ' में 2009 साल के बरियार किसान आंदोलन आ महाजनी संताप, ' पढ़लो जरूरी बा ' में अशिक्षा, ' अलऊ में तीन - पाँच ' में राजशाही के खोखलापन बड़ी सुन्दर ढंग से प्रस्तुत कइल गइल बा। मधेश के सामाजिक आ आर्थिक विसंगतियन के सांच बखान ह कथा संग्रह ' लालपुर्जा '।

4 बतकही सार :

रचनाकार आपन संवेदनशीलता के कारण अधिका दुख अनुभव करेला। समाज के दुख के आपन समझेला आ साहित्य के हीलिंग टूल के तरह उपयोग करेला। अइसन साहित्यकार खातिर कलम एगो हथियार बनि प्रतिरोध के आवाज बन जाला। साहित्यकार के इहे रूप संकलित कहानियन के कथ्य देखि सामने आवत बा। साहित्य आत्मा के वैश्विक भाषा ह, जब ऊ संकुचित नजरिया छोड़ि के पर दुख खातिर दिल खोल देला। भाषा के इहे रूप एह कहानियन में नजर आवत बा। समाज के भीतर के वर्गीय अंतर के निर्मम चेहरा अउर सामंतवादी शक्तियन के निर्मम चरित्र रचनाकार के सांस नइखे लेवे देत तब रचनाकार एह संकलित

कहानियन के शब्द रूप देले बाड़ें उहो काल्पनिक उड़ान लेके ना मधेश के धरती के यथार्थ लेके। कहानियन में गंवई मुहावरा के जगहे जगह पर सुंदर प्रयोग कइल गइल बा जे कहीं हास्य त कहीं व्यंग्य के रूप में उपस्थित बा। कहानी के कथ्य देखि ई बात कहल जा सकेला कि कथाकार के सत्ता, सामाजिक संरचना आ माटी आ मनई के सुख - संताप के बढ़िया समझ बा। कथाकार शिवमूर्ति के कहल ह कि ' सृजन की प्रवृत्ति तो शायद प्रकृति ही किसी जातक में देती है लेकिन जब आप संघर्ष में होते हैं तो आपके सृजनशील होने की संभावना ज्यादा होती है।' डॉ ठाकुर के सृजनशीलता संघर्ष के उपज ह। संकलित कथा सब गाँव आ आम जन के बदले के चाहत लेले, विचारधारा के काल्पनिक उड़ान ना ह बल्कि जीवन के बदले वाला औजर के रूप में रखे के कोसिस कइल गइल बा आ रचनाकार के एह में सफलतो मिलल बा। गोपाल जी खाली विचारधारा के कहानीयन पर थोपले नइखन, ऊ आँखिन देखल सांच के सामने रख देले बाड़ें। सांच कहीं त कथाकार एह संकलन में कथाकार कम समाज के बदले वाला अधिक दिखाई पड़ ताड़ें। कई गो कथा में दूगो वर्ग के चरित्र के सुनर विश्लेषण कइल गइल बा। संकलित कथा सब के ' प्रतिरोध के मजबूत आवाज ' के रूप में देखल जा सकत बा।संकलित कथा सब के मर्म आ संवेदना बेजोड़ बा। भाषा सरल, सहज आ बोलचाल के जेकर मधेशिया मिठास मन मोह लेत बा। ' लालपुर्जा ' एगो माटी से जुड़ल पठनीय पुस्तक बन पड़ल बा। निश्चित रूप से एकर स्वागत भोजपुरी साहित्य संसार में होखी। ठाकुर जी एगो शोधार्थी रचनाकार हईं भोजपुरी साहित्य के इहाँ से बहुत अधिक उम्मीद बा। इहाँ के बढ़िया स्वस्थ आ सतत् सिरिजिना के कामना करत बानीं।

समीक्ष्य पुस्तक : लालपुर्जा
कथाकार : डॉ. गोपाल ठाकुर
विधा : कथा संग्रह
प्रकाशक : भोजपुरी प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमांडू
पृष्ठ संख्या - 88
मूल्य - रु. 300/

◆ ◆ ◆

कनक किशोर

सरग से नींक बाटे गाँव जननी जन्म के भूँई

1

गली में गाँव में घर में दुआरे पर पलानी में
उतरि के चान आ जालें खिआवे भात खोरा में।

नखत तारा बृहस्पति सोम ध्रुव मंगल अकासे से
निहारत राति भर जागसु रहसु सबका अगोरा में।

हवा आवे दुलारे रोज करि दे प्रान मन शीतल
धरा अँकवार में भरि ले खेलावे लेइ कोरा में।

सरग से नींक बाटे गाँव जननी जन्म के भूँई
इहाँ हर ठाँव पसरल नेह राखीं भरि के झोरा में।

2

उमड़ि आवे घटा बरिसे सुधारस ताल-पोखर में,
खिले शतदल कमल मन-भौंर करि गुंजार नाचेला।

नदी के धार सुख-दुख तट से मिलि हँसि-हँसि के बतिआवे,
लगे तट पर खड़ा सब लोग के हालत सवाँचेला।

निरेखीं हरियरी चारु दिशा में खेत में पसरल,
बुझाला चित्रकारी के मुसव्विर रेख खाँचेला।

सरग से नींक बाटे गाँव जननी जन्म के भूँई
इहाँ के लोग आपन भागि खुद लिखि-लिखि के बाँचेला।

3

सिखावे पेड़ बुढ़वा रहि अचल हर हाल में हर दिन,
दिहऽ छाया जो केहू पास में आवे छँहाए के।

उड़त चिरई अकासे मौज में नापे कठिन रस्ता,
बतावे मंत्र आजादी के', हिम्मतवर कहाए के।

मिले दधि दूध सस्ता शुद्ध मुफुते में हवा पानी,
नदी के धार निरमल रोकि के बोले नहाए के।

सरग से नींक बाटे गाँव जननी जन्म के भूँई,
इहाँ के नेह अमृत हीक भर पी के अघाए के।

4

भले कुछलोग बा मुअना बिगाड़ू घरतुरन कुढ़ना,
तबो करुना दया सहयोग सत सदभाव भारी बा।

विदा होली पलानी से धिया रोवे महल साथे,
बराला चूल्हि ना भरि गाँव अइसन भाव तारी बा।

कहीं हुरदंग लरिकन के कहीं बुढ़वन के हरिचर्चा,
कहीं निकसल जवानी खेत में कान्हे कुदारी बा।

सरग से नींक बाटे गाँव जननी जन्म के भूँई,
जहाँ सब जीव का सब जीव से सहजे इयारी बा।

5

मिले दिन रात बिजुरी अब इहाँ टहटह अँजोरा बा
तबो माँटी के ढिबरी साँझि बेरा याद आवेला।
बहुत बदलल बनल बिगड़ल बहुत उजरल बसल सुधरल
नजर ना बैल खूँटा गाइ बछरू नाद आवेला।
मिले खएका शहर जइसन समोसा चाउमिन बर्गर,
कहाँ ओ सोन्ह सतुआ भात जइसन स्वाद आवेला?
सरग से नींक तबहूँ गाँव जननी जन्म के भूँई
इहाँ परकीति भेजे खूब आसिरबाद आवेला।

6

चइत में मन चहकि जाला उठे जब तान चइता के,
उड़े रँग लाल पीयर बैगनी फागुन अकासे में।

सुने आवे सजल सावन उमड़ि के बाग में कजरी,
चले बिजुरी बदरिया साथ लमहर डग हुलासे में।

लगा के कान में अँगुरी सुनावे तान चरवाहा,
त ऊ पुरुबी के धुन लागे मधुर शरबत पियासे में।

शहर से नींक बाटे गाँव जननी जन्म के भूँई,
इहाँ सहजे बसे 'संगीत' तन मन में अनासे में।

7

इहाँ ममता दया करुना पगल माई के आँचर बा,
उहाँ मम्मी हई आया रखस दुधुआ पियावे के।
इहाँ बाबू कन्हइया पर बिठा जालें किने टाफी,
उहाँ पापा का नइखे साँस दुलरावे खेलावे के।
इहाँ काका बहिन भाई फुआ ईया के साया बा,
उहाँ कइसे कटी दिन ना मिली केहू सुनावे के।
सरग से नीक बाटे गाँव जननी जन्म के भूँई,
इहाँ रिश्तन के डोरी बान्हि सिखवेला निभावे के।

8

खने हरियर खने पीयर खने ललकी पहिन लेली,
ना जाने कौन कतना रंग के धरती का सारी बा।

निरखि के कोकिला गावे शगुन के गीत रातो- दिन,
लगे ऋतुराज पग धरिहें इहाँ सब बिधि तयारी बा।

लड़ावे चोंच चिरई बाग में नाचे अवारा अलि,
हवा के झोंक सँग डोलति पछिम के बाँसबारी बा।

सरग से नींक बाटे गाँव जननी जन्म के भूँई,
इहाँ मौसम के माथे चढ़ि उछलि नाचति खुमारी बा।

✍️ संगीत सुभाष

◆◆◆

www.bhojpurisahityangan.com

राम, लवटि आइत ऊ मौसम

राम, लवटि आइत ऊ मौसम।
नदी किनारे सून घाट पर
प्रेम पुराना पैरि पाट पर
हक से हाथ पकड़ि उनके
बइठइतीं, कुछ बतिअइतीं हम।
राम, लवटि आइत ऊ मौसम।

पुअरा जइसन जरल आस के
राख उड़ल असमाने।
उधियवलसि खोंता खुशियन के
उमिर - बतास अजाने।

निसबद राति चान भंगुआइल
टिसुना तिरसंकू पियराइल
टकटक ताकत रात अकेले
कइसे कटनीं बतलइतीं हम।
राम, लवटि आइत ऊ मौसम।

सगरे आँखि निहारे हमके
का जाने का खोजे
पहिले होखे खुसुर - फुसुर अब
सभे सुनावे सोझे

राह चलल दुश्वार भइल बा
ई जिनिगी अखबार भइल बा
के के बाँचल उलटि - पलटि के
लिखि के रखनीं, पढ़वइतीं हम।
राम, लवटि आइत ऊ मौसम।

बरसाती खर जइसन पसरे
खीझि भूँइ पर दिल के
मोंथा जइसन सोरि मिले ना
अपने बुद्धि अकिल के

आँखि अकासे दियना बारे
राह सुगम होखे उजियारे
चारि नयन के चमक देखि के
चान सहमि जा समुझइतीं हम।
राम, लवटि आइत ऊ मौसम।

बँवरि गगन के तबे छुवे जब
कवनो मिले सहारा
बिन इयार ना डेग उठेला
थउसल मन बेचारा

◆ ◆ ◆

कौल करार कइल के कगरी
अचके खोलल बान्हल पगरी
उनुके लिखि के भेजल पाती
उनहीं के दे पढ़वइतीं हम।
राम, लवटि आइत ऊ मौसम।

संगीत सुभाष, प्रधान सम्पादक,'सिरिजन'

तनी तनी

इहाँ उहाँ जहाँ तहाँ तनी तनी रहीं कहीं।
तनी मनी त बात बा तनी मनी कहीं, कहीं।

तनी तनी के जोरि के तनी तनी बड़ा बने,
तनी तनी संगोरि के हिया गिने मने मने।
तनी मनी छुटे लगे पहाड़ से ढहीं, कहीं।

तनी तनी तनी तनी तनी तनी कई जगे,
न एक ठाँव बावरा मना तनी मनी लगे।
तनी तनी में जिंदगी अपूर बा सहीं, कहीं।

तनी मनी बजार में तनी मनी बधार में,
किरोध में अबे अबे तनी तनी दुलार में।
तनी तनी में छूट जात बाँह जो गहीं, कहीं।

तनी मनी शराब में तनी मिलाइ लोर के,
इयार के रकीब के बिटोरि साँझि भोर के।
तनी तनी छुपा पिहीं तनी मनी बहीं, कहीं।

कहे सुने मिलाई नून मिर्च लोग साँच बा,
हमूँ कहीं कि साँच तऽ कहे में' कौन आँच बा।
तनी मनी न ढेर एक यार के चहीं कहीं।

◆ ◆ ◆

संगीत सुभाष
प्रधान सम्पादक– सिरिजन

www.bhojpurisahityangan.com

गजल-मनोज भावुक

1-

जइसे सपना में छू जालू हमरा के तूँ
ओइसे आवऽ ना जिनगी में लहरा के तूँ

सामने आवऽ, जी भर के बाँची जा अब
तहरा चेहरा के हम, हमरा चेहरा के तूँ

धूप में जाने कहिया से बा जिंदगी
छांव दऽ, छांव दऽ अपना अँचरा के तू

हमरा जइसन बहुत लोग बा जब इहाँ
काहें रोकेलू जाए से हमरा के तूँ

नीक लागेला रूसल-मनावल सखी
उम्र भर बस चले दऽ ए झगरा के तूँ

तूँ का गइलू बुझाता कि जिनगी गइल
पास आवऽ ना, आवऽ ना दोहरा के तूँ

हमसफर बन जा भावुक के जाने जिगर
एह मुहब्बत के झंडा के फहरा के तूँ

◆ ◆ ◆

2-

दीवाली जिन्दगी ह अउर साँस हऽ दिया
एह से अँजोर करते रहीं उम्र भर पिया

सूरज त साथ छोड़ देवे साँझ होत होत
हमदर्द बन के मन के मुताबिक जरे दिया

भीतर जवन भरल बा, ऊ तऽ मन के पीर हऽ
अब के तरे लिखीं भला हम शेर इश्किया

कुछ बात एह गजल में समाइत भी के तरे
ओकरा मिलल ना भाव के अनुरूप काफिया

सीना में दफ़्न आग के भभके के देर बा
'भावुक' हो एक दिन में सुधर जाई भेड़िया

◆ ◆ ◆

3-

चिंता-फिकिर मिटा के देखीं, आगे डेग बढ़ा के देखीं
कुछ ना कुछ तऽ रस्ता निकली, बुद्धि तनी दउरा के देखीं

पहिले रउरा ऊठीं-जागीं, फिर आलस के कम्मर फेंकीं,
मन काहे ना फरहर होई, दाढ़ी-बार कटा के देखीं

दूध के धोवल केहू नइखे, ई हमाम में सब नंगे बा
जादे ना, बस हफ्ता भर के सब अखबार उठा के देखीं

कुछ दिन खातिर छोड़ दीं टीवी, दूर रहीं सोशल मीडिया से
जहरीला मौसम कम होई, ई नुस्खा अजमा के देखीं

कउआ सब तऽ बीट करेलें महादेव जी के ऊपर भी
ना यकीन होखे त रउरा मंदिर-मंदिर जाके देखीं

जेकर नाम भइल बा ओकरा पीछे अक्सर कुक्कुर पड़लें
सब नामी लोगन के रउरा बस इतिहास उठा के देखीं

सबकर जिनगी कथा-कहानी, सबकर जिनगी नाटक बाटे
रउरो अपना जिनगी के सब पन्ना के सरिया के देखीं

हार-जीत से ऊपर उठ के जिनगी के रस लेबे खातिर
तीत-मीठ अनुभव के भावुक आपन ज्ञान बना के देखीं

◆ ◆ ◆

4-

केहू कब ले नकारी हमरा के
केहू कब ले सुनीं ओ लबरा के

हम त सूरज हईं निकलबे करब
जाईं समझा दीं, करिया बदरा के

आग के राग अब कढ़ावे दीं
हो गइल गीत गजरा-कजरा के

साँच के आग जब लहक जाला
राख कर देला झूठ-चदरा के

रात-दिन ऐब खोजे अनका में
खुद के लउके ना मन के अन्हरा के

तूँ सँवारऽ बगइचा भावुक जी
कूदे-फाने दऽ चंट बनरा के

◆ ◆ ◆

मनोज भावुक

www.bhojpurisahityangan.com

चुटकी भर सेनुर

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

गरीबन के बेटी भइल त उनुका खुशी के ठेकान ना रहे, जइसे हुलस अँकवारी में अँटवले आँटत ना होखे, वजह ई रहे कि बिआह के पाॅंच बरिस बाद जे मेहरारू के आँचर भरल रहे, त खुशी काहे ना होई।

फेर का रहे गरीबन अपना बेटी सावित्री के पढ़ावे-लिखावे खातिर गाॅंव के स्कूल में नाम लिखा दिहलन, जिनिगी के हरियर दूब पनपे आ बढ़े लागल। आ धीरे धीरे जइसे हिरदय के समूचा धरती छेक लिहलस। अब बात रह गइल कि आखिर बेटी सयान हो गइल त कतना दिन ले बिआह टारल जाई, गाॅंवों घर के लोग कहे लागल कि गरीबन खुशी तोहरा देर से मिलल त का बेटी जात के बिआह समय से होखे के चाहीं, गोड़ घाम में बढ़ावे के परे त बढ़ावऽ, महटियावऽ जन, घर में चाउर संचल जाला, बेटी ना।

इहे बात लेके - गरीबन, बेटी जात सेयान हो जाए त घर में ना बइठल जाए।" सुन्नर काका खुलके के कहलन।

"तहरा जाने हम बइठल बानीं, ना, सुन्नर काका हम रिश्तेदार लोग के कान में लइका बतावे के बात दे दिहले बानीं।" गरीबन जवाबदेही के साँच बात कह घललन।

"आन के बेटी रिश्तेदार खातिर लउका के छिलन दाखिल होली, बेटी के बियाह के चिंता त बेटी के बाप के लेके चले के परेला, गरीबन। गरीबन, केतना रिश्तेदार त कार्ड के नेवता अइला के इंतजार करेलन, ऊ हाली भिरी ना सटेलन कि तूॅं मुॅंह खोल देबऽ।" सुन्नर काका ई सच्चाई कह देलन।

"सुन्नर काका, हमार बेटी के बियाह के गाड़ी फलका में नइखे फँसल, एह जवाबदेही में हमार कान्ह लागी।" गरीबन अपना दिल के सफाई देत कहलन।

सयान बेटी के बियाह लेके दूगो आम के पेड़ बेचा गइल, आ दू बिगहा घर के धनगर धरती रेहन रखा गइल। आमद के जरिया त दोसर रहे ना, बाकि बेटी के बियाह के हुलस त रहले रहे दूनों बेकत के, जवन करे कै रहे दूनों प्रानी के सलाह से करे के रहे।

"मोटरसाइकिल के पइसा कुछ घटऽता हो।" गरीबन अपना मेहरारू से समस्या के बात कहलन।

"नइहर अपना भइया से कहले रहीं, हम। मदद खातिर ,,,,। " गरीबन के मेहरारू सुरसती बतवली।

"त का कहलन,ऊ ?" गरीबन जानल चहलन,।

"हमार बात सुनके चुप्पी साध देलन।" सुरसती अहसत कहली आ फफक के रो दिहली।

"लोर से खाली भरोसा के बान्ह टूटेला। कारज पूरा ना होला, सुरसती। खास नां साथ देलन त का भइल गैर त जवाब नइखे दिहले।" जइसे गरीबन के कपार के भार बोलत होखे, बेटी के बाप एह बोझ से भाग के कहाॅ॑ जाई।

"त अब केकर उम्मीद लउकऽता ?" सुरसती सहमत कहली।

" जवना गाॅ॑व में सुन्नर काका होइहें ओह गाॅ॑व में गैर खास बन जाला, बहू।" सुन्नर काका के ई बात सुरसती के अबिस्वास से बिस्वास के घाट पर ले आइल। आ उनका मन के तसल्ली मिलल, धन बानीं सुन्नर काका। गरीबन के आबरू बचावे खातिर हीरा आदमी।

अगिला दिना मोटरसाइकिल दुआरे आ के लाग गइल आ चुटकी भर सेनुर के रस्म पूरा भइल। ◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी
रामगढ़, झारखंड

रघुनाथ के दालान

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

रघुनाथ गाँव के कवनो भारी भरकम गृहस्थ ना हवन, बाकि विचार के धनी आदमी हवन। उनुकर कमीज साफ-सुथरा आ मन दिल छल कपट से दूर रहेला। आ एही साथे उनुकरा दालान लगाव के लोकप्रियता बढ़ जला। आ दालान के भाग त हमेशा जगले रहेला। वजह ई बा कि गाँव के पुरबारी टोला से ले के पछेयारा टोला तक सबका घर बा बाकि दालान केहू के नइखे। अइसन हालत में दूगो नया हीत अइलन कि उठे - बइठे के सबिलह रघुनाथे के देखे के परेला।आ लोग नया हित नात बोलावे से पहिले रघुनाथ से अनुमति ले लेला कि इज्जत के बात बा दालान में हीत नात के टिकाव होई। रघुनाथ एह लेके के नकारस ना आ हीत नात के टिकाँव हो जाला। रघुनाथ के दालान एक ओरे अपना भाग पर धधाला कि गाँव के इज्जत हाल के साँउज हो जाला आ दोसर सवाल के बात ई कि कतना लोग पान पुड़िया खा के मुड़तारी के देवाल थूक के रंग देला। आ खइनी के खनिहार त जगह जगह चूना टिक देला।

तबो रघुनाथ के दालान भीतरे भीतरे आपन बदहाली के दास्तान कह के रह जाला।

रघुनाथ के दालान पक्का के सकल में बा, हीतो लोग ठहरेला त कहेला कि ना एगो दालान बा, इज्जत हाल के दालान। आ रघुनाथ के दालान रघुनाथ से शिकायतो ना करे कि लोग पान पुड़िया आ खैनी खा के के निहाल हो जाता थूक के। काहे कि ऊ जानत बा कि केहू हीत ठहरा के रंगाई ना कराई बाकि रघुनाथ चुकबो ना करिहें।

लोग आपन बियाह शादी कर के पार लाग जाला आ फेर उलट के तकबो ना करे लेकिन रघुनाथ आ उनका दालान में रिश्ता जे घनिष्ठता के बा। हीत नात

आन केहू के ना आवे त रघुनाथ के मछड़दानी होला आ दालान, दालान आपन हृदय के सारा बात बता देला कि कइसे बकचोन्हर लोग उठे के असकती मुड़तारी थूक के आनंद लेला आ ना होला त नोहे नखोर के देखेला कि रंगाई में खाली रंगे चटावल बा देवाल के कि दमगर बा।

सँवरुआ के लइका के बियाह में रघुनाथ के दालान ना रहित त फेर केहू दोबारा टपके आवे ओला ना रहे, काहे कि सँवरुआ के दूगो लइका पर एगो घर परत रहे, बाकि रघुनाथ के ना उपस्थिति में सँवरू चाभी ले लिहलन आ हीतन के ई बता देलन कि इहो दालान अपने ह। फिर का रहे लइका के माथे मउर चढ़ गइल, जब लइकी के भाई आ साढ़ अइलन तब न पता चलल कि दालान त रघुनाथ के ह। सँवरू के केहू बियाह बाद का करी, ऊ त अपने गिरह बाज आ बतकट ठहरलन। अइसन स्थिति में चुप हो जालन रघुनाथ। आ लइका खेलेलसन अरई काटो खरई काटो।

◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी
रामगढ़, झारखंड

कोइल

“कवना बने रहलू ए कोइलरि! कवना बने जालू?

केकरा दुअरवा ए कोइलरि! उछहरि जालू?

ननन बने रहली ई कोइलरि बिरिदा बने जाली,

रामचन्दर बाबा दुअरवा ई कोइलरि उछहरि जाली”।।

बियाह में मटकोड़ाई खातिर जात मेहरारुन के गावत ई गीत बचपने से सुनत अइलीं।एमें पूर्वांश प्रश्नात्मक बा त उत्तरांश उत्तरात्मक।उत्तरो कोइल के ना, कवनो जानकार के ओर से बा।

बुझाता जे कोइल अपना मौज में बिया।बुला; बसन्त आ गइल बा।फागुन भा बइसाख के लगन होई।एसे ननन/ नन्दन वन (इन्द्रदेव के स्वर्ग के बगइचा) के आनन्द भोगला के बाद अब धरती प आइल बहार के देखि-सुनिके वृन्दावन-विहारी के विहारभूमि के रस लेबे खातिर जातिया।

पहिले जब केहू कवनो राहगीर के देखी त अपना दुआरे प से प्रेम से, बाकिर तनी टनके पूछी; “कहाँ से आवतानी? कहाँ जायेके बा”? राही बताई त कही; “आईं; तनी ठंढा लीं।रस-पानी पी लीं”। ओसही जेकरा केने विवाहोत्सव बा, मटकोड़ होता, ओह उत्सवगान में आपन तान देत मस्त कोइल उड़ल जातिया।अगराइल पुछवइया के बुझाइल जे ई हमरे केने उत्सव में भागीदारी निभावे आइलि।बाकिर; ओकरा अचरज तब भइल, जब ऊ उड़त आगे बढ़ि गइलि। शायद; पड़ोसिन, सखी भा हितई में आइल कवनो औरत के ओकरा बारे में पता रहे। हो सकेला जे ऊ उड़त चिरईं के हाड़े हरदी लगावेवाली होखे।माने; बहुते तेज होखे भा रहस्य के जानकार होखे।उहे “कहाँ से आवताड़ आ कहाँ जायेके बा”? एकर उत्तर देतिया जे कोइलिया ननन बन में रहेले आ

बिरिदाबने जातिया।ई एहिजा होत मंगल में उड़ते-उड़त खुशीःखुशी आपन भागीदारियो निभवलसि।

बसन्त ऋतु के जसही आहट होला, ओसही कतहीं लुकाइल आ चुपाइल कोइल कूके भा कुहुके लागेले।कूकल आ कुहुकल में अन्तर बा।पहिला हर्षसूचक त दोसरका शोकसूचक।अधिका लोग कलरवे मानेलें, मीठे मानेलें।एही से लोग सुनिके खुश होलें।एही से नू कोकिल (कुक्—आदाने धातु में इलच् (इल) प्रत्यय) भा कोकिला (स्त्रीरूप) के मतलब मधुर स्वर में बोलेवाला कृष्णकाय पंछी होला! एही से नू कलकंठ (कलः माद्यः, कलप्रधानः, मादकता-पूर्ण-कंठः यस्य) आ मधुगायन (मधु गायतीति/ मधु + गै (धातु) + ण्युट् (यु/ अन) प्रत्यय) एकर नाम परल! एही से नू काकलीकंठ (काकली, अर्थात् सूक्ष्म-मधुरास्फुट-ध्वनिः कंठे यस्य) भा काकलीरव कहाइल!

खैर; अब दुसरका पक्ष कुहुकला के लिहल जाउ त हमरा बुझाला जे कवनो बसन्त एकरा के खूब सतइलस।एही से जब-जब ई ऋतु आवेला, तब-तब एकर घाव उपटि जाला।ई बेचैनी में कबो एह डाढ़ि त कबो ओह डाढ़ि प बइठि-बइठिके कुहुँकत रहेले।दिन खानी दरद तनी कमो रहेला, बाकिर रात खानी बढ़ि जाला।एसे जब बरदास ना होला त रात-बिरात रोवे लागेले।

लोग त आपन आनन्द खोजेलें, एसे कोइल कुहुँकतिया कि कूजतिया; का मतलब! घायल के गति घायल जाने, अउर न जाने कोय।कवनो बिरहिने बता सकेले जे जब अधरतिया के कोइलि बोलेले त ओकरा कइसन बुझाला! देखीं एगो पुरबी लोकगीत में बिरहिन प का बीतता—

“आधी-आधी रतिया के कुहुके कोइलिया राम! बैरिनिया भइली ना,
मोरा अँखिया के निनिया राम! बैरनिया भइली ना...।

बेचारी बिरहिन के बिरह त तन-मन में आगि लगवलही रहे, संगी बिना सेज सूने रहे।ऊ सूतेखानी करवट-प-करवट बदलते रहे, सोचत-बिचारत राति बीतल जाते रहे।जसही झँपकी आइल, तलक कोइल के सुर कान में समाइल।अब चैन कहाँ? अब त व्यथा आगि प चढ़ल दूध लेखा फफाये लागलि।

बिरहिन के दरद आजु के कमे लोग समझ पाई।काहें कि आजु बहुत कमे लोग प विरह सवार होला।होइबो करेला त कमे दिन खातिर।सइ-दू सइ बरिस पहले के बारे में सोचीं।जवना घरी ना त आवे-जायेके बढ़िया साधने रहे आ ना मोबाइले।कान बात सुने खातिर तरस जात रहे, आँखि सँइया के सूरतिया देखे खातिर छछन जात रहे।स्पर्श आ आलिंगन त बहुते दूर रहे।ई बात खाली बिरहिनिये के ना रहे, बिरहियो के रहे।बाकिर; का करो! कमासुत कमाये ना जाई त का करी! लाचारिये नू केहू परदेस के कलेस सहेला आ अपना दाम्पत्य के उपवास में राखेला! बरत आ उपवास लोग निमने खातिर नू करेला!

हेने देखीं; कालिदासो कोइल के बोली के प्रभाव जानत रहलें।उहे ना; उनुकर महाराज दशरथो के पिक-सन्देश बुझात रहे।तबे त अवधेश के बसन्त-विहार के प्रसंग में कविगुरु कोइल के कूक के माध्यम से काम-सन्देश लेके आइल बाड़ें! तबे त ऊ कहताड़ें—

“त्यजत मानमलं बत विग्रहैः
न पुनरेति गतं चतुरं वयः।

www.bhojpurisahityangan.com

परभृताभिरतीव निवेदिते
स्मरमते रमते स्म वधूजनः”।।(रघुवंश: 9.47)

अर्थात्; बसन्त ऋतु में कोइल के कुहू-कुहू से अइसन बुझात रहे जे ऊ कामदेव के सन्देश सुनावत कहत होखे जे ए मेहरारू लोग! रूसल-फूलल छोड़ि दजा, प्रियतम से लड़ाई-झगड़ा मत करजा।काहें कि जवानी जाई त फिर ना आई।ई सुनिके स्त्री लोग अपना पति से रमण करे लगली।

एही से नू ई कामदूती कहाले!

खैर; हमरा त बुझाता जे जवना घरी शिवजी के तिसरका आँखि खुलल आ रतिपति भसम हो गइलें, ओघरी रतिदेवी त पतिवियोग में भूंका फारिके रोअही लगली, साथे-साथ सृष्टिदेवियो रोवे लगली।सृष्टिदेवी के दुःख के कारण ई रहे जे अब त चराचर जगत के जनमे रुकि जाई। रुकि जाई त उनुकर मातृत्वे छिना जाई।ना त मानवे जनमिहें आ ना पशु-पक्षिये।कीड़ा-मकोड़ो आ पेड़-पउधो कइसे जनमिहें! कामदहन से जे बा, उहो नपुंसके हो जाई।राहत तब मिलल जब, शंकरजी ई वरदान देलें जे मदन द्वापरयुग में श्रीकृष्णपुत्र प्रद्युम्न के रूप में तहरा प्राप्त होइहें।ऊ सृष्टिदेवी के रोआई समझिके कहलें जे कामप्रवृत्ति बनल रही अनंग-रूप में सृष्टि-सहयोग करत रहिहें।

जइसे घवाही देह पुरुबा हवा के चलते बथे लागेला, ओसही बसन्त के आवते सृष्टिदेवी के ऊ दिन, ऊ क्षण याद आके कोइल बनाके कुहुकावे लागेला।काहें कि ऊ बसन्ते के समय रहे, जवना में सृजन सुखाये के नौबत आइल रहे।शायद; सृष्टिदेवी के अंग-अंग कोकिल-रूप में कुहुके लागेला, करुण स्वर में बिनतियो करे लागेला जे हे पशुपति! हे शिव-शंकरजी!! ऊ दुर्दिन कबो मत देखइह।

जे होखे; एके चीझु केहू के भावेला त केहू के एकदमे ना भावे।ओसही कोइल के बोली में केहू शृंगार रस त केहू करुण रस देखेला।केहू बिरह त केहू मिलन के स्वर।जइसन देखी, ओइसन अनुभव करी आ जइसन अनुभव करी, ओइसने नू ओकरा भीतर रस-संचार होई! एही से कहाला— केहू के भंटा बाई आ केहू के पंथ।

कोइल के रूप ना, बोलिये के मोल ह।रूप त कउओ से गइल, एकदम करिया कुचुकुचु।बोली के राग-रागिनियन के जानकार लोग पंचम स्वर मानेलें।जेकरा के वीणा के कंठ में स्थित विशिष्ट स्वरो कहल गइल बा।संगीतशास्त्र में इहो कहल गइल बा—

“वायुः समुद्गतो नाभेः उरोहृत्कंठ-मूर्द्धसु।
विचरन् पंचमस्थान- प्राप्त्या पंचम उच्यते”।।

अर्थात्; जब नाभि से उत्पन्न वायु वक्षःस्थल, हृदय से होत शिरोभाग में विचरण करेला, तब जवन स्वर निकलेला, ऊ पंचम कहाला।

‘संगीत-दामोदर’ में एही बात के अइसे कहल गइल बा—

“प्राणोऽपानः समानः च उदानो व्यान एव च।
एतेषां समवायेन जायते पंचमः स्वरः”।।

अर्थात्; प्राण, अपान, समान, उदान एवं व्यान; एह पाँचो प्राणन के संयोग से पंचम स्वर उत्पन्न होला।

जे होखे; कोइल के हृद्य बोलिये के कारण पिक, कोकिल-कोकिला, कलकंठ, काकलीरव आ मधुगायन-जइसन एकर नाम परल।गावे भा बोलेले एसे पिक (अपि कायति शब्दायते इति/ अपि इत्यस्य अकारस्य लोपीकृत्य पि + कै--शब्दे (धातु +) क (अ) प्रत्यय), कोकिल (कुक्—आदाने (धातु) + इलच् (इल) प्रत्यय), कुहू-कुहू कके बोलेले एसे कुहूरव (कुहू इति रवः यस्य), कुहूकंठ (कुहू इति शब्दः कंठे यस्य), कुहूमुख (कुहू इति शब्दः मुखे यस्य), वन में रहला से वनप्रिय (वनं प्रियं यस्य), मधुगायन के मधुमय गान करेवाली भा मधुमास भा बसन्त ऋतु में विशेष बोलेवाली; अर्थ लगावल जा सकेला।

वासन्त के मतलब वसन्त में होखेवाला (वसन्ते भवः इति/ वसन्त + अण् (अ) प्रत्यय)।अइसे त एह समय बहुते वनस्पतियन के उत्पत्ति होले, बाकिर बुला ऊँटो के जनम होला।एसे उहो वासन्त कहाइल बा।कविसमय के अनुसार कोइल बसन्ते में अधिका बोलेले, एसे एकर आगमन के काल मनाइल बा आ एकरा के वासन्त कहल गइल बा।एही तरे बसन्तघोषी (वसन्ते, वसन्तकाले घोषति विरौतीति/ वसन्त + घुष् (धातु) + णिनि (इन्/ई) प्रत्यय), बसन्तदूत (वस्तस्य दूत इव) कहल गइल बा।

“काकः कृष्णः पिकः कृष्ण को भेदः पिक-काकयोः” में त कउआ-कोइल; दूनो करिये बतावल गइल बाड़ें।होइबो करेलें करिये।बाकिर; ताँमा नियन लाल आँखि के कारण ताम्राक्ष (ताम्रे, रक्ताभे अक्षिणी यस्य) आ गन्धर्व लोग गानविशेषज्ञ मानल गइल बाड़ें, एसे बड़ाई में एकरा के साक्षात् गन्धर्व कहल गइल।एगो अउर नाम आवता।ऊ ह कामान्ध।अब कामान्ध काहें कहाइल त एसे जे एकर स्वर सुनते लोगन में कामप्रवृत्ति बढ़िया जाले।एही से एकर निरुक्ति बिया— ‘कामेन अन्धयति निजध्वनि-जनित-मन्मथोद्दीपनेन हतज्ञानं करोतिति’।

अब चलीं; कोइल के दूगो समानार्थ अउर बाड़ें— परपुष्ट आ परभृत।एह दूनो में पहिले ‘पर’ बा, एकरा बाद क्रमशः पुष्ट आ भृत।‘पर’ के अर्थ दोसर आ ‘पुष्ट’ भा ‘भृत’ के अर्थ पोसाइल आ भरण-पोषण कइल गइल।अब ई विचित्र बात बा जे कोइल परपुष्ट आ परभृत हिय।माने ई जे एकर पालन एकर माई-बाबू ना, कउआ करेला।हम पुरनिया लोग के मुँहे ई बात सुनले रहीं, कविप्रयोगो देखेके मिलल।देखीं; महाकवि शूद्रक के ‘मृच्छकटिक’ के प्रयुक्ति में आइल— “परभृत इव नीडे रक्षितो वायसीभिः” (7.3)।मतलब साफ बा जे कउई (मादा कउआ) कोइल के पालेली सँ।

कहल जाला जे कोइल के जब अंडा देबे के होला त पहिले कउआ के खोंता के पता लगावेले। दूनो लगभग एके समय अंडा देलें।कोइल के आपन अंडा सेवे में मन ना लागे।चालाकी से चुपुके-चुपुके कउआ के खोंता में घुसिके ओकर अंडा फोरि देले आ ओहिजे आपन अंडा दे देले। कउआ-कउई समझेंलें जे ई हमरे अंडा ह।जब अंडा से चूजा होला, एकरा बाद पाँख आ जाला त ओकर बोली पहिचान के कउआ-कउई पछतालें आ एने बच्चा कोकिल उड़े लायेक हो जाला। अब ऊ का करिहें! एही से कोइल के परपुष्ट भा परभृत कहल गइल बा।

◆ ◆ ◆

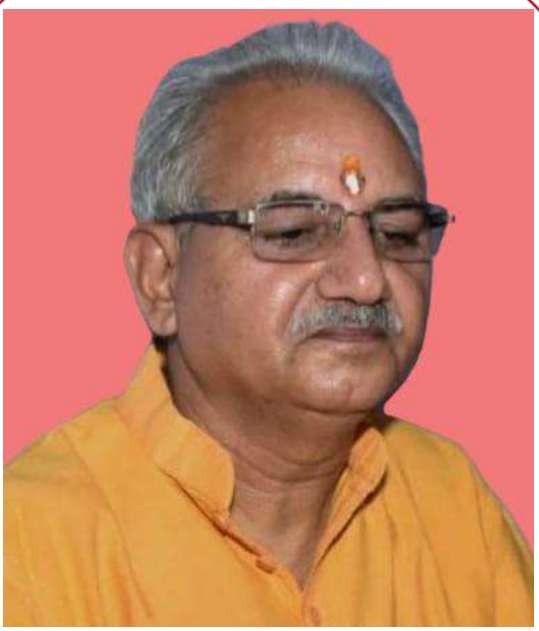

मार्कण्डेय शारदेय

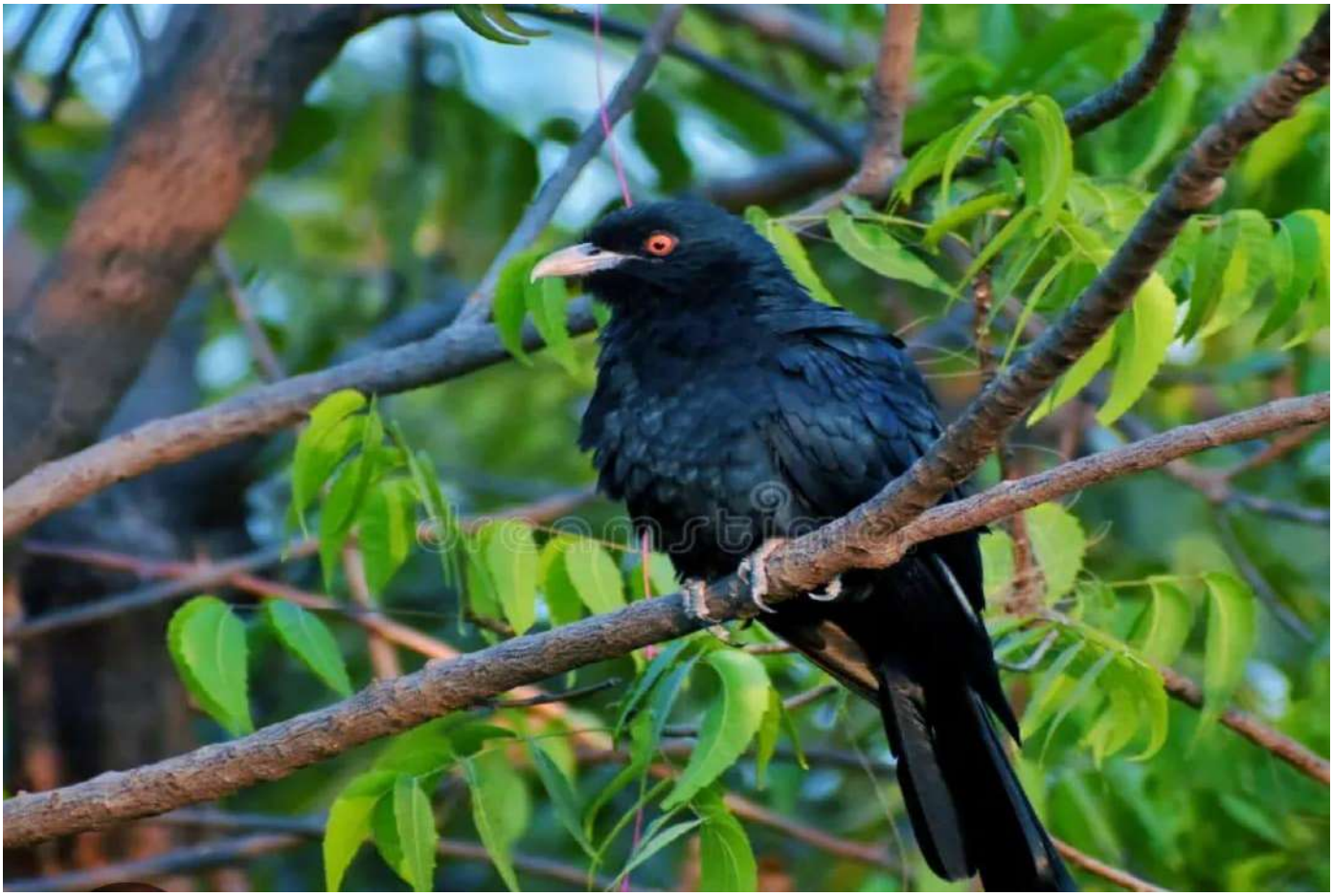

मैनी

पता ना; मैना कि मैनी! पंछियन के नर-मादा के बिचार कठिन होला।तबो; हिन्दी में मैना होला, मैनी ना।बाकिर; शुक-सारिका भा हिन्दी के नकल प भोजपुरियो में तोता-मैना चलबे करेला।मैना होखसु भा मैनी, हिन्दी दूनो के सामान्यतः स्त्रिये मानेले।भोजपुरी जरूर हिगरावेले।बाकिर; का हिगराई, जब पहचानले ना जाई! दूनो के सकल-सूरत में भेद परखेवाला केहू भले होखे, हमरा ना बुझाला।भेद त होइबे करेला, तबे त सृष्टि चलेले!

हँ; हमनी किहाँ पहले हाथी स्त्री आ हाथा पुरुष मनात रहे।पता ना; हाथी-हथिनी मनाता कि हाथा-हाथिये! शायद; हाथी-हथिनी लेखा मैना-मैनी होखे।बाकिर ना; भोजपुरी में मैना कमे चलेला, मैनिये चलेले।बुला; स्त्रीप्रधान समाज मनाला।

जे होखे; हमरा पूजा भीरी रोजे मैनी आवेली सँ।जब पूजा करे जाईंला त गमला के पासे एगो-दूगो भा अधिको फुदुकत रहेली सँ।आपन गीत-गवनई चालू रखेली सँ।हरदम बहुवचन नाहिये, एके वचन में प्रायः।बाकिर; गावे में तनकियो कोताही ना।सहगान ना होखे त का, एकलो में कम गुलजार आ झंकार ना रहे।हँ; ऊ रोजे आपन आतुर उपस्थिति दर्ज जरूरे करावेले।शायद; ओकरे परिवार के अउर होखिहें सँ।पहचानल सम्भव नइखे।कबो-कबो पूजा होत खानी अनुपस्थितियो लउकेले।तबो; पूजास्थल से उठिके जब हम अउर जगे धूप देखावे गइलीं आ आके देखलीं त चढ़ावल प्रसाद के किसमिस गायब।बुला; दयावश कबो-कबो एगो-दूगो दाना छोड़ियो दियाइल। मन-मर्जी से भा समझ-बूझ से।

हम नैवेद्य के रूप में शालग्रामजी के सामने गिनिके रोज दसगो किसमिस आ दूगो तुलसीदल रखींला।दसगो एसे कि विष्णु-प्रधान पंचायतन में विष्णु,

शिव, गणेश, सूर्य आ देवी के नामे दू-दूगो रखींला।ओमें से दूगो विष्णु-पार्षद लोग के निवेदित करींला।पहिले शेष स्वयं पावत रहीं।ई नियम बहुत दिन ले चलल।बाकिर; मधुमेह भइला के बाद से अब ओमें से एकही किसमिस आ तुलसीदल चरणामृत के साथे ग्रहण करींला।

कुछ दिन तक त अउर सभ दाना मैनी खातिर छोड़ देत रहीं।बाकिर; हमहूँ कम कंजूस ना हईं।हमरा बुझाइल जे बचावे के चाहीं।तब से हम चारगो दाना दोसरा डिब्बा में रखींला आ तीनगो मैनी खातिर।तीनगो एसे कि विष्णु-पार्षद लोग के प्रसादो मैनिये के कंठे जाला।एह तरे हमरा-ओकरा हिस्सा पाँच-पाँचगो हो जाला।तबो; हमरा बुझाला जे ओकरा खातिर ऊ आन्दोलन करेले।हम ओकर भाषा भले ना बूझीं, बाकिर बुझाला जे ऊ कहेले कि कम बा, अउर दे; बचवलका दे।का जाने कगो खाले आ कगो ले जाले परिवार खातिर!

हमार पत्नी कम मयगर ना हई।उनुका हमार कंजूसी ना भावेले।ऊ त कहेली जे उनुका के देखते उनुका से मैनिया लड़े लागेले।सुनलहू बानी जे ई जतिये जुझारू ह।एसे श्रीमती के बात प अविश्वास के जगह नइखे।हमरा देला से ओकरा सन्तोष ना होखे।एसे उनुका से लड़त होई। उनुका से अउरी माँगत होई।एही से ऊ रोज डिब्बा में बचावल किसमिस देत रहेली।हम खिसियाईंला त कहेली जे ऊ हमरा से लड़ेले त का करीं! जाये दीं; उहो कवनो जुनम के अपने केहू होई।आपन हक माँगतिया।हम चुपा जाईंला।का करीं! हमहूँ त मनेबे करींला जे केहू कइसहूँ जुड़ल बा त दूनो के कर्मफले के देन ह।हो सकेला जे पूर्व जन्म में हमरा के ऊ परसादी खियाके भा कवनो तरे कवनो पाप से बचाके तिर्यक् योनि या कवनो योनि से उद्धार कके मनुष्य बने में उपकार कइले होखी।भा; अपने पूर्वजन में से केहू होखी।ई बात भारतीय दर्शन के अनुकूले बा।बिना कवनो लगाव के हमरा किहाँ काहें आइत!

जब कबो हम सोचींला त मैनिया आँखिन में नाचे लागेले, फुदुके लागेले।विधाता के सुन्दर सृष्टि के कतना बढ़िया उहो एगो पहचान बिया! ओकर चहकल कतना नीमन लागेला! ओकर रूप कतना मनभावन लागेला! शायद; एही से अउर पंछी ना पलालें; बस दुइयेगो पोसल जालें, तोता-मैना।शायद; ई मानव-मन के करीबी होलें, एसे।शायद; ई मानव-बोली के पकड़ेलें, एसे।

तोता-मैना; ई शब्द जोड़ी लेखा पहिले अधिका प्रचलित रहे।मरद-मेहरारू लेखा, कहि सकींला। शायद; ई दूनो साथही पोसात रहन।अब पशु-पक्षी पाले के युग गइल।अब त लोगन के जिनिगिये भाग-दउर में अधिका बिया।साँच कहल जाउ मशीनी बिया।मशीन लेखा एसे कि भावना कम, दिमाग अधिका चलता।पहिले दिल-दिमाग के मेल से मानव बनत रहे।अब जतने दिमागी, ओतने बड़ आदिमी।संवेदना सुखाई तबे दिमाग अधिका चली।दिमाग अधिका चली त कम समय में अधिका काम होई।अधिका काम त अधिका दाम।अधिका दाम त अधिका नाम। अधिका दाम-नाम त अधिका-से-अधिका भौतिक सुख-सुविधा।अधिका सुविधा त अधिका तड़क-भड़क।अइसना में जब मरद-मेहरारुयो में कमे बात होला त सगा-

सम्बन्धियन के गिनती कवना में बा! जब आपुसो में बात करेके समय ना रहे त पशु-पक्षी प के ध्यान देउ! दरबे से सरबे।चहबे से करबे।इहे मानव-जीवन के ध्येय होखी त के पशु-पक्षी पाली! पइसा बड़ले बा, बाजार बड़ले बा त काहें के गोसेवा करेके बा! काहेंके गोबर काछेके बा! जतना देर गाय-गरू में लगाइम, ओतना देरी में त कतना पइसा उपजाइम।अब पशुपालन के जगहो कहाँ बा! जगहो बा त सामानन से ठकचल बा।

हँ; कुछ लोग कुकुर पोसताड़ें।उहो पशुप्रेम से ना, बलुक देखावे खातिर आ रखवारी खातिर। बइठाके त बाप जब जवान बेटा के खियावल नइखे चाहत, बूढ़ बाप-महतारी के बेटा-पतोह खियावल नइखे चाहत त के पशु-पंछियन के पोसी! कुकुर पलाइलो त विदेशी।देशी त रोड़े प मरत-जीअताड़ें।वफादार उहो होलें।बाकिर; विदेशी वस्तु हमनी के अधिके प्रेम के सूचक होला, अधिका भावेला।शान बुझाले जे हमरा पासे विदेशी वस्तु बा, विदेशी नस्ल के कुत्ता बा।घर के जोगी जोगड़ा, आन गाँव के सिद्ध।

खैर; मैनिये के बात करेके बा।बाकिर; शुक-सारिका भा तोता-मैना त सहचर लेखा प्रयुक्त बाड़ें।कामसूत्रो में चँउसठ कला गिनावत कामर्षि वात्स्यायन तैंतासीसवाँ कला में शुक-सारिका के प्रलापन, माने तोता-मैना के पढ़ावे के गुण मानताड़ें।

हम त पोसले नइखीं आ ना केहू किहाँ मैनी पोसाइल आ ओकरा के पढ़ावले देखले बानी। सुग्गा पोसाइल आ पढ़ावल देखले-सुनले बानी।शायद; शुकवत् सारिको आपन मानव के अनुकृत बोली से लोकरंजन करेले।एही से संस्कृत में गोराटी (गां मनुष्य-वाचं रटतीति/ भाषार्थक 'गो' शब्द, 'रट्' धातु में 'अण्' (अ) आ 'ङीप्' (ई) प्रत्यय), गोराटिका/गोरांटिका (गां मनुष्य-वाचं रटतीति/ भाषार्थक 'गो' शब्द, 'रट्' धातु 'कन्' (क) आ 'टाप्' (आ) प्रत्यय), गोकिराटी (गोकिरा वाचं रटन्ती सती अटतीति/ गो शब्द 'कृ—विक्षेपे' (फेकल, छितरावल) धातु, 'क' (अ) आ 'टाप्' (आ) से प्रत्यय से बनल गोकिरा आ गोकिरा के साथे 'अट्' धातु 'अण्' (अ) आ 'ङीष्' (ई) प्रत्यय के योग से) भा गोकिराटिका (गां वाचं किरति रटतीति/ गोकिरा के साथे 'रट्' धातु आ 'ण्वुल्' (अक) तथा 'टाप्' (आ) प्रत्यय के योग) कहल गइल बा, जेकर अरथ होला मानवीय भाषा बोलेवाली।

का त मण्डन मिश्र किहाँ शुकांगना, माने तोता-मैना शास्त्र-चिन्तन करत रहन।हमरा जाने में ई दिव्यारोपण ह।'स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं...' ई रटल श्लोक अपना-अपना धुन में गावत होइहें।फिर; तिल के ताड़ क दियाइल।

मधुरालापा (मधुरः श्रुति-सुखकरः आलापः शब्दः यस्याः) सारिका के एगो पर्याय ह।प्रश्न बा जे मैनी का मीठ बोलेले? त; उहो मीठे बोलेले।एही से त मधुरालापा नाम पड़ल बा! माने; मधुर आलाप करेवाली।दरअसल; मिठासो के भोदोपभेद होलें।गुर के मिठास आ चीनी के भा मिसरी के मिठास एके लेखा ना नू होखे! आम के मिठास आ पपीता के मिठास एके लेखा ना नू होखे! रसगुल्ला आ मुरब्बा के मिठास भिन्न होला नू! तबो; सबके मीठे कहल जाला।पंछिन में कोइलियो मीठे बोले ले।बाकिर; ऊ अधिक स्वच्छन्द विचरण करेले।पोस ना माने।पोस त तोता-मैनो ना मानसु।पिंजड़ा से बाहर

आवस त रफ्फू-चक्कर।तबो; अन्तर ई बा जे शुक-सारिका आदिमी के बोली बोलेलें, जबकि कोइलि अपने धुन में रहेले।ऊ नकल करे ना जानेले। ऊ नकल करावे जनेले।मानव पोसुआ के नकल करो! अपना के बड़का मानेवाला के बरदास ना होखे।एसे आदमी कोइल ना पाले।

शायद; सुग्गा पाले के प्रचलन पहिलही से अधिका रहल, एसे ऊ आजुओ अधिका पालल जालें।तबो; शुक-सारिका के जोड़ी प्राचीन साहित्य में जीवित बिया।बुला; दूनो के बोली के मीठ माने के चलन रहल, तबे त ई दूनो पोसात रहलें! मानतानी जे सुग्गा आजुओ सबसे अधिक सम्मान पावेलें, बाकिर ई पुरुष-प्रधान समाज के देन मानल जा सकेला।भा; ओकर हरियर रंग तथा गणेशजी नियन वक्र आ रक्त चंचु के आकर्षण के साथे रट्टूपन कारण हो सकेला।तबो; पुराना जमाना में लोग तोता-मैना के कहानी कहते रहलें।माने; दूनो के समान देखेके सामाजिक न्याय रहल।

जनकपुर में सीतोजी सोना के पिंजड़ा में शुक-सारिका पोसले रही।दूनो के सस्नेह पढ़ावत रही।श्रीराम से विवाह भइला के बाद जानकी के विदाई के समय मानव-सुलभ उनुको में विकलता फफाइल रहलि।तबे त तुलसीदास कहताड़ें-

“सुक सारिका जानकी ज्याए।कनक पिंजरहिं राखि पढ़ाए।।

ब्याकुल कहहिं कहाँ बैदेही।सुनि धीरजु परिहरइ न केही”।। (मानस 1.337.1-2)

रामो किहाँ शुक-सारिका पोसाइल रहन।कौसल्या माता के उहो कम दुलार ना पावत रहन।भले कविवचन होखे।कविवचने नू साहित्य ह, इतिहास ह, व्यावहारिक ज्ञान ह आ आप्तवाक्य ह! ओहिजो प्रिया-सम्मित वाणी के महत्त्व रहल।ओहिजो पति-पत्नी लेखा ई दूनो प्राणी विचारन के आदान-प्रदान करत रहलें।तबे त वनगमन के समय श्रीराम लक्ष्मण से अपना माई के व्याकुल मनःस्थिति के अनुभव करत आ स्वयं के कुपुत्र मानत कहताड़ें—

“मन्ये प्रीतिविशिष्टा सा मत्तो लक्ष्मण सारिका।

यत् तस्याः श्रूयते वाक्यं शुक पादम् अरेः दश।।“ (वाल्मीकीय रामायण: 2.53.22)

माने ई जे हे लक्ष्मण! हमरा से त अधिका मैनिया हमरा माई के मानेले।काहेंकि; माई बतावेले जे ऊ सुगवा से कहेले कि राम के माई के जे केहू शत्रु होखे, ओकरा के अपना चोंच से काट घालु, ताकि उनुका कवनो तरह के दुख-शोक ना होखे।

वाह रे वीरांगना मैनी! ई त पुरुष में पौरुष भरे के यत्न करतिया! सुग्गा राम के उकुसावतिया। अइसही ‘किरातार्जुनीय’ के द्रौपदियो युधिष्ठिर के उद्बोधित करताड़ी।बुला; महाप्राणा नारी ना रहती त पुरुष मउगे हो जइतें, ऊ सेजे प वीरता-प्रदर्शन करत रहितें। समझदार आ हिमतगरे मेहरारू मरद के उदबेगिके रणभूमि आ कर्मभूमि में भेजेले।एही से गुरु-सम्मित, मित्र-सम्मित से अधिका प्रिया-सम्मित वाक्य के महत्त्व बा।

खैर; ना पोसला गुने मैनी भले हमनी लेखा ना बोले, पर बोलेले त, कुछ कहेले त।जंगली सुग्गो कहाँ गुरुमन्त्र रटेलें! ऊ त खाली टेंटें-टेंटें करत रहेलें।ओसही मैनियो आपन भाषा बोलेले।आपन भाषा माने मातृभाषा, जवना में सहजता होले, जवना में

प्राकृतिक स्वच्छन्दता रहेले।शिक्षा के भाषा में परतन्त्रता रहेले।दिमाग दुभाषिया भा ट्रांसलेटर बन जाला।भले ऊ दूनो भाषा के विशेषज्ञ होखसु, भले ऊ दुसरकी भाषा में कलात्मक प्रयोग परोसे में माहिर होखसु, बाकिर उनुकर प्रस्तुति होटल के खाना जइसन होले, जबकि आपन भाषा के अभिव्यक्ति घर के खायेक अस।

खैर; मैनी के छोट गात हमेशा स्पन्दित रहेला।अपना उतान आ लचकत-भचकत चाल-ढाल से, अपना रूप-रंग से, अपना बोली से, अपना मस्ती से बस्ती में एगो गजब के रंग, एगो गजब के ढंग घोरत रहेले।भूअर भा कथई पाँख पर सफेद आ करिया रंग चितेरा के कला बखाने के मन करेला।ठोर पीअर, पैर पीअर आ आँखि के पासे पीअर।गजब के चितवन।वाह रे विधाता के सृजन! वाह रे कला! वाह रे विचित्र लोचन! वाह रे मुड़ी हिलावल! अउर हम कहिये का सकीं! बुझाते नइखे।

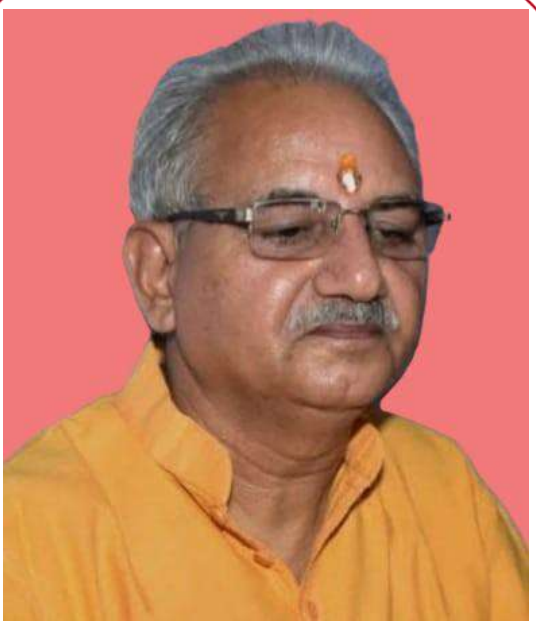

मार्कण्डेय शारदेय

◆ ◆ ◆

सब एहीजे मिली

मोर बाल बच्चा खूबे सुनर,
ई घमंड रूप के पाली मत।
दोसरा के करिया नकभेभर,
मीन मेख अनका काढ़ी मत।।

सुनरको जाई बउरको जाई,
बिधना के लेख बुझाई कब।
धरम करम तनी राखीं नीमन,
ताकि गइला पर गुन गाई सब।।

रहत होखऽ तू महल अटारी,
चाहें टूटल झोपड़ पट्टी लघु।
आइल बा जे ऊ जइबे करी
के विधि लेखा के टारी 'रघु'।।

रात अन्हरिया भा अंजोरिया,
हो बसंत या दिन पानी बूनी।
छोड़ देह चल जाइ बहरिया,
अमर आत्मा के सब कहानी सुनी।।

छोड़ऽ घमंड रूपया पइसा के,
सोना नियन महल अटारी के।
ए मनई रहऽ बना व्यवहार के,
ना त उड़त परान देह जारी के।।

बाउर दिन भी बनत मिली,
बनल दिन होत बाउर मिली।
जइसन करबऽ ओइसन मिली,
सरग नरक सब एहीजे मिली।।

◆◆◆

राघवेंद्र प्रकाश 'रघु'
बक्सर (बिहार)

अंगना में उतरे लें सूरज मुंडेर से

अंगना में उतरे लें सूरज मुंडेर से
बहे पुरुवाई बयारि धीरे धीरे।
चमकत अकसवा में लाली पसरि गइल
झुनुक झुनुक बाजेला लोरि धीरे धीरे।।

बोलेलें कागा बइठल मुंडेर से,
झूमे कोयल गावे डार धीरे धीरे।
ललना के अँखिया के कजरा निहारि गइल
पोछेली मैया कोरि धीरे धीरे।।

विहँसत धरतिया उचरे सबेर से,
निकलें किसान कान्हें कुदार धीरे धीरे।गोरिया के घुंघटा के कोरिया उघारि गइल
भोरहीं के मधुरे बयारि धीरे धीरे।।

हरी हरी घसिया बोले बटेर से
बचिहऽ सिकारिन से यार धीरे धीरे।
निसना निसानी जे काल्हे निहारि गइल
करिहऽ तू बचिके, बिचारि धीरे धीरे।।

अंगना में उतरे लें सूरज मुंडेर से
बहे पुरुवाई बयारि धीरे धीरे।।

◆ ◆ ◆

डॉ मोहन पाण्डेय 'भ्रमर'
कुशीनगर,उत्तर प्रदेश

अइबऽ कब?

पिया गइलें परदेस, अँखिया लोर बहेला,
सावन के रिमझिम में करेजवा मोर दहकेला।
रात-दिन बिरहा के अगिया में मनवाँ तड़पेला,
तोहरा बिना, ए सजनवाँ, जिनगी सून लागेला।

पुरवइया बहे, त सजन के गंधिया ले आवेला,
भीतरे-भीतर दरदिया अउरी बढ़ावेला।
ननदी के हँसी-ठिठोली मने ना भावेला,
तोहरा बिना, ए पिया, रतिया ना कटेला।

कोइलिया कुहुके, त करेजवा धड़का जाला,
बदरवा गरजे, त मनवाँ सहम जाला।
चमके बिजुरिया, त देहिया दहकेला,
तोर बिना, ए राजा, सेजरिया डँसेला।

दुअरवा पर नजरिया साँझ-सबेरे रखीला,
तोहके याद करि राहिया निहारीला।
आस के दिअरिया रोजे जरत-बुझत रहेला,
बतावऽ, अइबऽ कब? हम जानल चाहीला।

◆ ◆ ◆

पहिलहीं भँवर में डूब जाला

डॉ दिनेश प्रसाद सिन्हा

अवारा बादर हवा से टकरा
उड़ जाला,
जइसे बालू के भीत
ज्यादा देर ना टिकेला।

रंग बदलऽ दिन में कई-कई,
ढंग बदलऽ बोली,
मतलब खातिर नेह देखावऽ,
भीतर सूखल खोखी हो जाला।

थोड़ा लाभ के लू बहल त,
साँचो छूट जाला,
कागज के मान-मरजादा
पानी में फूट जाला।

जिनिगी ओही बरगद हवे
जे धूपो सहि लेला,
जेकरे जर माटी में गाढ़ल,
ऊहे देर ले टिकेला।

चेहरा पर मुस्की टंगल,
भीतर काँटा पालेला,
अइसन मनई मौका देखि
अपने के डँस लेला।

धन-दौलत के चकाचौंध
पल भर आँखि झपकावेला,
साँच-धरम के धीमा जोती
पीढ़ी भर उजियावेला।

टिके उहे नाव धार में
जे पतवार संभारे,
बाकी खोखल डेंगुर त
पहिलहीं भँवर में डूब जाला

◆ ◆ ◆

नाज - नखरा

नाज - नखरा सब उठावल ठीक बा।
साथ में जिनगी बितावल ठीक बा।

तेल सरसों धइ कपारे प्यार से -
गोड़ धनिया के दबावल ठीक बा।

झील बड़की आँखि के कहि के सुनऽ -
चान से नीमन बतावल ठीक बा।

जब कबो आवें नजर धनिया मगन -
उनसे फिर बटुआ बचावल ठीक बा।

प्यार धनिया के तोहे चाहीं अगर -
रोज तब झाड़ू लगावल ठीक बा।

हँऽ! कबो उनके जरावे के बदे-
गुन पड़ोसन के सुनावल ठीक बा।

खीस में गारी दिहल बरदान हऽ -
"कृष्ण" बेलना भी चलावल ठीक बा।

◆ ◆ ◆

कृष्ण कुमार श्रीवास्तव "कृष्णा"
कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

राह चलत मुलाकात हो गइल

राह चलत मुलाकात हो गइल,
भोजपुरी से बात हो गइल
जवन बात लुकाइल रहल
ऊ अब खुला किताब हो गइल।

पूछनीं हम भोजपुरी से,
अबो तू काहें भटकत बाड़ऽ
का तोहरा मालूम नइखे,
जे हमरा से पूछत बाड़ऽ

भोजपुरी के उलटा सवाल से,
पहिले त हम चकरइनीं
बचे के ना लउकल राह,
ढिठाई से बात बढ़वनीं
सभे जोर लगवले बा,
का लेखक आ का गायक
देखत नइखऽ लागल बा सभे,
का नेता आ का नायक

देखत बानीं लागल बा सभे,
हमरा के सँवारे में
तबो काहें भटकत बानीं हम,
भाषा बीच बजारे में
पीछे लोग त बड़ले बा,
तनी तूहूँ जोर लगावऽ
कतहूँ कवनो कमी लउके,
हमके तू बतलाव

गायक लोग से मिल के देखऽ,
ना बाबा ओजा ना जायेम
जवनो इज्जत बाँचल बा,
जाके ना हम लुटवायेम

बात तोहार त ठीके बा,
आवऽ फेर कवि सम्मलेन में
ओजा आ के का करब हम,
खाली घूमे खातिर शहरन में

फेर एक बार मिलऽ नेतवन से,
शायद बन जाए बात
के जाई ओकनी के बीच,
खाए धक्का मुक्की लात
बुढ़वा मंगर के सभे जुटी,
तुहूँ थोड़ा सा कष्ट उठावऽ
देखऽ हमनीं के कोशिश,
अबकी 'जंतर-मंतर' पर आवऽ

ई पहिला बेर त बावे ना,
का देखीं हम 'जंतर-मंतर' के
जादू टोना बेअसर बा,
भाव बदलल बा 'जंतर-मंतर' के
ना जाने कबसे उलझल बानीं,
हम भाषा बीच लड़ाई में
तबो बात बनत नइखे ,
अबहिंयो मामला बा खटाई में

हमके काहें के दउरावत बानीं,
चलीं हमरा संगे गाँव
लोग हमरा पर सूते हमरा के ओढ़े,
ओहिजे मिली ठाँव

राह चलत मुलाकात हो गइल,
भोजपुरी से बात हो गइल
जवन बात लुकाइल रहल,
ऊ अब खुला किताब हो गइल।

◆ ◆ ◆

रंजन प्रकाश
संस्थापक/संचालक :
भोजपुरी डिजिटल लाइब्रेरी
(www.bhojurisahityangan.com)

अमृत कलश 'सागर-मंथन'

सुरसती : अंक _ अक्तूबर 2001

कुछ-कुछ

डहर : अंक 01_अगस्त 1977

निर्भय-गंगा

भीतरी के घाव

शहर के नाव का लिही... उहे गंगा माई के तीरे बसल एगो छोटहन कस्बे समझ लीं, जहाँ भोर होते अउर सुरुज देव के उगे के संगहीं आबोहवा में चाह के भाप अउर छनर मनर करत ताजा-करारा जलेबी पकउड़ी के महक अइसन घुल-मिल जाव, जइसे फगुआ में अबीर गुलाल।

ओही बजार के ठीक नुक्कड़ पर, बरगद के पेड़ के छाँह में एगो मड़ई से शुरू भइल रहे, “शुक्ला मिष्ठान भंडार”।

अउर ओह दोकान के मालिक रहलन, धुरन बाबा। हँ, मय इलाका, का छोट, का बड़, केहू उनका के ‘ध्रुव नारायण शुक्ला’ ना कहत रहे, सभे ‘धुरने बाबा’ कहके गोहरावे भा गोड़ लागत बानीं धुरन बाबा, कहे।

धुरन बाबा के जिनगी में ई मिठास कौनो विरासत में ना मिलल रहे, एक-एक दाना बिटोरे खातिर ऊ लहू-पसीना एक कइले रहलन।

बाबा गाँव से सहर भाग के आइल रहलें हीरो बने खातिर, बाकिर भाग में जवन लिखल रही, उहे राह धरे के पड़ी।

जेठ के दुपहरी होखे भा माघ के कँपकँपावत जाड़, धुरन बाबा कपार प गमछा बान्ह के, ठेला ठेलत खोरी-गली में आवाज लगावत फिरस

“अरे गरमा-गरम रसदार जलेबी खा ल भाई...

जे ना खाई ओकर मन लुबलुबाई,

का करीं ऐकर बखान! बस एतने जानीं कि

खाएवाला के मन-मिजाज जुड़ा जाई,”।

अउर ई काम ऊ अकेले ना करत रहलें, उनकर हाथ बटावत रहली उनकर घरवाली सुरसती आजी।

मैदा नियन गोर रूप, अउर हिरदय एकदम गंगा नियर पवित्र। आजी भोरहीं उठ के गंगा जी नहा के पूजा-पाठ क लेस, ओकरा बाद चूल्हा लीप धो के नाश्ता पानी बना के बाबा सँगे जलेबी पकउड़ी बेंचे चल देत रहली।

दिन भर थकला के बादो चेहरा प के मुस्कान ना गायब होखे। रात के जब बाबा थाक-हार के सूते जास तऽ करूआ तेल हाथ में लेके बाबा के हाथ-गोड़ मींज देत रहली आ देह दबावत घरी ऊ कहस,

“देखिहऽ, एक दिन तोहार ई दुकान पूरा बजार का, पूरा जिला में नाम करी। हमार मन कहत बा।”

धुरन बाबा थकाइल हँसी हँस देत रहलन अउर कहस,

“जब तोहरा जइसन लछमी के साथ बा, तऽ हमरा खातिर कुछहु भारी नइखे।”

दूनों जना के ई हँसी-मजाक अउर गरीबी के बीच के माया में ही पूरा संसार बसत रहे।

दिन बीतल, क गो पूस-आषाढ़ बीतल, अउर बाबा के मेहनत रंग ले आइल। ‘दिन दूना, रात चौगुना’ तरक्की भइल। ठेला होटल आ अब एगो पक्का दोकान बन गइल, अउर देखते-देखत ऊ बजार के सबसे बड़ मिष्ठान भंडार में बदल गइल।

अब तऽ आसपास के दसन गो गाँव में कौनो बियाह-शादी भा मूड़न-जनेउ होखे त बिना “शुक्ला मिष्ठान” के बुंदिया अउर पेड़ा के कतहीं बात ना बनत रहे।

ओने घर के अँगना में ओ दूनो बेकत के ललना बेटा आदित मकइया बन के चलते-चलत अब सयान हो गइल रहलें। धुरन बाबा अपना में कंजूसी क के, उनकरा के सहर के सबसे महंग स्कूल में पढ़वलन।

बाबा सोचस कि हम तऽ चीनी आ गुड़ के पाग नापत अउर छनउटा चलावत जिनगी बिता देहनीं, बाकिर हमार बेटा बबुआ बन के कुरसी पर बइठी। सुरसती आजी अँचरा में हाथ पोछत कहली,

“हमनी के जिनगी तऽ चूल्हा-चक्की अउर खटानी में बीत गइल, अब बेटवा राज करी, ओकर सुख देख के हमार छाती जुड़ा जाई।”

बाकिर विधाता के लिखल, के मिटा सकेला? बुला अनहोनी के कवनो ठेकान ना होला। एक दिन आजी के अइसन कड़ा बोखार चढ़ल कि उतरे के नावे ना लेबे। वैद्य-डाक्टर सब फेल हो गइलन जा अउर एगो भुजंग लेखा राति के आजी धुरन बाबा के हाथ छोड़ा के दूसरा दुनिया में चल गइली।

घर के अंगना अइसन सून भइल जइसे कवनो ऊसर धरती। चूल्हा के आँच ठंडा पर गइल। धुरन बाबा अक्सरहा राति के छत प जाके अन्हार आसमान

में ताकत रहस अउर बुदबुदा के कहस,

“कहाँ चलि गइलू हो सुरसती...जिनगी में चकाचौंध तऽ आ गइल, बाकिर सुख उठावे के बेरा में तू हाथ छोड़ा गइलू!

अब हम अपने मन के बतिया केकरा से बतिआइब? सोनवा के कंगनवा अब केकरा के पेन्हाइब?”

अब धुरन बाबा के जिनगी के एक्के गो सहारा रहे, उनकर बेटा आदित।

बाबा सोचस कि बेटा सेयान हो गइल बाड़ें, पतोह आ जाई त घर में दीया बाती होखे लागी फेर से मंगल गीत गूंजी, पोता-पोती गोदी में खेलिहें... ओही में जिनगी के बाकी दिन कट जाई।

इहे सोच के, एक दिन बाबा वकालत खाना गइलन अउर बिना कुछ आगा-पीछा सोचले, आपन दोकान, शहर के मकान जमीन-जायदाद, सब कुछ आदित के नामे लिख देहलन।

‘लऽ बेटा, अब तू ही सब कुछ देखभाल करऽ।’

शुरू में तऽ दिन बड़ा नींके से कटल। आदित पढ़ल-लिखल रहलें, ऊ दोकान के रूप-रंग बदल दिहलन।

फैंसी काउंटर बन गइल, एसी लग गइल, मिठाई के डिब्बा मखमली हो गइल। बजार के लोग देख के गुम हो जात रहलें,

“देखऽ भइया लोग, बाप के पसीना के कमाई के बेटा कइसन चार चाँद लगा देले बा!”

धुरन बाबा ई सुन के गर्व से फूल जात रहलन आ उनकर छाती छप्पन इंच के हो जात रहें।

बाकिर ई सुख भी बस ओतने दिन रहे, जेतना दिन बाती संगे तेल रहेला।

एक दिन बाबा के मन भइल कि तनी आपन पुरान गद्दी पर जाके बइठे के। ऊ आदित से बोललन,

“बेटा हो, आज कतना दिन हो गइल, हमहूँ तनी दुकान चलतीं, ओही बहाने पुरान संगी-साथी से राम-राम भी हो जाइत।”

आदित बनावटी हँसी हँसत बोलल,

“अरे बाबूजी! अब रउरा बुढ़ा गइलीं, अब ओहिजा जा के का करब? अब आप घरहीं रह के आराम करीं आ राम नाम जपत रहीं... ई सब अब ‘हमार’ काम बा, हम देखब नू।”

ऊ ‘हमार’ शब्द धुरन बाबा के कान में पिघलल सीसा नियर धस गइल। करेजा के भीतरी जइसे कुछू दरक गइल होखे।

धीरे-धीरे घर के रंग-ढंग बदले लागल। सहर के पढ़ल-लिखल पतोह नेहा घर में कइ गो नया नियम-कानून लगा दिहली।

धुरन बाबा के कमरा जे पहिले अँगना के सोझा रहे, ऊ घसका के सबसे

पीछे, जहाँ पुरान कबाड़ अउर बोरा-बखरी रखात रहे, ओहिजा क दिहल गइल। बइठका में बाबा के आना-जाना लगभग बंद हो गइल।

एक दिन घर में सहर के बड़-बड़ व्यापारी अउर नेहा के नइहर के लोग आइल रहलन। धुरन बाबा आदत के मुताबिक हाथ में लोटा ले के बाहर निकललन, तऽ नेहा उनकरा के टोक दिहली। बाद में अकेले में आदित के सामने ही कड़क के बोललली,

“बाबूजी, जब घर में कोई वीआईपी मेहमान आवे, तऽ आप थोड़ा अंदर ही रहल करीं। रउरा ऊ लोग भिरी उहे पुरान देहाती बात, ठेला-खोमचा के किस्सा बतियावे लागत बानीं, जेकरा चलते हमनीं के बेइज्जती हो जाता, हमार किटी पार्टी वाली सहेली कुल राउर बात बतिया के हमार मजाक उड़ावेली लोग।”

धुरन बाबा सन्न रह गइलन, बुझाइल जे आँखि के सोझा अन्हरिया छा गइल होखे!

ऊ आदित के मुँह जोहत रह गइलन कि बेटा कुछ बोलिहें, बाकिर बबुआ त महटिया के मोबाइल में आँख गड़वले चुपचाप चाह पीयत रहलन, जइसे ओकरा कान में कवनो आवाजे ना गइल होखे।

बाबा कुछ ना बोललन, बस काँपत हाथ से आपन गमछा उठवलन अउर मुँह पोंछत भीतरी अपना कमरा में चल गइलन।

अब तऽ रोज के नियम हो गइल रहे। अपमान के छोटे-छोट इकड़ी बाबा के करेजा प रोज मारल जात रहे।

मेहमान आवस तऽ बाबा के कोठरी के केवाड़ी बहरी से सटा दिहल जात रहे। कबहूँ भूल-चूक से बाबा बाहर निकलियो जासं, तऽ पतोह राम तिरछिया के अइसन घूरस, जइसे कवनो अनेरिया।

“बाबू जी भीतरी जाईं...”

धुरन बाबा भीतरी बइठ के सोचस कि का ई उहे घर ह, जेकरे नीउ के एक-एक ईंटा अपनी हथेली के फफोला के परवाह कइले बिना जोड़ले रहुअन, आज ऊ अपनहीं घर के छाँह में अजनबी, पराया अउर फालतू सामान हो गइल बाड़ें।

राति खानि जब झिंगुर बोले लागे आ धरती के करेजा प सन्नाटा पसर जात रहे, तऽ बाबा अपनी पुरान संदूक से आजी के फोटो निकाल के आ करेजा से लगा के खूब रोवस आ सिसक के कहस,

“देखत बाड़ न... तू तऽ कहत रहलू कि बेटवा रोज कराई। आज तोहार ई सुंदर घर में हम कइसन अनाथ अउर पराया हो गइनीं... हमार तऽ हरदी-चूना, मान-गुमान सभे कुछ बाढ़ के पानी नियर दह गइल हो सुरसती।”

बाकिर कोठरी के दिवारन के सिवाय ई रोआई सुने वाला केहू ना रहे।

एक दिन साँझि खा घर में दावत के तइयारी चलत रहे , जिला के अमीरजादा अउर नेता लोग दुकान के नया ब्रांच के उद्घाटन के सिलसिला में घरे आवेवाला रहलन।

धुरन बाबा दू तीन बेर अपना कोठरी से बहरी आ के नोकर चाकर से दावत के बारे में थाह पता लेत रहुअन तले पतोह धमक के ओजुग आ गइली,

“बाबूजी, आज सहर के सबसे बड़ लोग आ रहल बाड़ें, रउरा भुला के भी बहरी मत निकलब। अउरी हँ, आपन ई पुरान खोंखी के भी तनिक रोकले रहब ना त लोग पूछे लागी रउरा बारे में। हम चाहत बानीं कि आज राउर मेहनत के पुराण ना चले बलुक आज आदित के तरक्की के ही बखान होखे दीहल जाउ।

ई सुनके धुरन बाबा के बहुत धक्का लागल। ऊ त सबकुछ आदित प कुरबान क दिहलें, फेर अइसन बचन!!

भीतरी जवन एगो ममता के डोर बचल रहल, ऊ कड़ाक क के टूट गइल। अबकी बेर उनकरा के रोवाई ना बरल, काहे से कि आँख के लोर सुखा गइल रहे। भीतरी के स्वाभिमान, जवन ठेला चलावत घरी भी कभी ना झुकल रहे, ऊ आज जाग गइल रहे।

अगिला दिन भोर में, जब सब केहू सुतल ही रहे, धुरन बाबा कवनो हो-हल्ला ना कइलन। ना कवनो गेग-झगड़ा, ना कवनो बखेड़ा। ऊ आपन उहे पुरान छोटन स्टील के सनूक में दू चार गो कपड़ा आ आजी के फ़ोटो ध के घर से निकल गइलें आ गाँवें वाला घर में जा के रहे लगलन।

घर छोड़त घरी, ओही चमचमात काँच के टेबल प एगो पन्ना प काँपत हाथ से चिट्ठी छोड़ गइलन,

“बेटा आदित

सदा खुश आ उजियार रहिहऽ। सब कुछ तोहरा नावें क देहनीं... अब हमार ई देह के सिवा कुछु नइखे बचल। सोचले रहलीं कि तोहरा साथे बुढ़ापा काटब, पोता के खेलाइब... पर हम देहाती, गँवार आदमी, हमसे गलती हो गइल कि हम तोहार हाई-फाई दुनिया ना समझ बूझ पइनीं। गाँवें के घर आ चार पाँच बीघा खेत अभी ले आबाद बा, हम ओजुगे जा तानीं, बाकी के बचल जिनगी काटे... खुश रहिहऽ।

तोहार बाबू जी

जब आदित के नींन खुलल, तऽ चिट्ठी देख के ओकर माथा ठनक गइल। बाकिर ओकर मेहरारू समझा बुझा के चुप करा दिहलस कि हवा-पानी बदलला से बाबूजी के गाँव में मन लागी, रउरा उनकर चिंता फिकिर छोड़ के अपना काम प धेयान दिहीं।

क गो पतझड़ बीत गइल बाकिर बाप बेटा के देखा दरसन ना भइल। बेटा के कबो मन का भइल बाबूजी के हाल पता पूछे के आ धुरन बाबा के स्वाभिमान चोटिल भइल रहे त बेटा भिरी जाए के ऊ अब सपनो में ना सोचत रहलें।

बाप बेटा के अलगाव के पाँच साल बाद ओह जिला में फेर से मेला लागल

आ अबकी बार भी आदित आ उनकरा मेहरारू के पूरा जोर-शोर से उमेद रहे कि अबकी भी मेला में सबसे बढ़िया मिष्ठान भंडार के पुरस्कार उनकरे के मिली।

जूरी टीम स्टेज प आ गइल रहले, सबकर धुकधुकी बन्हाइल रहे कि केकर नाँव एनाउंस होखी। जिला पार्षद माइक प नाँव गोहरवलें, " एह जिला में सात साल तक शुक्ला मिष्ठान भंडार के केहू टक्कर ना ले पावल, बाकिर पिछला आठ महीना से सरस्वती मिष्ठान भंडार के पपड़ी आ इमरती के स्वाद के टक्कर अभी लें केहू ना ले पावल!

त अबकी बार के पुरस्कार सरस्वती मिष्ठान भंडार के मालिक ध्रुव नारायण शुक्ला जी के मिलत बा। नाम सुनते ओजुग ठाढ़ भीड़ के टकटकी स्टेज प अटक गइल रहे...

सिल्क के धोती कुर्ता अउर सुनहला फ्रेम के चश्मा आ बाँया हाथ में सुरसती आजी के फोटो सीना लगे जतले धुरन बाबा स्टेज पर आ गइलें...ताली के गड़गड़ाहट गूँजत रहे, ओह भीड़ में दू जोड़ी लजाइल आँख भी धुरन बाबा के लेउकल रहे बाकिर अबकी ऊ तनिको डगमगइले ना।

एक हाथ में आजी के फोटो आ दुसरका हाथे पुरस्कार के धइले फोटो घिंचवावत रहुअन आ पत्रकार लोगन के इन्टरव्यू भी देत रहुअन।

◆ ◆ ◆

बिम्मी कुंवर
धुबरी, असम

सँझवति

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

सूरुज देव पच्छिम के ओरि डूबत रहलें, आसमान में ललाई खूब पसरल रहे, जइसे कवनो सुहागिन के पाँव में आलता के सनेह होखे। गाँव के हर राहि पर गइया-बछरुवन के खुरि से उड़ल धूरि, जेकरा के हमनीं 'गोधूलि' मने सँझवत कहेनीं जा, चारों ओरि साँझि धुँधुआ गइल रहे।

दुआर पर 'कपिला' गइया ठाढ़ होके रँभाववत रहे, अलगू बधारि से लवटि के अपना बछरू के नेह नेवतत रहलें। ओसार पर बइठल ईया, मुँह में राम-राम जपत जोर से हँकार परली-

'ए बेटी! साँझि हो गइल बा, तनि सँझवति देखा दऽ।'

भीतर से दस-बारह बरिस के मुसकात 'लछमी' लपकि के अइली। उनका हाथ में एगो छोट पीतर के दियरी रहे। रुई के बाती के तेल में बोर के, ऊ लरजत ओठ से कुछ गुनगुनात तुलसी स्थान पर चहुँपली। माटी के चउतरा पर दीया रखि के जइसही ऊ दियासलाई जरवली, अन्हार मुँह तोप के भागे लागल।

दादी आँख मूँद के हाथ जोड़ली अउरी धीरे से बुदबुदइली-

"हे माई! घर के अँजोर बनल रहे, बेटी-पतोह के सुहाग बचल रहे।"

लछमी दउरि के दादी के गोड़ लगली अउरी पूछली— "दादी, ई रोज संझा के दीया बारल जरूरी बा का?"

दादी ओकर माथा सुहरावत कहली "बेटी, ई खाली दीया ना ह, ई घर के मर्यादा ह। जवना घर में साँझि के 'सँझवति' ना जरेला, ओहिजा लक्ष्मी ना टिकेली।"

" आ सुनऽ, तू तऽ खुद एह घर के सँझवति हउ। जबले घर में बेटी मुसकात रहेले, अन्हार कहियो दुआर के भीतर कदम नइखे रख सकत।"

लछमी के चेहरा दीया के लव से बेसी चमके लागल। मंदिर के शंख बाजत रहे, अउरी पूरा अँगना 'सँझवत' के उजियार में डूबि गइल ।

◆ ◆ ◆

गणेश नाथ तिवारी"विनायक"
श्रीकरपुर,सिवान

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

गाँव अभी जिंदा बा

गाँव अभी जिंदा बा
शहरन के चमकीला रस्ता,
मन के देला घाव।
माटी के सोंधापन कहेला—
"लौटऽ अपना गाँव॥"

पीपर नीचे सूतल छैयाँ,
ताके दिन भर बाट।
चउपालन पर ताला लटके,
सूनी पड़ल चौहाट।

दउड़त-भागत जिनगी भीतर,
बढ़त अकेलापन।
भीड़ भरे बाजारन में भी,
मिलत कहाँ अपनापन।
आँख से बहत बा लोर ,
केकरा से कहीं आपन दुख के ओर।

मोबाइल के नीला अँजोरिया,
घर-घर पसरल आज।
बाकिर नेह के गरमाहट पर,
चढ़ गइल बा जंग-राज।
दादी वाला कथा-कहानी,
हो गइल इतिहास।
साँझ ढले ना केहू पूछे,
केकर का एहसास।

खेतन में अबहियों उगेला,
आशा के हरियाली।
मेहनत के पसीना लिखेला,
धरती पर खुशहाली।
जड़ से जुड़ल रही पीढ़ी त,
फूली संस्कृति-फूल।
माटी से जे नाता टूटे,
जिनगी हो जाला शूल।

चलऽ बचाईं नेह-नदी के,
सूखे मत दऽ धार।
गाँव अभी जिंदा बा साथी,
बाकी बा संसार॥

◆ ◆ ◆

अनीता सिद्धि
पटना बिहार

www.bhojpurisahityangan.com

नहीं आए सजनवाँ

निरेखे-निरेखे टूट जाए परनवाँ।
नहीं आए सजनवाँ॥

कबहूँ देखूं सूनी डगरिया,
कबहूँ सूना अँगनवाँ।
नहीं आए सजनवाँ॥

सावन बरसे, मनवाँ तरसे,
भरि-भरि आए रे नयनवाँ।
नहीं आए सजनवाँ॥

कबहूँ बुलाए माथे की बिंदिया,
कबहूँ बुलाए रे कँगनवाँ।
नहीं आए सजनवाँ॥

कागा बोले चढ़ के अटरिया,
देवढी से बोले रे मयनवाँ।
नहीं आए सजनवाँ॥

सूना-सूना लागे बाग-बगईचा,
सूना-सूना लागे खरिहनवाँ।
नहीं आए सजनवाँ॥

निरेखे-निरेखे टूट जाए परनवाँ।
नहीं आए सजनवाँ॥

◆ ◆ ◆

रामा कांत सिन्हा "सुजीत"
(कोलकाता)

रोपनी के बा दिन आइल

देख के बरसल बदरा के
तन मन बा हरिआइल
ए गोरी संग चल बधरिया
रोपनी के बा दिन आइल

ठेहुन भर कींचड़ में धँसल
उखड़त बीया धान के
चिटुकी भरल हरिहर रोपा
हियरा हरसावे आन के
जिनगी के ईहे त लछ बा
बचल खुचल रहे मुस्काइल
ए गोरी संग चल बधरिया
रोपनी के बा दिन आइल

कींच काँच से जनि घबड़इहऽ
धान नाहीं ई त सोना ह
माटी तन माटी बा जिनगी
ईहे त ओढ़ना बिछौना ह
लह लह लहकी सगरो धरती
हियरा झाँकी हरखाइल
ए गोरी संग चल बधरिया
रोपनी के बा दिन आइल

चले आगे बरधा, पीछे धनिया
गरबे माथ ऊँचासे भइल
जोत रोप के फसल उगहनी
दुःख के दिनवा पिछकुड़ गइल
मेहनतकश बानीं, मेहनत करीं
आन देख हम ना धधाईं
ए गोरी संग चल बधरिया
रोपनी के बा दिन आइल

ए गोरी संग चल बधरिया
रोपनी के बा दिन आइल।।

◆ ◆ ◆

डॉ. मधुबाला सिन्हा

www.bhojpurisahityangan.com

कहऽ कह दीं

दर्द के दास्तां कहऽ कह दीं।
प्रीति के फलसफा कहऽ कह दीं।।

हार में जीत अब बुझाइल बा।
भाव भींजल दशा कहऽ कह दीं।।

राग रंग छोड़ के खड़ा बाटे।
चाह लागे जवां कहऽ कह दीं।।

छोड़ के हर गली कुंची भागल।
जे रहे हमनवां कहऽ कह दीं।।

बात झगड़ा के बढ़ गइल लागे।
लूट गइल बागवां कहऽ कह दीं।।

नाच भूम्भो क अब कहाँ नाची।
बेवफा बा मुआँ कहऽ कह दीं।।

✍️ डॉ अनिल कुमार दूबे " अंशु "

◆◆◆

कर के' देखीं

हर बात बा सही तऽ, कुछ यार कर के' देखीं।
इल्ज़ाम बा, त लागी, बस प्यार कर के' देखीं।।

साथी सफर अकेले, काटे न कट सकी अब।
आगाज कुछ करी जी, इजहार कर के' देखीं।।

अंज़ाम के फिकर से, दुनिया उदास लागे।
कर लीं भरोस कर लीं,इकरार कर के' देखीं।।

शिकवा गिला क मौसम, छोड़ी फिरी जहाँ में।
आँगन गमक उठी जी, सुविचार कर के' देखीं।।

बेदाग अब कहाँ बा,रिश्ता जगत में साँचे।
रोईं न "अंशु " गायीं , मनुहार कर के' देखीं।।

◆◆◆

✍️ डॉ अनिल कुमार दूबे " अंशु "

www.bhojpurisahityangan.com

अनजान बा

का कहीं दिल प्रीति से अनजान बा।
मन जगत के रीति से अनजान बा।।

राह में तिनका बड़ा घातक मिलल।
हर कदम भवभीत से अनजान बा।।

हादसा ना पूछ के आवे कबो।
छल कपट अस मीत से अनजान बा।।

आस के पंछी उड़ावे शौक से।
हार से भा जीत से अनजान बा।।

का मिलल कतना मिलल "अंशु" कह।
बेपरद संगीत से अनजान बा।।

◆◆◆

डॉ अनिल कुमार दूबे " अंशु "
नगवां, सिवान (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी में बशीर बद्र

केकरा कहाँ कइसे मिलऽ सोचल करऽ तऽ मिलल करऽ,
पहिले मिले से तै करऽ ,मीलल करऽ ना मिलल करऽ।
केहू जो महटियावे बुझऽ, ओजेह जरूरे बा कोनो,
अइसनमें बढ़ियाँ ई रही ओरहन करऽ ,ने मिलल करऽ ।
मउसम तऽ फगुआइल एने
पिठिआ कोरोना बा देले,
बोलऽतिया "दिल आशना, महबूब आ के मिलल करऽ" ।
मौजूँ रहल, मौजूँ अभिन, 'भाइरस'
ओजेह से बा फेनू,
मसला मिलेके बा अगर, बिलमऽ तनिक तऽ मिलल करऽ ।
मकबूल बा, मशहूर बा, जेहनमें रचल बा बसल,
ई बशीर बद्र के शेर हऽ ,समुझऽ जे अब कइसे मिलऽ ?
केहू हाँथ अब मिलाइ कहाँ जे गरा मिलऽ चटाक दे
ई नया मिजाजके शहर हऽ, तनी फरकेसे अब मिलल करऽ

◆ ◆ ◆

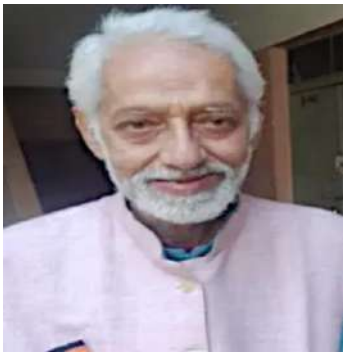

नक्कू मझव्वी

www.bhojpurisahityangan.com

बुझाते नइखे

अझुराइल जिनगी के डोर सझुराते नइखे
कवना फेरा से पहिले लड़ी बुझाते नइखे।

मन त अकुलाता कि मरी भा मार दीहीं
का करीं केहू निमना से अझुराते नइखे।

साँच कहतानी भाई निकहा फँसल बानी
बोल के बतवलो प लोग पतियाते नइखे।

ढेरे मुश्किल देखी के हम चकाइल नइखीं
परेशान बानी कि परेशानी संभराते नइखे।

परेशानी दोसर का बिगाड़ लिही विशाल
सुख भेटाते नइखे त दुख कहूँ जाते नइखे।

◆ ◆ ◆

विशाल विद्रोही

आँख उनसे लड़ल

आँख उनसे लड़ल, जेंह घड़ी ओंह घड़ी
अईसे लागल कि दुनिया ही ठप्प हो गईल
कतहूँ टूटे समय के न लय के डरे,
आँख झपकल ना पत्थर पलक हो गईल

ओंह घड़ी, ओंह पहर ना रहल हऽ ख़बर
केहू अउरो बऽ दुनिया में उनके सिवा
आँख में झाँक के सब पता चल गईल
गोर - साँवर हवे या कि रंग गेंहुआँ
होंठ के पट ना हीलल न डूलल तबों
बिन कहे बिन सुने बात तक हो गईल

बन के चिरई हवा में उड़त रहनी हम
पंख लागल रहे मन के आकाश में
आँख में सारी दुनिया समाईल रहे
चान तरई तऽ जईसे रहल हाथ में
कल्पना हम कहीं या शरारत कहीं
हमरा साथे जवन यकबयक हो गईल

नेह के गंगा साँचो नहाऽ लेहनी हम
प्रीत के गीत भी गुनगुनाऽ लेहनी हम
तीर त्रिवेणी के घाट घूमल गईल
तन-बदन पाक चंदन बनाऽ लेहनी हम
मन मलंगा भईल, प्रीत गंगा भईल
बिन रमे देव दर्शन तलक हो गईल

✍️ राम अचल पटेल

◆ ◆ ◆

साँच कहीं तऽ

साँच कहीं तऽ आँच लगेला एंह दुनिया के
झूठ से कबले काम चलाई, बोला भाई

आपन ही बेगाना जस व्यवहार करेला
ग़ैर से काऽ उम्मीद लगाई, बोला भाई

पाथर पूजे वाली दुनिया जाने कबले
पूजी आपन बाबू - माई, बोला भाई

प्रेम नाम के चिरई पाल के करबा का तू
नफ़रत के आगे टिक पाई, बोला भाई

गुड़ के पानी जड़ में डाल के सोंचा तारें
नीम के कड़वाहट चल जाई, बोला भाई

✍️ राम अचल पटेल

www.bhojpurisahityangan.com

निक दिन आवत बा

जबकि सूरज औ चाँद के छू लिहलस दुनिया
बाकी आदमी के आदमी से घिन आवत बा
का मानी, कईसे मानी, बोला ए भईया
हमके ना लागत बा की निक दिन आवत बा
ई छुआ-छूत अ जाति-धरम के बीमारी
रब ही जानें कब छूटी यार जमाने में

दिन बीत रहल बा जाने में, पहचाने में
मनई के मनई माने में!

बा लोग उहे के पूजत जे खलनायक बा
लोभी ढोंगी व मंत्री और विधायक बा
ई पीर, फ़कीर, वकील, हकीम ही ज्यादातर
माना मत माना लोग, ईहौ नालायक बा
ई पुलिस प्रशासन सब ह जनता के दुश्मन
विश्वास न होखे जाके देखा थाने में

दिन बीत रहल बा जाने में, पहचाने में
मनई के मनई माने में!

मजदूर बेचारा झुलस- झुलस के मर जाता
बढ़ती - घटती ई महंगाई के आगी में
जैसे बन पड़े उ वईसन दिन बितावत बा
मध्यम वर्गीय बा हार जीत के बाजी में
ई देश के शान किसान के हाल ही मत पूंछा
परेशान बा गेहूं चाउर और पिसाने में

दिन बीत रहल बा जाने में, पहचाने में
मनई के मनई माने में! ◆ ◆ ◆

राम अचल पटेल
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी संस्कृति के मिलल बड़ा सम्मान:

भोजपुर के पीड़िया पेंटिंग के मिलल GI टैग

आरा, 14 जून। भोजपुरी भाषा आजुओ संविधान के आठवीं अनुसूची में जगह मिले के इंतजार करत बा, बाकिर भोजपुरी संस्कृति एगो ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल कइले बा। भोजपुर के पारंपरिक पीड़िया पेंटिंग के भौगोलिक संकेतक (GI) टैग मिल गइल बा। ई खाली एगो चित्रकला शैली के मान्यता नइखे, बल्कि भोजपुरी अस्मिता, लोक परंपरा आ ओह कलाकारन के बरिसन के मेहनत के सम्मान बा, जे एह धरोहर के आज ले जिंदा रखले बाड़ें।

नाबार्ड आ बिहार सरकार के पहल से बिहार के तीन गो पारंपरिक उत्पाद आ कला शैली के GI टैग मिलल बा। एह में भोजपुर के पीड़िया पेंटिंग, नालंदा के बावन बूटी आ गया के पत्थरकट्टी शिल्पकला सामिल बा। एह तीनों में सबसे बेसी चर्चा पीड़िया पेंटिंग के हो रहल बा, काहे कि ई पहिलका मौका बा जब भोजपुरी सांस्कृतिक परंपरा से जुड़ल कवनो चित्रकला शैली के एह तरह के राष्ट्रीय पहचान मिलल बा।

सर्जना न्यास के पहल बनल आधार-

पीड़िया पेंटिंग के GI टैग दिलावे में आरा के सांस्कृतिक संस्था सर्जना न्यास के भूमिका बहुते महत्वपूर्ण रहल। लगभग एक बरिस पहिले संस्था एह कला से जुड़ल चित्र, ऐतिहासिक प्रमाण, दस्तावेज आ जरूरी जानकारी उपलब्ध करवलस, जवना से GI पंजीकरण के प्रक्रिया मजबूत भइल।

सर्जना न्यास के अध्यक्ष आ विश्व रिकॉर्डधारी वरिष्ठ चित्रकार संजीव

सिन्हा पिछला लगभग 30 बरिस से भोजपुरी पेंटिंग आ ओकर लोक शैली पर लगातार काम करत आइल बाड़ें। ऊ अपना चित्रकला के माध्यम से भोजपुरी लोकगीत, लोककथा, बियाह-सादी के संस्कार, पर्व-त्योहार, खेती-किसानी आ गाँव के जीवन के देश-विदेश ले पहुँचवले बाड़ें।

अब गाँव के दीवाल से निकल दुनिया तक पहुँची पीड़िया

भोजपुर इलाका में पीड़िया पेंटिंग सदियन से गाँव के मेहरारू लोग माटी के दीवाल पर बनावत आइल बा। ई खाली चित्र ना, बल्कि लोकजीवन के जीवंत दस्तावेज ह। एह में परिवार, रिश्तेदारी, प्रकृति, खेती-बारी, लोकदेवता आ सामाजिक जीवन के सुंदर झलक देखे के मिलेला।

GI टैग मिले के बाद अब ई कला राष्ट्रीय आ अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपना अलग पहचान बनावे खातिर तैयार बा।

बिहार के कला के मिली नया पहचान-

अबले बिहार के कला के पहचान मुख्य रूप से मधुबनी पेंटिंग से जोड़ल जात रहल। अब पीड़िया पेंटिंग, बावन बूटी आ पत्थरकट्टी शिल्पकला के भी देश-दुनिया में नया पहचान मिली।

नालंदा के बावन बूटी हाथकरघा पर बनल एगो अनोखा वस्त्र कला ह, जबकि गया के पत्थरकट्टी शिल्पकला अपना बारीक नक्काशी आ काला ग्रेनाइट पत्थर से बनल मूर्ति खातिर प्रसिद्ध बा।

कलाकारन के खुली रोजगार के नया राह-

विशेषज्ञन के मानल बा कि GI टैग मिले के बाद पीड़िया पेंटिंग से जुड़ल कलाकारन, खास करके गाँव के मेहरारू आ लोक चित्रकारन खातिर रोजगार आ आमदनी के नया अवसर पैदा होई। एह से कला के संरक्षण होई, बाजार बढ़ी आ स्थानीय अर्थव्यवस्था के मजबूती मिली। ई उपलब्धि 'वोकल फॉर लोकल' आ 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के भी मजबूती दी।

GI टैग कवनो उत्पाद के विशिष्टता, गुणवत्ता आ भौगोलिक पहचान के कानूनी सुरक्षा देला। एह टैग के पंजीकरण चेन्नई स्थित भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्री द्वारा कइल जाला।

संजीव सिन्हा कहलें— "ई शुरुआत बा, मंजिल नइखे"

सर्जना न्यास के अध्यक्ष वरिष्ठ चित्रकार संजीव सिन्हा कहलें कि GI टैग मिलल निश्चय ही एगो बड़ा उपलब्धि बा, बाकिर असली चुनौती अब शुरू भइल बा। अब जरूरत बा कि पीड़िया पेंटिंग के देश-दुनिया के बाजार तक पहुँचावल जाव, कलाकारन के प्रशिक्षण दिहल जाव आ नया पीढ़ी के एह कला से जोड़ल जाव।

ऊ बतवलें कि GI पंजीकरण लंबा कानूनी प्रक्रिया ह। सर्जना न्यास पिछला साल एह खातिर आवेदन कइले रहल। कई स्तर पर जाँच, दस्तावेजी सत्यापन आ सुनवाई के बाद ई सफलता मिलल।

एह उपलब्धि के श्रेय ऊ नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक गौतम कुमार सिंह, भोजपुर के पूर्व जिला विकास प्रबंधक रंजीत सिन्हा, वाराणसी के Human Welfare Association (HWA) के महासचिव पद्मश्री डॉ. रजनीकांत, आ सर्जना न्यास से जुड़ल सभे कलाकार, सहयोगी आ शुभचिंतकन के दिहलें।

ऊ कहलें, "GI पंजीकरण खाली कानूनी सुरक्षा ना देला, बल्कि कवनो उत्पाद के राष्ट्रीय आ अंतरराष्ट्रीय बाजार में मजबूत पहचान भी दिलावेला। ई बिहार के सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण आ हजारों कलाकारन के आजीविका मजबूत करे के दिशा में एगो ऐतिहासिक कदम बा।"

भोजपुरी भाषा के भले अबहियों संवैधानिक मान्यता के इंतजार बा, बाकिर पीड़िया पेंटिंग के मिलल GI टैग ई साबित कर देले बा कि भोजपुरी संस्कृति के जड़ बहुते गहिर, समृद्ध आ विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण बा। ई सफलता खाली भोजपुर के ना, बल्कि पूरा भोजपुरिया समाज के सांस्कृतिक जीत ह।

◆ ◆ ◆

ओ.पी. पाण्डेय

जेठ के गरमी

आज भइल बरखा तनी
घटल आज अब ताव,
पनरह दिन से घाम ई
देत रहल हऽ घाव ।

जीव जंतु बेकल रहे
डोलत रहे न पात,
जेठ हेठ मामर करे
जेठ कहेला बात ।

धरती के काया खिलल
भइलें मगन किसान,
बिहने ले लागत रहे
जेठे ले ली जान ।

हमहूँ पगरी माथ पर
धइनीं कान्ह कुदार,
पानी बान्हे हम चलीं
काहे के तकरार ।

बेरहिन, आलूदम बनी
संगे दूध के खीर,
एक कटोरी गाद बा
हरी देह के पीर ।

भर दिन एक्को काम ना
पूरा करब अराम,
हफ्ता में जे ना भइल
सगरी होई काम ।

◆ ◆ ◆

उमेश चौबे "अश्क"
नगर पंचायत
कटेया गोपालगंज

उड़ल जाला बदरा

काहें गाँवें से हमरा उड़ेला बदरा
काहे गाँवे से हमरा उड़ेला बदरा
गोरी भोरहीं से बइठल लगा के असरा
काहें गाँवें से हमरा उड़ेला बदरा?

पिया पिया अमवाँ प बोले कोइलिया
गुड़ि जाला तीर जस पपिहा के बोलिया
बाटे परसों से काहें बेकल जियरा
काहें गाँवें से हमरा उड़ेला बदरा?

बरसी ना बदरा बढ़ऽता परशानी
उड़ि उड़ि जाला करेला मनमानी
संग बिजुरी घुमावेला करेला नखरा
काहें गाँवें से हमरा उड़ेला बदरा?

सजना बेदरदी दुकाहें भुलइलें
सगरे सिंगार छोड़ि सावन में गइलें
नाहीं अइहें त कइसन रोहिन अदरा
काहें गाँवें से हमरा उड़ेला बदरा?

कहिए से सहऽतानीं साँसति सजनवाँ
एकहीं "उमेश" बिना लागे ना मनवाँ
बरसित सावन त हरियर सियइतीं घघरा
काहें गाँवें से हमरा उड़ेला बदरा?

◆ ◆ ◆

प्रायश्चित

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

कौनो बाप महतारी का अपनी बेटा बेटी के चाँद पर स्थापित करे से कम के सपना ना होला। अपनी सपना के पूरा करे खातिर हर बाप महतारी आपन सर्वस्व नेवछावर करे खातिर तैयार रहे ले। लेकिन ईश्वर के विधानो तऽ कुछू होला, जौन चुपचाप आपन काम करत रहेला। रूही के पापा जगदीशजी के भी आथि अलम तऽ कौनो बेसी ना रहे, लेकिन सपना आसमानों से भी ऊंच रहे। गांव में दू चार बीघा बपहस जमीन रहे, ओही में खून पसीना ढारसु अउरी परिवार के गाड़ी खींचसु। लेकिन सपना ई कि हम भले कुछ ना कऽ पवनी, लेकिन लइकन के बेरोजगार ना रहे देब। चाहें देंह बेंचि देबे के पड़े, लेकिन लइकन के खूब पढ़ाएब, अउरी कुछ ना कुछ बनाइए के दम लेबि। खेत बेंचि के शहर में मकान बनववले कि लइका कुलि जब बड़हन होइहें तऽ उहाँ रहि के पढ़िहें सन। जेठ बेटा म दन, जब गाँव की स्कूल से इंटर पास हो गइले तऽ मेहरारू सुधा तीनू लइकन के लिहले शहर चलि अइली। अब परिवार शहर में अउरी ऊ अकेले गांव में मेहनत मजूरी कऽ के बेचारु परिवार के खर्चा पानी अउरी लइकन के पढ़ाई लिखाई के खर्चा चलावसु।

भगवान की कृपा से उनके तीनू लइका लइकी पढ़े में होनहार रहले सन। मन लगा के पढ़े सन। बड़का बेटा मदन बीए कइला की बाद विश्वविद्यालय से ही एम ए करत रहले। उनके इच्छा नेट क्वालीफाई कऽ के प्रोफेसर बने के रहे। एकरा खातिर जी जान से पढ़ाई में जुटल रहसु। उनका से छोट बेटी रूही भी पढ़े में ठीक रहली। हाई स्कूल से

www.bhojpurisahityangan.com

लेके इंटर, बीए सेकंड ईयर तक आल राउंड फर्स्ट डिवीजन से पास कइली। आगे उनहू के इच्छा पढ़ि के कुछ बने के रहे। खूबसूरती तऽ एतना कि देखि के इंद्रासन के परी भी लजा जासु। लम्बा छरहरा गोर दगदग बदन पर गोल मटोल मुंह। होंठ पर मुसुकिया हंसी, बड़े बड़े आँखि से निकलत बिजली की तरे ज्योति, कमल की अमृत चासनी में डुबावल गुलाब की पंखुड़ जइसन लरजत होंठ, नुकीला नाक देखते लोग मोहि जाउ।

कालेज के उनके सबसे चहेता दोस्त रहली सानिया।सानिया भी राजनीति शास्त्र से ग्रेजुएशन करत रहली अउरी बीए लास्ट ईयर के छात्रा रहली। लेकिन सानिया जहाँ पइसगर बाप के बेटी रहली, उहें रूही एगो छोटमोट गृहस्थ के। सानिया के बाप महतारी दुनू जने नौकरी में रहे लोग, एही से ओ लोग की लगे पइसा के कौनो कमी ना रहे। कॉलेज में उनके परफॉरमेंस भी ठीक रहे। सानिया बहुत होशियार अउरी बेबाक लड़की रहली, दोस्ती के धर्म निभावे वाली। रूही के बड़ी मानसु। क्लास में दुनू जानी एके लगे बइठे लोग, कालेज में एके साथे रहे लोग, घूमे लोग। यदि कहीं जाहूं के होखे तऽ एके साथे जाउ लोग।

दू बरिस ले तऽ सगरी ठीके ठाक रहे, लेकिन तीसरा बरिस में सानिया का रूही में कुछ बदलाव लउके लागल। लजाइल, शर्माइल, शौक सिंगार सब बढ़ि गइल। सानिया से दूरी भी बनावे लगली। खाली पीरियड में अधिकांश समय मोबाइल से बतियावते बीते। ई कुलि देखि के सानिया का सन्देह होखे, पूछे के कबो मनो कुलबुलाउ, लेकिन जरूरत ना जान पड़े। एही से ना पूछसु। लेकिन तीन चार दिन बाद, जब सन्देह एकदम हिलोरा मारे लागल तऽ पूछे से अपना के रोकि ना पवली।

"पहिले तऽ मोबाइल से एतना ना बतियावत रहलू हऽ। लेकिन अब बुझाता कि कुछू दाल में काला जरूर बा?" सुनि के रूही शर्माए लगली।

"अई,, देखऽ तऽ? बा नू काला।" कहत सानिया उनके रिगावे लगली। फेरु तऽ, रूही भी आपन मित्र धर्म निभवली अउरी सब कुछ साँच साँच उनसे बता देहली कि,

"आदित्य सेठ की बेटा रवि बाबू का हमसे प्यार हो गइल बा।" सुनि के सानिया के आँखि फैल गइल अउरी लगली समझावे,

"रूही, लेकिन पढ़े खातिर न शहर में आइल बाड़ू?"

"हंऽ, लेकिन एइसे हमरी पढ़ाई पर कौनो असर ना पड़ी। हम पढ़ि के जरूर कुछ बनब।" रुही कहली,

"लेकिन तोहार मम्मी इ कुलि बाति जानऽ ताड़ी?"

"ना!"

"तब तोहार प्यार कौनी काम के बा? प्यार मुहब्बत गुड्डा गुड्डी के खेल ना हऽ, कि केहू आ के कहल 'आई लव यू' अउरी तूहूँ झट से कहि देहलू 'आई लव यू टू'। इ खेला लड़िका लड़की की जिन्दगी के जरुरी खेला हऽ। लेकिन बियाह की बाद ही शुरू होला। जौन बियाह बाप महतारी की रजामंन्दी से होला ओइमें धोखा के चांस कम होला। तहरा ई कुल बाति बाप महतारी से बता देबे के चाहीं।" सानिया समझवली।

"धत पगली, बाप महत्तारी से कइसे बताएब रे।" कहि के रूही हंसे लगली,

"लेकिन जहिया इ बात खुली, तहिया का होई ?"

"का जाने का होई? तहिया के तहिया देखल जाई!"

"वाह रे रूही! तूँ तऽ मैदान में उतरते छक्का मारि देहलू। पटियइबो कइलू तऽ शहर की सबसे अमीर की बेटा के।" सुनि के रूही हंसत दुनू हथेली से मुंह तोपि के शर्मा गइली। उनके हंसल देखि के सानिया चिढ गइली, "लेकिन हंसऽ जनि, हमार बाति सुनि लऽ। पइसगर के औलाद बिगड़ेल होले सन। ओकनी की नजर में तोहार औकात, कौनो कीड़ा मकोड़ा से अधिका नइखे। चाय पी के तहरा के रोड पर ओ तरे फेंक दी, कि जमाना की जूता की ठोकर पर तोहार जिन्दगी ढिमलाए लागी।"

"कुछू ना होई, ऊ हमके एतना चाहऽ ताड़े कि हमसे बियाह कऽ लिहें।"

"ठीक बा! त कऽ लेसु पहिलहीं ! यदि बाप माई से ना कहबू त ओकरे से कोर्ट मैरेज करे के कहऽ?"

"अबे ना कहब।"

"कहिया कहबू? जब सगरी लुटा लेबू तब?" सानिया रिसिया के कहली,

"ना रे! अगुतइले काम ना चली। शान्ति से हमके सोचे दऽ कि हमरा का करे के चाहीं?"

"तहरा कुछ ना करे के चाहीं, तहरा ई कुलि सगरी बात अपनी बाप महतारी से बता देबे के चाहीं।"

अबे इ कुल बात चलते रहे, तले घंटी लागि गइल अउरी दुनू जानी क्लास में चलि गइल लोग। लेकिन ओइदिन से सानिया परेशान, कि रूही गलत रास्ता पर जा रहल बाड़ी। उनके हावभाव, तौर तरीका अउरी सिंगार पटार देखि के सानिया का बाउर लागे। रोजे उनके समझावसु कि तहार रास्ता ठीक नइखे, तहरा अपनी पढ़ाई पर ध्यान देबे के चाहीं। लेकिन उनके समझावल शायद रूही का ठीक ना लागे। कुछ दिन बाद ऊ उनसे दूरी बनावे लगली अउरी ओकरी बाद ओ लोग में आम दरफ भी कम हो गइल। रुही सानिया से एकदम कटि गइली। लेकिन तब्बो जब्बे सानिया विद्यालय जासु एक नजर रूही पर जरूर डारसु, कि आइल बाड़ी कि ना?

आठ दस रोज बाद ओइदिनो जब सानिया कॉलेज अइली तऽ क्लास में चारु ओर नजर दउरवली। लेकिन रूही कहीं नजर ना अइली। "हो सके कि आजु कौनो काम पड़ि गइल होखे।" सोचत चुपचाप क्लास में बइठि गइली। क्लास शुरू भइल। लेकिन दूसरी घंटी बाद रूही हताश, उदास, देखला पर बुझाउ कि रोवलहु बाड़ी, अकस्मात आ के क्लास में सानिया की लगे बइठली। देखि के सानिया का सन्देह भइल, पुछबो कइली लेकिन रुही कुछ ना बतवली। अपनी आप में गुमसुम बइठल रहली। बुझाउ कि कौनो विपत के मारल होखें, होसे हवास ना। क्लास में बइठल तऽ रहली लेकिन मन कहीं दूसरा जगह उड़त रहे। लेक्चर पर भी उनके ध्यान स्थिर न रहे। उसके स्थिति देखि के सानिया की मन में बार बार ख्याल आवे, कि कुछ गड़बड़ त जरूर बा। ना तऽ आजु ले ए हालत में ई कहियो ना लउकत रहली हऽ? लेकिन बार बार पूछलो तऽ मुनासिब ना रहे।

स्कूल ओवर भइला पर जब

www.bhojpurisahityangan.com

सगरी छात्र घूरे जाए लगले, तऽ रूही डेराइल, रूआँसा मुंह बनवले सानिया से कहली, "हमरा के हमरी घर ले पहुंचा देबू का?" सुनि के सानिया हैरान होके उनकी ओर लगली ताके,

"काहें?" लेकिन रुही की लगे जवाब कहां रहे? मुड़ी गड़वले रोवे लगली। देखि के छन भर में ही कई गो बाति सानिया की दिमाग में नाचि गइल। आज ढाई बरिस के दिन बीत गइल साथे पढ़त, लेकिन आजु ले ई ए तरे कहियो ना कहली। आजु का बाति बा? जरूर कौनो ना कौनो बाति बा। तरह तरह के बात, तरह तरह के विचार मन में उठे लागल अउरी उनकी मुंह पर नजर गड़ा के आश्चर्य से उनके देखे लगली।

लेकिन शायद उनसे नजर मिलावे के भी रूही में हिम्मत ना रहे। देखि के सानिया का बुझा गइल कि कुछ गड़बड़ बा। उनकी कान्ह पर हाथ धऽ के अपनापन देखावत ढाढ़स बन्हावे लगली। "इ का रे? तें रोवऽ ताड़े?" लेकिन रूही कुछ ना बोलली। आँसू बहावत चुपचाप ठाड़ रहली। तरह तरह के प्रश्नो भइल, लेकिन एको के जवाब उ ना देहली। अन्त में सानिया उनके बांहि धइले कैंटीन में ले गइली और चाय की साथे बाति होखे लागल। सच में रूही के सच भयानक रहे।

डंहको पंहको रोवत कहे लगली, "आज हम आपन सबकुछ लुटा देहनी, सखी। आपन आबरू,, माई के विश्वास, पापा के सपना, सबकुछ लुटा देहनी। अपनी मुंह में हम करिखा पोतवा लेहनी। सपनो में ना सोचले रहनी हंऽ, कि ऊ हमरी साथे ए तरे करी।"

"लेकिन भइल हऽ का रे?" सानिया की पूछते रोवत सगरी बता गइली। सुनि के सानिया हैरान रहि गइली अउरी आश्चर्य से उनके देखत पूछली,

"अपनी माई बाप के फोन कइलू हऽ कि ना?" सुनि के रूही "ना" में मुड़ी हिला दिहली,

"काहें? तहरा अपनी गार्जियन से ई कुल बतावे के चाहीं। हमार चाहें तोहार, केहू के सबसे हितैषी माइए बाप न बा। छिपवले रोग बढ़ेला। समस्या के हल गार्जियने निकाली। हम तऽ तहके ओइदिने कहनीं, कि शादी से पहिले जौन लड़की मर्द जाति पर विश्वास करी, उ खंता में गिरी। लेकिन तहरी नजर पर पर्दा पड़ल रहे। तूँ जौन नादानी कइलू ओके फल तूँ पा गइलू। अब एतने जानऽ कि कुछ बने के तहार सपना खतम। सारा ज़िन्दगी अब तहरा बदनामिए में गुजारे के पड़ी ।"

"ना सानिया, अइसन जनि कहऽ। तूँ हमार सच्चा सहेली हउ। कौनो रास्ता बतावऽ, जौना से हमार जिनगी ख़राब ना होखे? माई के बताएब तऽ उ टूट जइहें।"

"अउरी ना बतइबू, तऽ तूँ डूब जइबू।"सानिया कहली

"तऽ का करीं ?" कहत में डर की मारे रुही के हलक सुखि गइल अउरी हताश होके सानिया के मुंह ताके लगली।

"करबू का? अपनी सफलता के रास्ता तूँ खुदे बन्द कऽ लिहलू। अब अपनी पापा से बोलऽ, कि ऊ आदित्य सेठ से बात करसु। आदित्य सेठ, शहर के बड़हन आदमी हउवें, बदनामी की डर से हो सके कि ऊ बेटा से तहार शादी कऽ दिहें। अब

कुछ बने के अरमान छोड़ि के आपन घर संसार बनावऽ, बच्चा पैदा करऽ, परिवार बसावऽ। तहार जिन्दगी अब एतने ले रही।" सुनि के रूही हताश हो गइली।

"ना, हम इ सब छुपा ले जाएब। अइसन जानब कि उ कौनो डरावना सपना रहे, जौन खतम हो गइल। अबसे खाली अपनी पढ़ाई पर ध्यान देब अउरी कुछ बनि के तहके देखाएब।"

"ठीक बा! भगवान करसु कि तोहार सपना पूरा होखो। लेकिन अब ई संभव नइखे। एइसे कि अब ए खुराफ़ात में किरदार कई गो हो गइल होइहें। ऊ कुल छुपे दिहें तब नू छुपा ले जइबू ?"

"कुछ ना होई, हम अपनी पापा के अरमान टूटे ना देब। हम कुछ बनि के देखाएब!" कहत रूही उठ के खड़ा हो गइली, "एगो काम करिह, ई अध्याय अब एहिजा बन्द। एगो हम जानऽ तानी अउरी दूसर तूँ। तीसर केहू नाहीं जानि पावे ।" कहत उठली अउरी चल दिहली। सानिया भी पीछे पीछे बस स्टैंड ले अइली, लेकिन रूही अकेले ही बस में बइठि के चल दिहली।

ओकरी बाद तीन चार दिन ले ऊ कॉलेजो ना अइली। लेकिन पांचवा दिन जब अइली तऽ पहिले से ठीक रहली। एकदम सामान्य तऽ ना, लेकिन ओइ दिन से ठीक रहली। खाली पीरियड में दुनू सहेली लोग पार्क में बइठि के बतियावत रहे लोग। बाति चलल तऽ रूही लगली कहे, कि "ओकरी जाल से अब निकल गइल बानी।"

"काहें? उहो तहरी लगे फोन ना करेला?" सानिया पूछली।

"करेला। रोज तीन बेर, चार बेर ओकर फोन आवेला, लेकिन हम उठइबे ना करीले। ओकर नम्बर भी अब ब्लॉक कऽ दिहले बानी।"

"लेकिन दूसरी नम्बर से भी ऊ कऽ सकेला?" सानिया कहली,

"करबे करेला! नंबर बदल बदल के करेला। लेकिन ओकर आवाज चिन्हाते उहो नम्बर ब्लॉक कऽ दिले। बीसो गो नम्बर ब्लॉक कऽ भइल बानी। अब एतने जानि लऽ कि ई कौनो आन्ही रहल हऽ, जौन गुज़रि गइल। अब हम मन लगा के पढ़ेब अउरी पढ़ि के कुछ बनेब। एकरी सिवाय अब हमार कौनो उद्देश्य नइखे।" उनके आत्म विश्वास देखि के सानिया भी खुश हो गइली।

लेकिन अबे दुनू जानी बइठि के बतियावते रहे लोग तले रूही के मोबाइल बाजे लागल। मोबाइल उठा के देखली, तऽ नया नंबर रहे, कांटेक्ट लिस्ट से बाहर के। रिसीव कऽ के काने से लगवली, तऽ ओने से हेलो के आवाज सुनते पहिचान गइली। मोबाइल जमीन पर फेंकि के सानिया से कहली, "उहे हऽ, रवि!"

"आदित्य सेठ के बेटा?" सानिया पूछली,

"हाँ रे ! आदित्य सेठ के बेटा !"

"तऽ एतना डेरात काहें बाड़े? खूब धमका के बतियाउ ।"

"का बतियाईं रे, ओ नीच से ?"

"जौने मुंह में आवे तौने बोल। ओके डेरवइबू ना तऽ ऊ हमेशा तहके परेशान करत रही। आवाज खोलि के बतियाउ, हमहू सुनीं, का कहऽता।" सानिया की कहला पर रूही फोन उठवली। फोन उठते ओने से आवाज आइल,

"कहाँ बाड़ रूही? तीन दिन से ट्राई करऽतानी, लेकिन फोन नइखू उठावत, काहें ?"

"काहे खातिर फोन करऽताड़? आजु से हमके फोन फान मत करिहऽ। ना तऽ ठीक ना होई।"

"काहें ?"

"तूँ हमरी साथे धोखा कइलऽ। प्यार में जबरदस्ती के कौनो जगह ना होला। लेकिन तूँ हमरी साथे जबरदस्ती कइलऽ। प्यार के बदनाम कइलऽ। अब तहरा पर से हमार विश्वास उठि गइल बा। अब फोन कबो मति करिहऽ!" सुनि के रवि उनके समझावे लागल,

"लेकिन यदि आसानी से तूँ हमार बाति मानि गइल रहितू तऽ हमरा जबरदस्ती कइला के जरूरत का रहे? जब ना मनलू तब तऽ जबरदस्ती करे के पड़ल।" सुनते रूही रिसिया गइली,

"काहें मानि लीं? तहसे हमार बियाह भइल बा का? कि तहार बाति मानि लीं।"

"ठीक बा। कॉलेज से आवत में हमसे मिलऽ। चाहें जहां कहऽ, तहां आ जा तानी। तहसे माफी मांगि लेब!"

"कौनो जरूरत नइखे, माफी मंगला के। अब हमार तोहार प्यार के संबंध खतम। यदि तहरा माफी मांगे के होखे तऽ अपनी बाप की साथे हमरी घरे आ के माफी मांगऽ।"

"इ संभव नइखे।"

"संभव नइखे तऽ बन्द करऽ आपन इ कुलि शोषन करे के तरीका। ना तऽ शुद्ध मन से आवऽ, पहिले हमसे शादी करऽ, तब जौन कहबऽ तौन करेब।" रूही डांटत कहली। उनके बाति सुनि के रवि के भी बड़प्पन के खुमार जागि गइल,

"ई कइसे होई ? हम अरबपति बाप का बेटा हईं अउरी तूँ एगो छोट मोट किसान के बेटी! सउदा बराबरी के होला। हाँ, हम तहरी खूबसूरती के कायल बानी, तऽ आपन दाम बोलऽ ।"

"तहरी बाप के समूचा हैशियत। हंऽ, तहरी बाप की समूचा हैशियत बराबर दाम बा, हमार।" रूही रिसिया के बोलली,

'ठीक बा। तऽ बेंचत रहऽ अपना के बाजार में। लेकिन कान खोलि के सुनि लऽ, ओइदिन वाला प्यार के समूचा विडियो अउरी फोटो हमरी मोबाइल में कैद बा। यदि जरूरत होखे तऽ आके लेजा। अउरी नइखे जरूरत तऽ कौनो बाति ना, तीन चार दिन ले तहके खोजबि, ना अइबू तऽ वायरल कऽ देबि, बाजार में। दुनिया देखि ली।"

सुनि के रूही डेरा गइली। अउरी मोबाइल जमीन पर धऽ दिहली। जवाबो देबे के हिम्मत ना रहे। लेकिन ऊ ओने से बोलते रहे, "अबले हम तहरा के बोलावत रहनी हं। लेकिन अब

तहरा अपनी मर्जी से हमरी लगे आवे के पड़ी। ना तऽ अंजाम सोचि लऽ। का करबू, बोलऽ? अइबू नू?" लेकिन रूही का जवाब देबे के हिम्मत कहाँ रहे,

"तूँ बाड़ू कहाँ? अगर कॉलेज में होखऽ तऽ बोलऽ, हम ओहिजा स्कार्पियो लेके आ जा तानी। तहरा के कुल सबूतो देखा देब, शहर में भी आराम से घुमा देब अउरी सांझी ले, घरे ले जा के छोड़ियो देब।"

इ कुलि सुनि के रूही डरे रोवे लगली। अन्त में सानिया खुदे फोन काटि के रूही के चुप करावत कहली।

"चुप, पागल कहीं के। लोग देखी तऽ का कही रे? एतना कमजोर बाड़ तूँ, कि पिल्ला की भोंकले से ही डेरा गइलू? पहिले चुप होखऽ, तब तहरा से एगो बाति कहीं।" कुछ देर की बाद रूही चुप भइली तऽ सानिया समझावे लगली। "एगो छोट उदाहरण तहरा के दे तानी। पिल्ला केहू के काहें काटेला? कबो सोचले बाड़? पिल्ला भोंकि के आदमी के पहिले हिम्मत टोवेला, कि केतना हिम्मत बा? जे नजर मिला के खड़ा हो जाला, ओके ना काटेला। लेकिन जे डेरा के भागे लागेला ओके दउरि के काटि लेला। तुहूँ डेरा के भागऽ ताड़ू, तऽ ऊ चौंटियइबे करी!

नारी कमजोर एइसे बाड़ी कि ऊ अपना के कमजोर मानि लिहले बाड़ी। जहिया ऊ अपना के बरियार मानि लिहें तहिया से केहू के हिम्मत कहाँ कि उनकी ओर नजर उठा के ताकियो दी। अब ऊ जमाना गइल रूही, जब नारी के हाथ खाली चूड़ी पहिरे खातिर बनत रहल हऽ। आजु नारी के हाथ बंदूक उठावऽता। सीमा पर दुश्मन से लोहा लेता। समस्या से भागल निदान ना हऽ। समस्या से लड़ल निदान हऽ। जबले समस्या चिंगारी रही, तबले अबला नारी रही। लेकिन जहिया ऊ चिंगारी दवानल बनि जाई, तहिया पुरुष खुदे जरि जाई। तूहूँ चिंगारी के आग बनावऽ, देखऽ पुरुष अपनी आपे डेराए लागी।

समाज में अकेले तहार काहें बदनामी होई? पहिले ओकर बदनामी होई, जे तहरी साथे जबरदस्ती कइले बा। रोवल धोवल छोड़ऽ, चुपचाप घरे जा अउरी अपनी गार्जियन से सगरी बाति साफ साफ बता दऽ। ओकरी बाद देखऽ चिंगारी आग बनि जाता।"

"ना ! गार्जियन से ना बताएब।" कहत रूही उठली अउरी चलि देहली। सीधे घरे चलि गइली।

ओकरी बाद ऊ कॉलेज आइलो बन्द कऽ दिहली। सानिया रोजे उनके फोन करसु, उनके हिम्मत बढ़ावसु लेकिन ऊ आवे के नामे ना लेसु। रोजे समझावसु कि "सबकुछ साफ साफ अपनी मम्मी से कहि दऽ।" लेकिन ऊ इन्कार कऽ देसु।

"ना सानिया, हमार बदनामी होई। मम्मी भी सुनिहें तऽ उनका चोट लागी ।"

"तऽ तूँ का करबू? तहार पढ़ाई बाधित बा !"

"एइजा जान पर बनि आइल बा अउरी तहरा पढ़ाई लउकता?

www.bhojpurisahityangan.com

सोचऽतानी, एकबेर ओकरा से मिल के फोटो अउरी विडियो कुलि डिलीट करे के रिक्वेस्ट करीं ।"

"लेकिन मिल के काहें? फोन से काहें ना? यदि ओकरा से मिले गइलू अउरी ऊ तहार किडनैप कऽ लिहलस, तऽ का करबू? तूँ जेतना सोचऽ ताड़, दुनिया ओसे बहुत आगे बा। तहरी समस्या के हल बस एतने बा, कि तूँ आपनी गार्जियन से सारा बाति साफ साफ बता दऽ।"

"हरगिज ना बताएब। जानि के ओ लोग का दुःख होई। हम चाहऽतानी कि काम आराम से निपट जाउ।"

"ठीक बा, जौन बुझाउ तौन करऽ।"

सानिया की लाख कहला की बादो रूही ई बाति अपनी गार्जियन से बतावे के तैयार ना भइली। ओने रवि रूही खातिर एतना बेचैन कि हमेशा फोन कऽ के उनके बोलावे, फोटो वायरल करे के धमकी देउ। सगरी कइला की बादो जब रूही ओकरी बात पर खाड़ ना भइली तऽ एगो अश्लील फोटो उ सोशल मिडिया पर पोस्ट कऽ दिहलसि।

अब आगि तऽ लागहीं के रहे। घंटा भर में ही शहर की लगभग हर मोबाइल पर ई फोटो तैरे लागल। शहर की बड़हन सेठ की बिगड़ैल बेटा के ई बाति रहे, तऽ बवाल होखबे करी। जगह जगह लोग बतकही करे लागल। रूही के हऽ? ई खोज भी होखे लागल। सोशल मिडिया पर आपन अश्लील फोटो देखि के रूही भी सन्न रहि गइली। का करसु अउरी का ना करसु की मकड़जाली सवाल में उलझि के रोवे लगली। ओने उनके जेठ भाई मदन भी फोटो देखि के गुस्सा से दहकत अपनी माई से बता दिहले। महतारियो देखि के सन्न रहि गइली अउरी दुनू महतारी बेटा रिसि से आन्हर रुही से सवाल जवाब करे चलि दिहल लोग।

रूही अपनी रूम में पेटकुनिया सूति के रोवत सानिया से बतियावत रहली। "सानिया अब सुसाइड कइला की सिवाय हमरी लगे कौनो रास्ता नइखे। माथे पर बदनामी के मोटरी ले के हम केतना दूर चलि पाएब। अब यदि जीयबि तऽ ताना में ही जिनगी गुजारे के पड़ी। जौन हमरी वंश के बाति नइखे।" सानिया भी उनके बाति सुनि के दंग रहि गइली अउरी लगली समझावे,

"सुसाइड तऽ भुलाइयो के मति करिहऽ। तहार कौनो दोष नइखे। बस ई बाति छुपा के तूँ दोषी बनि गइल बाड़।" अभिन बाति होते रहे तले माई अउरी भइया आ गइल लोग अउरी आवते महत्तारी कहे लगली,

"ई का कइले रे बेटी। मुंह में करिखा पोत दिहले। केतना अरमान रहल हऽ तोरा से? वोकील बनबे, इंजीनियर बनबे, अधिकारी बनबे। लेकिन तें तऽ खानदान के नाम डूबा दिहले। बाप, देंह मुंह लेसि के तोर खर्चा दे ताड़े, अउरी तें वो खून पसीना की पइसा से गुलछर्रा उड़ावऽ ताड़े?" लेकिन रूही का जवाब दिती। चुपचाप रोवत परल रहली। ई कुलि जानि के सांझि ले बाप जगदीश भी आ गइले अउरी उहो खोज खबर लगले लेबे।

रात में सभे दुःख में डूबल बइठल रहे। का कइल जाउ, का ना कइल जाउ। मुकदमा कइल जाउ कि ना। सोचत विचारत सभे, माहौल बड़ी गमगीन रहे। जगदीश बेटी रूही के देखत कहे लगले, "तूँ तनिको दुःख जनि करिहऽ बेटी! तहार बाप अबे जिन्दा बाड़े। हम सब जानऽ तानी, तहार कौनो दोष नइखे। तहरी साथे गलत भइल बा। लेकिन करे वाला की साथे निपटे खातिर, अबे हम जियऽतानी। तूँ निफिक्कीर होके पढ़ऽ अउरी कुछ बनऽ। अब तूँ अपनी रूम में जा, अउरी पढ़ऽ।" रूही की गइला की बाद अपनी मेहरारू सुधा की ओर घूमले,

लेकिन तूँ आपन ड्यूटी ठीक से ना निभवलु हऽ। खाली बनवलू खियवलू, दूसर कुछ ना। अब ओके खामियाजा तऽ भोगहीं के पड़ी। तहरा नू देखे के चाहीं, कि बेटी कहाँ बा, कहाँ जातिया, का करऽतिया, केकरा से बतियावऽ तिया?गलती देखला पर प्यार से समझाहूं के चाहीं। लेकिन तूँ कुछू ना कइलू ।" सुनते सुधा झझकि गइली,

"रउरा तऽ एगो हमहीं अब्बर मिली ले। हर बात के दोषी हमरे के बनाइले। हम घर में बानी, सामने तऽ सभे ठीके बा। लेकिन बाहर ऊ का करऽता, घर में के आदमी कइसे जानी?" सुधा की झझकला पर सभे चुप हो गइल, अउरी कुछ देर ले सभे चुप रहे। लेकिन थोड़े बाद फेरु जगदीश कहे लगले,

"थाना पुलिस अउरी मुकदमा कइला से कौनो फायदा नइखे। झूठमूठ में बदनामी होई। पइसा वाला से लड़ल गरीब की वश के बाति नइखे। अब ए विपत के बस एके गो हल बा, कि असो रूही के बियाह कऽ के विदा कऽ दियाउ।" कहि के फेरु कुछ देर ले चुप रहले। लेकिन कुछ देर बाद फेरु कहे लगले। "सबसे बड़हन बाति ई बा, कि जे ई बाति जानि जाई, ऊ बियाह करबे ना करी। नीमन आदमी तऽ एकदम ना करी। कौनो गरीब, दलिदर या दुःखिया ही होई जे ए के उठाई । ऊ नीच हमरी बेटी के जिनगी चौपट कऽ दिहलस।" कहि के जगदीश रोवे लगले।

ओने आदित्य सेठ का जब ओ पोस्ट की बारे में पता चलल तऽ देखि के सन्न रहि गइले। उनका बुझाइल कि ई कौनो धंधाबाज लड़की के काम हऽ, जौन पइसा अंइठे खातिर हमरी बेटा के इश्तेमाल करऽतिया। ऑफिस की कंप्यूटर ऑपरेटर के बोला के पूछले तऽ ऊ बतवलसि, कि अइसन फोटो कम्प्यूटर से भी बनि सकेला। लेकिन फोटो पोस्ट रवि बाबू की मोबाइल, अउरी उनही की आईडी से भइल बा। मने ऊ खुदे कइले बाड़े। हो सके कि उनके मोबाइल हैक भइल होखे, चाहें केहू दूसर आदमी मोबाइल ले के कइले होखे। लेकिन तबो यदि रउरा बुझाता कि ऊ अइसन ना करिहें, तऽ उनके मोबाइल चेक करीं। पता चलि जाई। उनकी मोबाइल में अइसन अउरी फोटो होई तऽ जानि जाएब कि उहे कइले बाड़े।

तुरन्ते फोन कऽ के रवि बाबू बोलावल गइले अउरी एक घंटा

खातिर उनके मोबाइल लिया गइल। मोबाइल जब खोलि के चेक भइल तऽ देखि के सेठजी के माथा चकरा गइल। अइसन सैकड़ों फोटो अउरी वीडियो उनकी मोबाइल में मिलल। अब तऽ उनका विश्वास हो गइल कि ई काम रवि बाबू के ही हऽ। चिन्ता एतना कि भागल दुपहरिए में घरे चलि गइले अउरी पूरा परिवार की लोग के बोला के पोस्ट देखावत लगले कहे। "हमरी लगे ओतना प्रॉपर्टी बा, कि बेटा कहि दे सन, तऽ फिल्म की हीरोइन से ओकने के बियाह करा दीं। लेकिन हमार बेटा एगो अदना से लड़की पर ओ तरे लोभा गइल, कि धन धर्म सगरो गँवा दिहलस? ई बाति हमरा हजम ना भइल, लेकिन साँच बा। शहर में हमरी इज्जत के डुग्गी बाजि रहल बा, कि आदित्य सेठ के बेटा हे तरे एगो लड़की की साथे कइले बा।"

"लेकिन डैडी, टेक्नोलॉजी की युग में कंप्यूटर से कइसनो फोटो बनि जाता। ऊ लड़की हमरी साथे फरेब कइले बिया। हम निर्दोष बानी। हमार मोबाइल हैक भइल रहे।"

"चुप, एक जुबान ना! सारा सबूत हमरी लगे बा। हजार गो फोटो वीडियो तोरी मोबाइल में मिलल बा। केतना हमरी आँखि में धूरा झोंकबे। ऊ लड़की अब तोरा पर मुकदमा करी, तें गिरफ्तार होखबे, जेल में सड़बे, तब पता चली। पइसा के धुरछक छुटि जाई। केस सुलह खातिर लड़की मोटहन पइसा मांगी, वकील मांगी।" अबे सेठजी बेटा के डांटते रहले तले सेठाइन धन की नशा में चूर बोलि उठली।

पइसा केतनो लागि जाउ, लेकिन हमार बेटा जेल ना जाए के चाहीं। कौनी दिनराति खातिर वकील मुख्तार के पोसि के रखले बानी। हमार लड़िका निर्दोष बा, पुलिस से बात करीं। वकील से बाति करीं। हमार लड़िका यदि जेल चलि जाई त राउर का इज्जत रही।"

"तहार लड़िका निर्दोष नइखे, एकर सबूत बा हमरी लगे।"

"कुछ होखे लेकिन हमार लड़िका जेल चलि गइल तऽ ठीक ना होई।" कहि के सेठाइन अपनी रूम में जाके रोवे लगली। अब त मेहरारू के रोअल देखि के सेठजी अउरी बेचैन हो उठले। बेटा के बचावे खातिर दिमाग घूमावे लगले। आनन फानन में एसपी के फोन कऽ के बोलवले। लगभग आधा घंटा बाद एसपी साहब अइले, अउरी बात होखे लागल। सारा बाति बता के कहले कि "देखिएगा उस लड़की का एफआईआर दर्ज नहीं होने पाए।" सुनते एसपी साहब समझावे लगले।

"देखिए साहब, विश्वविद्यालय के छात्रा का मामला है। इसके खिलाफ सोशल मिडिया पर छात्र प्रतिक्रिया दे रहे हैं। अभी से प्रशासन डरा हुआ है, कि कल छात्र आंदोलन ना कर दें। इसलिए दूसरे ज़िलों से भी फोर्स बुलाया जा रहा है। इस स्थिति में यदि लड़की को एफआईआर करने से रोका गया तो स्थिति बिगड़ सकती है। फिर मुझपर भी कार्यवाही हो जाएगी। कोई भी प्रशासक अपनी नौकरी दाव पर

नहीं लगा सकता।"

"चलिए नौकरी दाव पर मत लगाइए, लेकिन इतना तो कर ही सकते हैं, कि यदि उसने एफआईआर किया तो उसकी जांच उसी दरोगा को देंगे जिसे मैं कहूंगा?"

"चलिए इतना कर दूंगा। लेकिन आप सबूत तो मिटा दीजिए।"

"मैं रवि के मोबाइल से सारा उसका फोटो डिलीट कर दिया हूं।

"डिलीट करने से कुछ नहीं होगा। मोबाइल जब फॉरेनसिक जांच में जाएगा तो सारा डाटा रिकवर हो जाएगा। फिर पुलिस कुछ नहीं कर पाएगी। आपका बेटा गिरफ्तार होगा।"

"देखिए एसपी साहब, जितना पैसा कहिए दे दूंगा, लेकिन मेरा बेटा गिरफ्तार नहीं होनी चाहिए। पचास लाख एक करोड़ जितना कहिए अभी दे दे रहा हूं, लेकिन मेरे बेटे को बचा लीजिए।"

"सॉरी, नौकरी दाव पर लगाकर आपकी कोई मदद नहीं कर सकता। बेहतर होगा कि आप बाहर ही उस लड़की को मैनेज कर लें। कुछ ले देकर सेटलमेंट कर लीजिए। यह काम आपके लिए फायदेमंद होगा।" कहि के एसपी साहब चलि गइले।

उनकी गइला की बाद सेठजी वकील साहब के बोलवले अउरी उनहूँ से राय लिहले। लेकिन वकील साहब भी उहे राय दिहले कि बाहर सेटलमेंट कऽ लिहल उचित होई, ना त दिक्कत बढ़ि जाई। सबके बाति सुनि के आदित्य सेठ निराश हो गइले। वकील साहब की गइला की बाद भी घंटों चिन्ता में पड़ल बइठल रहले। अब तऽ धीरे धीरे सांझिंयो हो गइल। सूरज की जाते पूरा शहर बल्व की दूधिया रोशनी में नहा उठल। चिन्ता में डूबल उठि के खिडकी से बाहर झंकले। सड़क पर जाम में फंसल रेंगत गाड़ी कुलिनी के देखि के तनी मन के शान्ति मिलल।

खड़ा खड़ा सोचे लगले, "बेटा अगर गिरफ्तार हो जाई तऽ उनके का इज्जत रहि जाई। शहर में इज्जत के डुग्गी बाजि जाई। ना, पइसा चाहें केतनो लागे, लेकिन बेटा के गिरफ्तार ना होखे देब। ना तऽ ओ शातिर लड़की के मन बढ़ी अउरी हमार शोषण करे लागी। रोजे ओके मांग बढ़ी अउरी देत देत हम परेशान हो जाएब। ओकरा से शोषित भइला से बढ़िया बा कि हम पुलिस के मैनेज करेब। एफआइआर होते रवि के विदेश भेजि देबि अउरी पुलिश के मैनेज कऽ के जांच में लीपापोती करवा के केश के रफा-दफा करवा देब।" अहंकार में मुट्ठी भींचत फेरू से आ के सोफा पर इइठि गइले।

नौकर से मांगि के एक गिलास पानी पियले तब मन तनी धीरा भइल तऽ सेठाइन से लगले कहे, "एतना जानि लऽ कि मरते दम तक बेटा के गिरफ्तार ना होखे देबि। तहरा तनिको चिन्ता कइला के जरूरत नइखे। हमरो नाम आदित्य सेठ हऽ।" कहत मोबाइल लेके एसपी के फोन मिलवले,

"साहब, अभी एफआइआर हुआ है क्या?"

"ना!" एसपी कहले,

"ठीक है।" कहि के फोन काटि के लगले सोचे।

लेकिन ऊ लड़की अबले एफआइआर काहें ना कइलस? हो सके कि ऊ अच्छा खानदान के लड़की होखे, लोकलाज की डर से मुकदमा से बचत होखे। अगर ओके मैनेज करीं अउरी दू चार लाख रुपया लेके ऊ मानि जाउ, तऽ कमे में समस्या दूर हो जाई। लेकिन ओकरा से बाति कइसे होई? रवि की लगे ओकर मोबाइल नम्बर होई, तऽ ओकरा से मांगल ठीक नइखे। यदि ओकरी घरे जाईं तऽ अबे रिसियाइल होइहे सन। कहीं हमला कऽ दे सन तऽ का होई?" सगरी सोचत विचारत अन्त में निष्कर्ष पर पहुँचले कि दस बीस आदमी के लेके ओकरी लगे जाएब अउरी बतियाएब।

चार गो गाड़ी से आपन लाव लश्कर लिहले जब सेठजी रूही की घरे पहुँचले त बाहर के आवाज सुनि के रूही के बाप जगदीशजी बाहर निकलले अउरी मय हथियार एतना लोग के एक साथे देखि के सहम गइले। "ई का हऽ?" अबे सोचते रहले तले दू तीन गो आदमी की साथे भारी भरकम एगो आदमी आ के सामने खड़ा हो गइल। देखि के हाथ जोड़ले पूछले,

"हम रउरा के चिन्हत नइखीं?" सुनि के बगल में खड़ा एगो आदमी बोलल

"आदित्य सेठ हैं।" सुनते जगदीशजी के चेहरा सख्त हो उठल अउरी गुस्सा से उबलत कहि पड़ले,

"तऽ अब का करे आइल बानी। अब्बे अउरी कौनो कोर कसर बाकी होखे तऽ उहो निकालि लीं अउरी जाईं।" कहत जगदीशजी दुःख की मारे हताश होके उहें बइठि गइले। देखि के आदित्य सेठ लपकि के उनके धइले अउरी उठा के कुर्सी पर बइठावत कहले, "हम राउर दुःख बांटे आइल बानी।"

'हमार कौन दुःख रउरा बाँट सकीले? रउरा बस दुःख दे सकीले। हमरा कौनो दुःख नइखे। बस एतने दुःख बा कि हमरो बेटा बेटी शहर में रहि के पढ़त रहले हंऽ। ओकनो के सपना रहल हऽ कुछ बने के। लेकिन ऊ सपना भगवान तूरि देहले, एतने के दुःख बा। अब परिवार गांवे चलि जाई। ओकने के सपना खतम हो जाई।" रोअत जगदीशजी आपन बाति कहत रहले त ओने दुःखी मन से सेठजी उनकी मूंह की ओर ताकत उनके बाति सुनत रहले। आपन बाति कहि के जगदीशजी मुड़ी झुका के बइठि गइले। लोर से पूरा चेहरा भींजि गइल रहे। देखि के सेठजी का बहुत आत्मग्लानि भइल। दस मिनट ले उहाँ एकदम शान्ति रहे। तले चाय बनि के आइल। लेकिन सेठजी पिए से इन्कार करे लगले।

लेकिन जगदीशजी जबरदस्ती करत कहले, "हमरी रउरी बीच में चाहें केतनो कटुता होखे, लेकिन ए बेरा रउरा हमार मेहमान बानी, भगवान बानी। चाय तऽ पिए के पड़ी। ई हमार संस्कार हऽ, एके निभावे के पड़ी।

सेठजी चाय उठा के पियत कहले, "हम रउरी बेटी से मिलल चाहऽतानी।"

"ओ जिन्दा लास से मिल के का करेब?" जगदीशजी कहले, लेकिन सेठजी मनले ना, निहोरा कऽ के भीतर गइले।

सेठजी के देखि के रूही बिस्तर से उठि के उनके चरण छू के प्रणाम कइली अउरी मुड़ी झुकवले खाड़ होके रोवे लगली। उनके रोअल देखि के सेठजी भी निःशब्द रहले। तनी देर बाद जब उनके सिसकी बन्द भइल तऽ समझावत कहले।,

बेटी, तहरी साथे बुरा भइल बा, बहुत बुरा। लेकिन मुकदमा कऽ के तूँ का करबू? रवि के जेल होई, लेकिन रवि की जेल से तहरा का मिली? हम चाहऽतानी कि तूँ जौन कहऽ तौन सजा हम रवि के देबि। जेतना कहऽ ओतना पइसा तहके देबि। तहरी घाव के मेटावे के क्षमता तऽ केहू की लगे नइखे, लेकिन मरहम तऽ हम लगाइए सकऽतानी।

"कौनो जरूरत नइखे अंकल, हम मुकदमा ना करेब।" कहि के रूही चुप हो गइली। सेठजी अउरी एगो दूगो बाति कहले लेकिन रूही कौनो जवाब ना दिहली।

आदित्य सेठ परिवार के संस्कार देखि के बहुत प्रभावित भइले। बाहर निकलले तऽ जगदीशजी कहे लगले, "ए घाव के मरहम ना रवि बाबू के जेल बा ना राउर दिहल पइसा। यदि सम्भव होखे तऽ हमार इज्जत लौटा दीं, ई हमरा खातिर सबसे बड़ा मरहम होई। रवि हमरी बेटी के जिनगी चौपट कऽ दिहले। वीडियो वायरल कऽ के हमरी बेटी के बाजारू औरत बना दिहले। ऊ अब्बो धमकी दे ताड़े कि उनकी लगे इनके सैकड़ो विडियो अउरी फोटो बा। हमरो अरमान रहल हऽ, कि पढ़ि के हमार बेटी अधिकारी बनी, एसडीएम बनी, डीएम बनी। आल राउंड फर्स्ट डिवीज़न हई। लेकिन अब इनके जिनगी खतम बा। बदनामी के बोझा ई कबले ढोईहें? अब इनके शादियो बियाह तऽ ना होई? के करी इनका से शादी? रउरा जाईं, हम रउरा के वचन दे तानी कि हम कौनो कंम्प्लेन ना करेब।"

ई कुलि बाति सुनि के सेठजी स्तब्ध रहि गइले। उनका बुझा गइल कि रूही पइसा झींटे वाली कौनो शातिर लड़की नइखे। इज्जतदार खानदान के संस्कारित अउरी शरीफ लड़की बा। ना तऽ ए बेरा ले ऊ कोहराम मचा दिहले रहित। रवि एकरी साथे ज़्यादती कइले बा। बइठल बइठल मन में उनकी भयंकर द्वन्द चले लागल अउरी गुस्सा की मारे पागल हो उठले। गाड़ी भेजि के सेठाइन के बोलवले।

लेकिन तले जगदीशजी फेरू रोअत कहे लगले। अइसन स्थिति में हमरी बेटी के का होई? के ओकरा से शादी करी? सुनि के सेठजी तपाक से बोलि पड़ले।

"रविया करी रूही से शादी। आजु रूही हवेली जइहें, हमार बहू बनि के। काल्हि कोर्ट मैरेज होई अउरी परसों रीति रीवाज अउरी धूमधाम से बियाह।"

लेकिन तले सेठाइन कहि पड़ली, "अइसनके घर में बेटा के बियाह करेब?"

सुनि के सेठजी रिसिया गइले, "चुप रहऽ। गड्ढा तूँ खोनलू तऽ भरी के? चुपचाप रूही से अपनी बेटा के बियाह कऽ के अपनी पाप के प्रायश्चित कऽ लऽ। जौनी चौकठ पर दुश्मन के भी भगवान मानल जात होखे ऊ घर ना मन्दिर हऽ। रूही हमरी हवेली के स्वर्ग बना दिहें।" ओकरी बाद जगदीशजी की ओर घूमले "खर्चा के चिन्ता जनि करब। दुनू ओर के खर्चा हमार।" फेरू रूही की लगे गइले, "रूही, आज से तूँ मेरी बहू हुई। तुझे अभी पढ़ना है और कलक्टर भी बनना है।"

रूही के लेके हवेली चलि गइल लोग।

◆ ◆ ◆

सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा
भठहीं बुजुर्ग
कुशीनगर उ०प्र०

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

संस्कृति आ बियाह : मधेशी जीवन के आईना

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

जीवन के हर पहिरा नया निर्माण करेला, नया संघर्ष, नया उमंग आ नया चुनौती ले आवेला। मधेशी समाज में बियाह सिर्फ दू गो प्राणी के मिलन ना हवे, बलुक दू गो परिवार, दू गो रीति-रिवाज, दू गो सोच आ दू गो धरोहर के मिलन हवे। जइसे नदी के धारा मिलके समंदर बनेला, ओही तरे हमनी के संस्कृति में बियाह समाज के मजबूती के कड़ी हवे।

हमनी के मधेशी संस्कृति में जनम से लेके मरन ले हर संस्कार के पाछे कोनो ना कोनो रहस्यमय आध्यात्मिक आयाम बा। बियाह में जौन रीति-रिवाज निभावल जाला, ओकरा पीछे कोनो अंधविश्वास ना बलुक हजारन साल के अनुभव आ विवेक बा। बिधवा-बियाह, बाल-बियाह, दहेज-प्रथा, छुआ-छूत, जाति-पाति — एह सब के चर्चा आजो मधेश के चौपालन में होला, बाकी आज के समय बिज्ञान आ तर्कसंगत सोच के राह प चले के पुकार करत बा।

जइसे हमनी के पुरखा लोग कहले बा —

"घर की इज्जत, बियाह से; समाज की इज्जत, ब्यवहार से"

मधेश में बियाह के रस्म-रिवाज में मिठास बा, संगीत बा, लोकगीत बा, हँसी-खुसी बा, बाकी ओही में कुछ कुप्रथा भी बा, जइसे — लड़की के जनम के दिन से चिंता, दहेज के बोझ, आ समाज के ताना-बाना में जकड़ल रिश्ता। ई कुछ ठेठ नकारात्मक पहलू बाड़ें, जिनका के हमनी के आज के पीढ़ी के चिन्हार के बदले के जरूरत बा।

आधुनिकता आ मधेश :

आज के युग में मधेशी समाज बदलत बा। पढ़ल-लिखल लोग बियाह के रूप-रंग के नया परिभाषा देत बा।

अब मोबाइल, इंटरनेट, सोशल मीडिया पर प्रेम-विवाह के बात होला, बाकी फेरो पारिवारिक सहमति आ सामाजिक स्वीकारोक्ति के जरूरत बा। आज बियाह में शादी के मंडप में वेदी से लेके स्टेज ले, फूल से लेके फोटोग्राफी ले, हर चीज में आधुनिकता झलकत बा, बाकी मूल भावना अबहियों जीवंत बा — "संस्कार, स्नेह, समर्पण"।

मधेश के बुद्धिजीवी वर्ग, युवा पीढ़ी, आ चिंतक लोग अब जागरूक हो गइल बा। ऊ लोग बियाह के अर्थ, उद्देश्य, आ सामाजिक प्रभाव पर गंभीर चर्चा करत बा। अब लोग कहत बा —

"बियाह संस्कार हवे, करार ना; एकरा के आर्थिक लेन-देन में ना बदलीं।"

शिक्षा, चेतना आ विज्ञान के रोशनी में मधेश के समाज अपन पुरान रीति-रिवाज के तर्कसंगत आ भावनात्मक रूप से पुनर्परिभाषित करत बा।

बियाह मधेशी समाज के एक ठो खास पहिचान हवे। ई संस्कृति के संरक्षण करत बा, आ एकरा में समाज के नैतिक, सामाजिक, धार्मिक आ आर्थिक आयाम बा। जरूरत बा कि हमनी के अपन परंपरा के सम्मान करीं, बाकी कुरीति के त्याग करीं। बियाह के पवित्रता बरकरार राखीं, आ एकरा के जीवन के मधुर यात्रा के रूप में देखीं न कि दिखावा आ दबाव के मंच।

◆ ◆ ◆

प्रकाश कट्टारी
बंजरीया, बारा,नेपाल

करनी के भोग

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

रोपेया के चमक-दमक जब आपन रुप देखावेला त मति फिरि जाला, आँखि प गुरुर के छोपनी चढ़ि जाला, मति उलुटा हो जाला आ मन बेलाम घोड़ा बन जाला।बड़का-बड़का ज्ञानी लोगन के चाल मातल हाथी जस हो जाला आ मति नीमन- बाउर के भेद भुला जाले। सोच उलुटा हो जाला।धर्म के राहि छोड़ के मानव अधरम में आनन्द ढूढ़े के असफल परेयास करेला। दोसरा के दुख दे के आ नीचा देखा के अपना के बड़ साबित करेला। एकरा खातिर तरह-तरह के षडयंत्र के पुलिंदा अपना मगज मे उपराजत रहेला तब नियति विनास के प्रालब्ध के विधान करम-किसमत में लिखेला आ फिरु शुरु होला शारीरिक , मानसिक, आर्थिक अउर समाजिक पतन। लोग जानेला कि नियति सबसे बलवान होले, ऊ तीनों लोक के विजेता रावनो के ना छोड़लस त साधारण आदमी के का बसाई।

अइसने हाल मुखिया जी के रहे। मुखियाजी के तीन गो लइका रहन। तीनों पियकड़ आ बड़ लफुआ। एगो बड़का सराब पी के गली-नली में ढिमिलियात रहे। दुसरका चिलम के सुरुकी मारि के भोले शंकर के गोहरावत रहे।तीसरका हिरोनची रहे। तीनों से टोला भर के लोग परसान रहत रहन। केहुओ अपना दुआर प चढ़े ना देत रहे काहेंकि तीनों हथलुफूक रहऽसन। ओहनी के संघतियो केहू ना रहे। अगर गलती से कवनो लइका से बतियावत ओहनी के गरजीवन देख लेस त लइकन के डाँट-फटकार होखे लागत रहे। ऊ तीनों जवना राह से चलस , लइका राह बदल लेत रहसन। एहि से तीनों के संघतियारो अपना से बड़हन उमिर के नशेड़ियन से रहे। ऊमिर बीतल जात रहे बाकिर एक्को अगुआ ना आवत रहन। मुखियाजी कवनो बेटिहन के बखान के फाँस में फँसा ले आवस त उनकर विरोधी लोग बिआह भाड़ि देस।

अब त मुखियाजी के अपना लइकन के कुँवारपथ के डर सतावत रहे। मुखियाजी अपना साथे रहे वाला चमचन से अपना हितई-नतई में बियाह करावे कहस त चमचा लोग दाँत निपोर के कहस कि हमनीं के हितई-नतई में कवनो लइकी बिआह जुगुत नइखीसन। कवनो चमचा बिलाई के गला में घंटी बान

बान्हे प तेयार ना रहऽसन काहें कि नसेड़ी से बियाह करावला के बाद हितई-नतई से भी हाथ धोवे के पड़ित। अतना बड़का मुखिया खातिर भाठ के भरी। अइसन बिआह के अगुअई के बढ़नी मारऽ ना त ई अगुअई गरदन के ढोल बन जाई जवन बाद में फँसरी बन जाइ त कवनो बड़हन बात नइखे। एह से चमचा लोग दाँत निपोरि के बहाना बनवले में आपन भलाई समझस।

एगो उहो दिन रहे जब मुखिया जी के गाँव-जवार में तूती बोलत रहे। इनकरा साथ रहे में आपन ईज्जत के बात जानत रहे लोग। होते पराते उनुका से भेंट करे खातिर उनुका दुअरा प आदमी के दरगाह लागत रहे। उनुका से दू -बात बतियावे खातिर लोग इंतजार करत रहन बाकिर बेलगाम सवारथ आ लोभ के अइसन आँन्ही बहववलन कि उनकर सभ बनल-बनावल अकारथ हो गइल। लोग उनुका के देख के राह बदले लगलन। एकर उनुका आभास होखे लागल रहे। आपन भविष्य के अगरम भी बुझात रहे बाकिर गरुर के बरियार छोपनी देखलो प अनजान बने प मजबूर बना देत रहे। ऊ कबो-कबो दिमाग में भँजावस त उनुकर चापलूसी फउज अतना बखान करे कि उनकर मति हेरा जात रहे , विचार लसरा जात रहे। कुकरम आ सुकरम के भेद चापलूसी में भोरा जास। कुकरम के ढेरि प अइसन बढ़वार धराइल कि दिन-दूना रात-चउगुना बढे लागल। हालात कब उलटा बेयार आँधी में बदललस उनुकरा समझे से पहिले बवंडर बन गइल। सभ ढाक के तीन पात। अब पछताय का जब चिड़िया चुग गइल खेत। अपना के सुधारे के खूब परेयास कइलन बाकिर सभ अकारथ। का बरखा जब किरसी सुखाने। अब हतासा में विचार कुंठित हो गइल।

जब आग-पाछ सभ गड़बड़ाए लागल त ऊ अपना गुरु जी के पास जाए के तेयारी कइलन। गुरुजी उनका के इसकुली में पढ़वले रहन। पहिले जब मति कवनो बात प अझुरा जात रहे त ऊ उनुका के राह देखावत रहन। मुखियई के बाद अतना सलाहकार साथ ही आगे-पीछे लागल रहन कि उनुका गुरुजी के तलबे ना बुझाइल। जब आग-पाछ के लोग डूबत नाव से कूदि के परइलें तब गुरुजी के इयाद आइल।

"आव-आव मुखिया ! बहुत दिना बाद लउकलऽ , गुरुजी के एकदमे बिसराइए देले बाड़ऽ।"- गुरूजी के बानी में व्यंग झलकल।"पाँव लागत बानीं गुरूजी!"-मुखियाजी अपना कपार प के पगरी उतार के गुरुजी के पाँव में रख देलन। आँखि ढबढबा गइल। गला भरि गइल। थरथरात कहलन-" हम भारी चकोह में फँसल बानीं। हमरा के निकले के राह देखाईं गुरुजी !"" का बात बा मुखिया ? " - गुरुजी पुछलन।मुखिया जी गुरुजी के पाँव पकड़ के फफक-

फफक के पुका फारि के रोए लगलन। गुरुजी के कठेया मार देलस। पत्थर के मूरत जस हो गइलन। उनुका मुँह से बकार ना फुटल ।

कुछ देर बाद गुरुजी अपना के सम्हरलन आ मुखिया के बाँह पकड़ के बइठका में ले गइलन। जग से गिलास में पानी डालत गुरुजी कहलन-" पहिले पानी पी के अपना के सम्हारऽ । जीत-हार लागल रहेला। "गुरुजी उनुका बगल में बइठलन आ ढाढ़स बँधावे खातिर उनुका पीठ प हाथ फेरे लगलन। मुखियाजी कुछ देर बाद हिचकी लेके शांत भइलन। उनका आँख से गंगा-जमुना बह के दूनो गाल से ठूढी तक लाइन खिंचले रहे जवना के गमछी के कोना से बीच-बीच में मुखिया साफ करे के फिराक में लागल रहन बाकिर फिरु से लाइन बन जात रहे।" तू अकेले होत पराते भिनसहरे आ गइल हा। अभी मुँह लुकाने बा, तोहार ढेरे दुसुमन बाड़न। कहीं ऊँच-नीच हो जाइ तब ? " - गुरुजी तनि भिकराह हो के पुछलन । " " आराम से बइठऽ, चाह लेके आवत बानीं । - कह के गुरुजी बगल के दुआरि में समा गइलन।मुखियाजी उब-चुभ में पड़ल रहन। संकोच के जवन चादर उतारि के दुअरा से चलल रहन ऊ पीछा ना छोड़त रहे।

गुरुजी जतने देर करत रहन ऊ संकोच के चादर रजाई जस गंभीर होत जात रहे। ऊ समझ ना पावत रहन कि आपन बात कइसे कहस। फिरु हिया प पत्थर रख के सोचले कि अपना हिया के सभ बोझ गुरु के सामने एही ठइयाँ रख देब तबे गुरुजी कवनो रास्ता निकलिहें। बाकिर कुछ कल-छपट के बात बा ऊ कइसे बताइब। फिर सोचलें कि गुरुजी से कह देब कि राजनीति में ना चाह के भी ई सभ करे के पड़ेला।" मुखिया कवना सोच में पड़ल बाड़ऽ। कब ले आइल बानीं, चाह के कप तोहरा ओर बढ़वले बानीं बाकिर तू कवना सोच में डूबल बाड़ऽ।ल चाह पियऽ।"- मुखियाजी हड़बड़ाहट में चाह के कप पकड़लन। कुछ बूँद छलकल बाकिर सम्हर गइलन। हाथ ना जरल। चाह के सुरुकी के साथ गुरुजी पुछलन-" अतना उनमुनाहे आवे के का कारन बा? सभ ठीक-ठाक बा नू? अतना जरुरी रहे त खबर भेजवा देत, हम्हीं आ जइतीं। "नाहीं गुरुजी, पियासल कुइयाँ के पास आवेला। कुइयाँ पियासल के पास ना जाला। रउआँ जइतीं त सभे जानित, हम अकेला में मिलल चाहत रहीं। एहसे उनमुनाहे आ गइनी हां।" -मुखियाजी एकसुरिये कहलन।" ठीके कइलऽहा ,कहऽ का बात बा ? साफ-साफ सुरु से अंत तक सभ बात कहब त समाधान मिल जाई।"- गुरुजी बिना लाग लपेट के मुद्दा प अइलन।

दुइ घंटा बितल मुखियाजी के बात पूरा होखे में। गुरुजी उनकर बात सुनत रहन आ चेहरा के भाव बदलत रहे। कबो-कबो त गुरुजी के खींसी चेहरा लाल हो जात रहे बाकिर गंभीर हो के बिना टोका-टोकी के सभ बात सुनलें। जब मुखियाजी के बात ओरा गइल तब गुरुजी शुरु भइलन--" मुखिया ! तू तीन बार एकसुरिए जीतलऽहा। गाँव के विकास करे के चाहीं त तू आपन गोल बनावे खातिर अपना टोल के सभ नबोज लइकन के शराबी बना देलऽहा। तू ना जानत

www.bhojpurisahityangan.com

रहलऽहा कि तोहरो लइकवा ओहनिए साथे रहेलें। संगत से गुन होला आ संगत से गुन जाला। संगत में आ के तोहार लइका सभ गड़बड़ा गइलें। ऊपर से तोहार करमो बढ़िया ना रहल। तू सुनले बाड़S नू कि फले पुत्र पिता के धरमें। तोहार करनी के भोग अपने साथे लइकन के भी भोगावत बाड़S । जोजना के धन हड़पल ऊ सरकार के ना ऊ गरीबन के हक रहे। तू गरीबन के हक खा के सही सलामत कइसे रह सकेलऽ । अउर - त - अउर धन खातिर विधवा के मरवा देलऽ ? सरग-नरक एहीजे बा। अपना करनी के भोग एहीजे भोगे के बा। जब आदमी निरंकुश हो जालन त उनका प नियति अंकुश लगावेले। करनी के नीमन-बाउर भोग ई जनम कम पड़ेला त अगिलो जनम में भोगे के पड़ेला। ई प्रालब्ध कहाला जवना के त्रिदेव भी ना बदल सकेलें। हम का ? एकरा में देवता-पितर कुछउ ना कर सकेलन । मखिया तू जा, आपन आदत सुधार के करनी के भोग भोगS । हम एह में भागीदार ना हो सकिला । अब तू जा सकेलS ।" -कह के गुरुजी हाथ जोरि लेलन।

◆ ◆ ◆

उमेश कुमार राय
जमुआँव,भोजपुर
(बिहार)

पहिले -
पुरनियाँ कहत रहले हँ -
'जब बाप के जूता बेटा के गोड़ में सही से आ जा त समुझीं कि बेटा जवान हो गइल। अब बेटा के साथे बराबरी के बेवहार राखीं।'
अब -
'जब बेटा बाप की चुनौटी से चोरा - चोरा के खइनी खाए लागे त समुझीं कि बेटा जवान हो गइल। अब बेटा से बराबरी के बेवहार राखीं। अपनी खइनी के चुनौटी बेटा के दे दीं आ जब खइनी खाए के मन करे त बेटा से कहीं -"बाबू, तनी बनावऽ ना। ढेर देर हो गइल खइनी खइले।"
नोट : - खइनी खाइल बाउर ह स्वास्थ खातिर।

एक बेर एगो चीनी, एगो पाकिस्तानी आ एगो भारतीय अरब देश में शराब पीयत पकड़ा गइलें।
एकरा खातिर उहाँ के सरकार ओ लोग के 20-20 कोड़ा मारे के सजाइ सुनवलसि।
कोड़ा मारे से पहिले जेलर कहलें कि आज हमरा बेगम के जनमदिन ह आ ऊ चाहत बाड़ी कि अपनी सजाइ से पहिले तहन लोग एकहकगो मन्नत मांगि ल।"
चीनी कहलें कि हमरा पीठि पर एगो तकिया बान्हि दिहल जा।
तकिया पीठि पर बन्हा गइल।
लेकिन तकिया जियादे देर ले ना टिकि पावल।
पाँचे कोड़ा में फाटि गइल आ उनका पनरह कोड़ा अपनी पीठिए पर खाए परल।
पाकिस्तानी ई देखिके डेरा गइलें आ कहलें कि हमरा पीठि पर दू गो तकिया बान्हि दिहल जा।
दू गो तकिया बान्हल गइल।
लेकिन उहो जियादे देर ना चलल आ उनहूँ का दस कोड़ा अपनी पीठिए पर खाए परल।
जब भारतीय के भाँजा आइल त जेलर कहलें कि
तू दुनियाँ के बेहद खूबसूरत देश से आइल बाड़ऽ जवन अपनी वीरता खातिर जानल जाला,
तू एगो ना दू गो मन्नत मांगि सकत बाड़ऽ।
भारतीय माँथ उठा के बहुत नरमी से कहलें -
'हम तहार एहतराम करत बानीं आ ए नवाजिश के बदले बीस ना सइ कोड़ा के मांग करत बानीं.....
जेलर चिहात पुछलें कि तहार दूसर ख्वाहिश का बा?
भारतीय फिनु से माँथ उठा के मुस्कियात कहलें .....
"हमार दूसर ख्वाहिश ई बा कि .....
हमरा पीठि पर पाकिस्तानी के बान्हि दिहल जा।"

संगीत सुभाष

www.bhojpurisahityangan.com

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

www.bhojpurisahityangan.com

जनता जागी त लोकतंत्र बची...

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

लोकतंत्र खाली वोट डाले के नाम ना ह। लोकतंत्र एगो लगातार जागरूकता ह, एगो निरंतर चेतना ह आ नागरिक जिम्मेदारी के ऊ रोशनी ह जवन सत्ता के गलियारा से लेके समाज के आखिरी आदमी तक बराबरी से पहुँचे के चाहीं। बाकिर आज सबसे बड़ा सवाल ई बा कि का हम लोकतंत्र के खाली चुनाव तक सीमित क के रख देले बानीं? का नागरिक के भूमिका अब खाली मतदाता बनके रह गइल बा?

आज देश कई गो चुनौती के सामना कर रहल बा। बेरोजगारी, महँगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, सामाजिक असमानता आ प्रशासनिक जवाबदेही जइसन सवाल हमनीं के सामने खड़ा बा। ई सवाल कवनो एक दल, विचारधारा आ सरकार के नइखे, ई पूरा राष्ट्र के सवाल बा। एह समस्या के समाधान नारा से ना, नीति से निकली, भाषण से ना, परिणाम से निकली।

दुर्भाग्य के बात बा कि सार्वजनिक बहस के स्तर लगातार गिरत जा रहल बा। तथ्य पीछे छूटत जा रहल बा आ भावना आगे बढ़त जा रहल बा। तर्क के जगह शोर ले लिहले बा आ संवाद के जगह आरोप-प्रत्यारोप। समाज के एगो बड़ा हिस्सा अब विचार से ना, पूर्वाग्रह से फैसला करे लागल बा। ई प्रवृत्ति कवनो लोकतांत्रिक व्यवस्था खातिर शुभ संकेत नइखे।

सत्ता चाहे जेकरा हाथ में होखे, ओकर मूल्यांकन सवाल के आधार पर होखे के चाहीं, प्रशंसा के आधार पर ना। लोकतंत्र में सरकार जनता के मालिक ना, सेवक होला। एह से नागरिक के पूरा अधिकार बा कि ऊ पूछे—रोजगार कहाँ बा? शिक्षा के गुणवत्ता कइसन बा? स्वास्थ्य सेवा कतना सुलभ बा? विकास के लाभ आखिरी आदमी तक

काहे ना पहुँचत बा? अगर ई सवाल पूछले ना जाई, त लोकतंत्र धीरे-धीरे खाली एगो औपचारिक व्यवस्था बनके रह जाई।

मीडिया के भूमिका भी एह संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण बा। लोकतंत्र के चौथा खंभा अगर सत्ता से सवाल पूछे के बजाय खाली दर्शक के भावना के व्यापार करे लागी त समाज सच्चाई से दूर जाए लागी। समाचार के मकसद सूचना दिहल ह, उत्तेजना फइलावल ना। पत्रकारिता के धर्म जनहित ह, कवनो पक्ष विशेष के हित ना।

बाकिर खाली सत्ता आ मीडिया के दोष दे के नागरिक अपना जिम्मेदारी से मुक्त ना हो सकेला। लोकतंत्र के असली ताकत जनता होला। अगर जनता जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा आ भावनात्मक नारा से ऊपर उठके नीति, काम आ परिणाम के आधार पर फैसला करे लागी, त राजनीति के चरित्र बदले में देर ना लगी। जवना दिन वोट विकास पर पड़ी, ओह दिन राजनीति भी विकास के भाषा बोले पर मजबूर हो जाई।

इतिहास गवाह बा कि कवनो राष्ट्र खाली सरकार के भरोसे महान ना बनल बा। राष्ट्र तब आगे बढ़ेला जब ओकर नागरिक जागरूक, जिम्मेदार आ सचेत होखेला। जब ऊ अपना अधिकार के साथ-साथ अपना कर्तव्य के भी समझेला। जब ऊ सवाल पूछे के साहस रखेला आ जवाब सुने के धैर्य भी।

आज जरूरत कवनो एक दल के जीत के ना, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्य के जीत के बा। जरूरत अंध-समर्थन के ना, रचनात्मक आलोचना के बा। जरूरत शोर के ना, सार्थक संवाद के बा। जरूरत भीड़ बने के ना, जागरूक नागरिक बने के बा।

इयाद रखीं, लोकतंत्र के सबसे बड़ ताकत संसद के इमारत में ना, बल्कि नागरिक के चेतना में बसल बा। अगर नागरिक जागल बा, त लोकतंत्र सुरक्षित बा, अगर नागरिक उदासीन बा, त कवनो संविधान, कवनो संस्था आ कवनो व्यवस्था ओकरा के लंबा समय तक जिंदा नइखे रख सकत।

समय के पुकार साफ बा—सवाल पूछीं, तथ्य खोजीं, विचार करीं आ राष्ट्रहित के व्यक्तिगत आग्रह से ऊपर रखीं। काहे कि जब जनता जागेला, तब लोकतंत्र मजबूत होखेला, आ जब लोकतंत्र मजबूत होखेला, तब राष्ट्र सचमुच प्रगति के राह पर आगे बढ़ेला।

◆ ◆ ◆

सुजीत सिंह (शिक्षक)
छपरा

अंतिम पन्ना

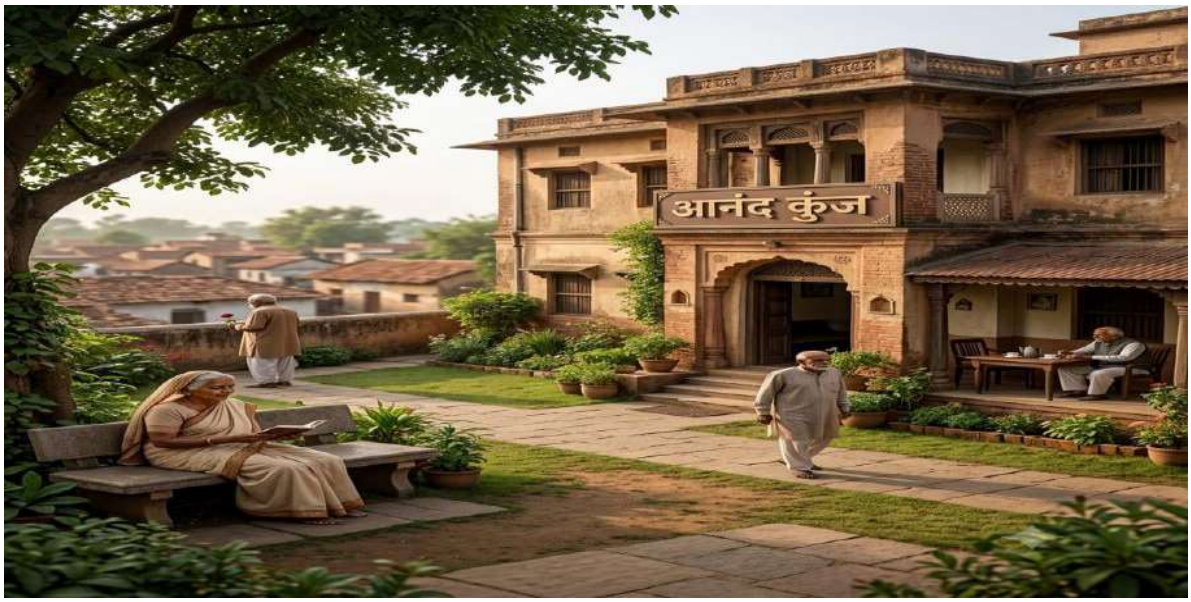

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

गाँव के छोर पर बनल वृद्धाश्रम 'आनंद कुंज' में अमूमन शांति रहे। ढलत उमिर के लोग आपन बाकी जिनगी भगवान के भजन अउर गप्प-शप्प में बितावत रहे। बाकी ई शांति तब भंग भइल जब ओइजा अनुराधा देवी के कदम पड़ल। कत्थई आँखी, उज्जर सूती साड़ी अउर चेहरा पर एगो अजीब उदासी लिहले जब ऊ आश्रम के ओसारा में अइली त सबके नजर उनहीं पर टिक गइल।

आश्रम के सबसे कड़क अउर अलोन (अकेला) रहे वाले देवराज बाबू, जे अमूमन कवनो मेहरारू से सीधा मुँह बात ना करत रहें, ऊ लाइब्रेरी के खिड़की से अनुराधा के देखते रह गइलें। उनके हाथ से चाय के कप थोरिक हिल गइल।

सबेरे के वॉक (टहले) के समय होखे भा संझा के प्रार्थना, देवराज बाबू के नजर अनचाहे अनुराधा के खोजे लागल। ई ६५ पार के उमिर में एगो अइसन अहसास रहे, जेकरा के ऊ खुदे समझे में असमर्थ रहलें। एकरा के बुढ़ौती के रोमांस कहीं कि आत्मा के पुकार, बाकी कुछ त रहे जवन दुनों के करीब खींचत रहे।

२. मखमली अहसास अउर रहस्य

एक दिन संझा के हरियर घास पर बइठ के अनुराधा देवी गुनगुनात रहली। अचानक उनके पीछे से एगो गंभीर आवाज आइल—"राग यमन बा न? बहुत सुघर गावत बानीं।"

अनुराधा चौंक के मुड़ली। सामने देवराज बाबू गुलाब के एगो फूल लिहले खड़ा रहलें।

अनुराधा थोरिक लजइली, "रउआ संगीत बुझत बानीं?"

देवराज मुस्कुरइलें, "संगीत त ना, बाकी सुर अउर सुघर आवाज के कद्रदान जरूर बानीं।" ऊ गुलाब अनुराधा के ओर बढ़ा दिहलें।

एह उमिर में ई इजहार-ए-मोहब्बत देख के अनुराधा के गाल गुलाबी हो गइल। उहाँ से रोज संझा के मुलाकातन के सिलसिला शुरू हो गइल। दुनो जने घंटो बतियावसु—गाँव-जवार, पुरान गीत अउर सुख-दुख। बाकी एगो अजीब बात रहे। जब्बे अनुराधा देवराज बाबू से उनका परिवार भा अतीत के बारे में पूछस, देवराज बात टाल जास। उनके आँखिन में एगो अजीब डर अउर सस्पेंस तैर जाउ।

३. आधी रात के साया (सस्पेंस)

एक रात, आश्रम के मैनेजर विक्रम देखलस कि देवराज बाबू चुपचाप अपने कमरा से निकल के ओसारा पार करत बाड़ें। आधी रात के दू बजत रहे। विक्रम छिप के उनके पीछे गइल।

देवराज बाबू आश्रम के पाछिल बगीचा में गइलें, जहवाँ एगो पुरान बरगद के पेड़ रहे। ऊ चारों तरफ देखलें अउर जमीन खने लगलें। कुछ देर बाद ऊ जमीन से एगो छोट सन लोहे के बक्सा निकललें, ओकरा के चूमलें अउर फिर ओही में गाड़ दिहलें।

विक्रम के कान खड़ा हो गइल। ऊ सोचलस—"ई बूढ़ा नक्की कवनो बड़ा राज छिपवले बा। या त ई कवनो भगोड़ा अपराधी बा, भा फिर एम्मे कवनो बड़ा खजाना बा।"

अगिले दिन विक्रम पुलिस के फोन क देलस कि आश्रम में एगो संदेहास्पद व्यक्ति रहत बा।

४. आखिरी पन्ना अउर सच

दोसरा दिन दुपहरिया में, जब देवराज अउर अनुराधा बगीचा में बइठल रहलें, तबहीं पुलिस के साथ विक्रम ओइजा धमकल।

विक्रम चिल्ला के कहलस, "देवराज बाबू! आपका खेल खत्म। पुलिस बुलाई है मैंने। बताइए उस बरगद के पेड़ के नीचे आपने क्या छिपाया है? कोई चोरी का माल है या हथियार?"

आश्रम के बाकियो लोग जमा हो गइल। अनुराधा देवी घबरा गइली, "ई का सुनत बानीं देवराज जी? का ई साँच बा?"

देवराज बाबू शांत रहलें। उनका चेहरा पर कवनो डर ना रहे। ऊ पुलिस से कहलें, "चलिए, हम खुद निकाल के दिखा देते हैं।"

सब लोग बरगद के पेड़ के पास गइल। जमीन खन के ऊ लोहा के बक्सा निकालल गइल। पुलिस जब बक्सा खोललस, त ओम्मे ना कवनो जेवर रहे, ना कवनो हथियार। ओम्मे रहे—कुछ पुरान पीला पड़ गइल खत (चिट्ठी), एगो कॉलेज के जमाना के डायरी अउर एगो बहुत पुरान धुंधराह तस्वीर।

पुलिस अफसर तस्वीर देखलस अउर फिर अनुराधा के देखलस। ऊ चौंक गइल, "ये तस्वीर तो अनुराधा जी की है!"

पूरा आश्रम सन्न रह गइल। अनुराधा के आँखि खुलल के खुलल रह गइल। ऊ डायरी हाथ में लिहलीं। ओ डायरी के पन्ना पर ४० साल पुरान प्रेम कहानी लिखल रहे।

देवराज बाबू नम आँखिन से कहलें:

"अनुराधा! ४० साल पहिले बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी (BHU) के कैंपस में हम तोसे प्यार कइले रहनीं। हमार चिट्ठी तोहरे घरवाले दबा देहलें अउर तोहार शादी कहीं अउर करा देहलें। हम पूरा जिनगी बियाह ना कइनीं, तोहरी याद में ई डायरी अउर तस्वीर सहेज के रखनीं। जब हमरा मालूम चलल कि तूं ओही 'आनंद कुंज' आश्रम में आइल बाड़, त हम तोहसे मिले अउर तोहरे करीब रहे इहाँ दउरत चलि अइनीं। हम ई बक्सा रोज रात को इसलिए चूमते थे, क्योंकि इसमें मेरी जिंदगी की इकलौती अमानत—तोहार याद रहे।"

अनुराधा के आँख से ढर-ढर आँसू बहे लागल। ४० साल पुरान भइल प्यार आज बुढ़ौती के अइसन मोड़ पर मिली, ई केहू ना रहे सोचले।

मैनेजर विक्रम शर्म से पानी-पानी हो गइल। पुलिस मुस्कुरा के वापस चल गइल। देवराज बाबू अनुराधा के हाथ थमले अउर कहलें, "जिनगी के किताब के शुरुआती पन्ना भले दोसरा के नाम रहे अनुराधा, बाकी आखिरी पन्ना पर आजुओ हमार नाम बा।"

आश्रम के ओसारा ताली से गूंज उठल, अउर दुनो बूढ़ आँखिन में ४० साल पुरान उहे जवानी के रोमांस अउर चमक वापस आ गइल रहे। ◆ ◆ ◆

अभियन्ता सौरभ कुमार
जिला सिवान बिहार

www.bhojpurisahityangan.com

बड़का नेता आ दुआर प के नीम

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

गाँव में एगो रहन झुमरुक भाई। झुमरुक भाई सीधा साधा, नेक नियत के किसान रहन। उनके दुआर पर एगो बहुत पुरान, घाम-छाँह झेलल नीम के पेड़ रहे। ऊ नीम के पेड़ गाँव खातिर पेड़ ना, बल्कि एगो पूरा पंचायत रहे। दुपहरिया के धूप होखे चाहे साँझ के गोधूलि, गाँव के बुजुर्ग लोग ओही नीम के छाँह में बइठ के खैनी ठोकस आ देस-दुनिया के बात करस।

बाकिर झुमरुक भाई के मेहरारू, बुधिया, रोज सुबहवे उठ के झाड़ू लगावत-लगावत किचकिच करे, "ऐ जी! ई नीम के पतई रोज दुआरी भर बिखर जाला। दिन भर बटोरत बहारत हमार कमर टूट जाला। एकरा के कटवा के हटावा काहे नइखीं देत ?"

झुमरुक भाई समझावस, "ना हो बुधिया, ई नीम हमार बाबूजी अपने हाथ से लगवले रहन। एकर छाँह अउर एकर दतुवन पूरे टोला के नींक राखेला। पेड़ कटवावल पाप हवे।"

गाँव में प्रधानी के चुनाव आ गइल। शहर से एगो बड़का नेता जी, मुखिया लाल, महंग चमचमात गाड़ी से गाँव में वोट मांगे अइलें। मुखिया लाल के आदत रहे कि ऊ जेकरा दुआरी पर जात रहन, ओकरा के बड़-बड़ सपना देखावत रहन— "हम जीतब त तोहार खपरैल के महल बना देब, घरे-घरे नल लगवा देब।"

घूमते-घूमत नेता जी के गाड़ी झुमरुक भाई के दुआरी पर आ के रुकल। नेता जी गाड़ी से उतरलें, बाकिर जइसहीं ऊ आगे बढ़लें, नीम के पेड़ से एगो सुकवार चिरई बीट (मल) कइली आ ऊ सीधे नेता जी के महंग उज्जर कुर्ता पर जाके गिरल!

नेता जी के पारा गरम हो गइल। ऊ मुँह बना के बोललें, "धत्त तेरे की! ई कवन मनहूस पेड़ दुआरी पर लगवले बाड़ऽ झुमरुक? एकरा चलते पूरा सोभा बिगड़ जात बा। आपन विकास चाहत बाड़ऽ , त पहिले ई नीम के कटवा के हटावऽ। हम इहाँ चकाचक पक्का के चबूतरा बनवा देब।"

बुधिया त ओइसहूँ नीम से परेशान रहली। नेता जी के बात सुन के ऊ झुमरुक भाई पर दबाव बनावे लगली, "देखS लीं! नेता जी कहत बाड़न त पक्का नींक ही कहत होइहें। जब चबूतरा बन जाई त पतई बटोरे के झंझट खतम हो जाई। काल्हिए लकड़हारा बोलाई !"

झुमरुक भाई भारी मन से मान गइलें। अँगिला दिन सुबहवे कुल्हाड़ी लेके लकड़हारा आ गइल। नीम के पेड़ पर पहिला चोट लागले रहे कि अचानक आसमान में कड़ाके के धूप हो गइल। मई-जून के जेठ के दुपहरी रहे, लू अइसन चलत रहे जइसे आग बरसत होखे।

तबले ओही राह से नेता जी दोबारा वोट मांगे खातिर पैदले आवत रहन, काहे कि उनकी गाड़ी आगे खराब हो गइल रहे। धूप से नेता जी के मुँह करिया पड़ गइल रहे, पसीना से कुर्ता भींज गइल रहे, आ ऊ हाँफत-हाँफत गंश खा के गिरेवाला रहन।

नेता जी चिल्लइलें, "अरे! तनी पानी दऽ, तनी छाँह दऽ, ना त हम मर जाइब!"

झुमरुक भाई अउर बुधिया दौड़ के गइलें। ऊ लोग आधा कटल नीम के पेड़ के नीचे खटिया बिछवलस। जइसहीं नेता जी नीम के ठंढा छाँह में सूतलें ऊपर से बह रहल पुरवा हवा नीम के पतई से छन के अइसन ठंढा लागल कि नेता जी के जान में जान आइल। बुधिया तुरंते नीम के पत्ता पीस के पानी के साथे नेता जी के पियवलसि, ओ से उनका लू के असर खतम भइल।

आँख खुलते नेता जी ऊपर देखलें। ऊ आधा कटल पेड़ अबहू उनके छाँह दे के बचावत बाटे.।

नेता जी के अपनी गलती का अहसास हो गइल। ऊ उठ के खड़ा भइलें आ हाथ जोड़ के बोललें, "झुमरुक भाई, हमके छमा करऽ। हम सहर के एसी गाड़ी में बइठ के भूल गइल रहीं कि असली सुख आ जीवन ई पेड़-पौधा ही देवेला। ई नीम ना कटी!"

बुधिया कुल्हाड़ी उठा के दूर फेंक दिहली आ बोलली, "आज से हम रोज पतई बटोर लेब, बाकिर अपना घर के ई लछिमी (नीम) कबहूँ ना काटे देब।"

गाँव के लोग ताली बजावे लगल। चुनाव भइल, नेता जी जीत गइलें, बाकिर ऊ चबूतरा बनववलें त नीम के पेड़ के बचा के, ओकरा चारों तरफ गोल घेरा बना के। आजुओ ऊ नीम शान से खड़ा बा आ सबके छाँह दे रहल बा।

◆ ◆ ◆

अभियन्ता सौरभ कुमार
जिला सिवान बिहार

बीतल जिनगी

कब ले बीतल जिनगी के घाव देखल जाव
आईं ना कवनो नया छाँव देखल जाव

रउवा आके सहेज दिहनीं हमर बिखरल जिनगी
काहे ना आठो पहर रउरे नाँव लिहल जाव

कब ले कहल जाई किस्सा ए जिन्दगी
अऊरी कहीं दूर आपन ठाँव देखल जाव

जब ले ना रोक लेवे मउगत अपन रस्ता
तब ले अपना प्रेम के बहाव देखल जाव

जहाँ ना होखे केहू तोहरा हमरा सिवा
दरिया किनारे अइसन कवनो गाँव देखल जाव।

◆ ◆ ◆

बाबूजी

जहिया समझ ना
आई ई
बेनाँव जिनिगी
तहिया याद आई
बस रउवे नाँव बाबूजी

अब त कटे नाहीं रतिया
केहू लउके ना संघतिया
अब त जिनिगी लागऽता
पहाड़ बाबूजी

सभे करे अब सासन
सभके लउकऽता सिंघासन
केहू पूछेला ना अब
समाचार बाबूजी

जहिया समझ ना आई लव
मिली ऊ जिनिगी
ना दुबारा
हरदम संगे रही खड़ा
अब त लागेला
बेगाना संसार बाबूजी।

◆ ◆ ◆

सूर्येश प्रसाद निर्मल
तरैया शीतलपुर।

www.bhojpurisahityangan.com

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

निहोरा

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे। भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं। फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई।

रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।

एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो। असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।

राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।

आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।

रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।

रउरा हाथ के खिंचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी।

◆ ◆ ◆

www.bhojpurisahityangan.com

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

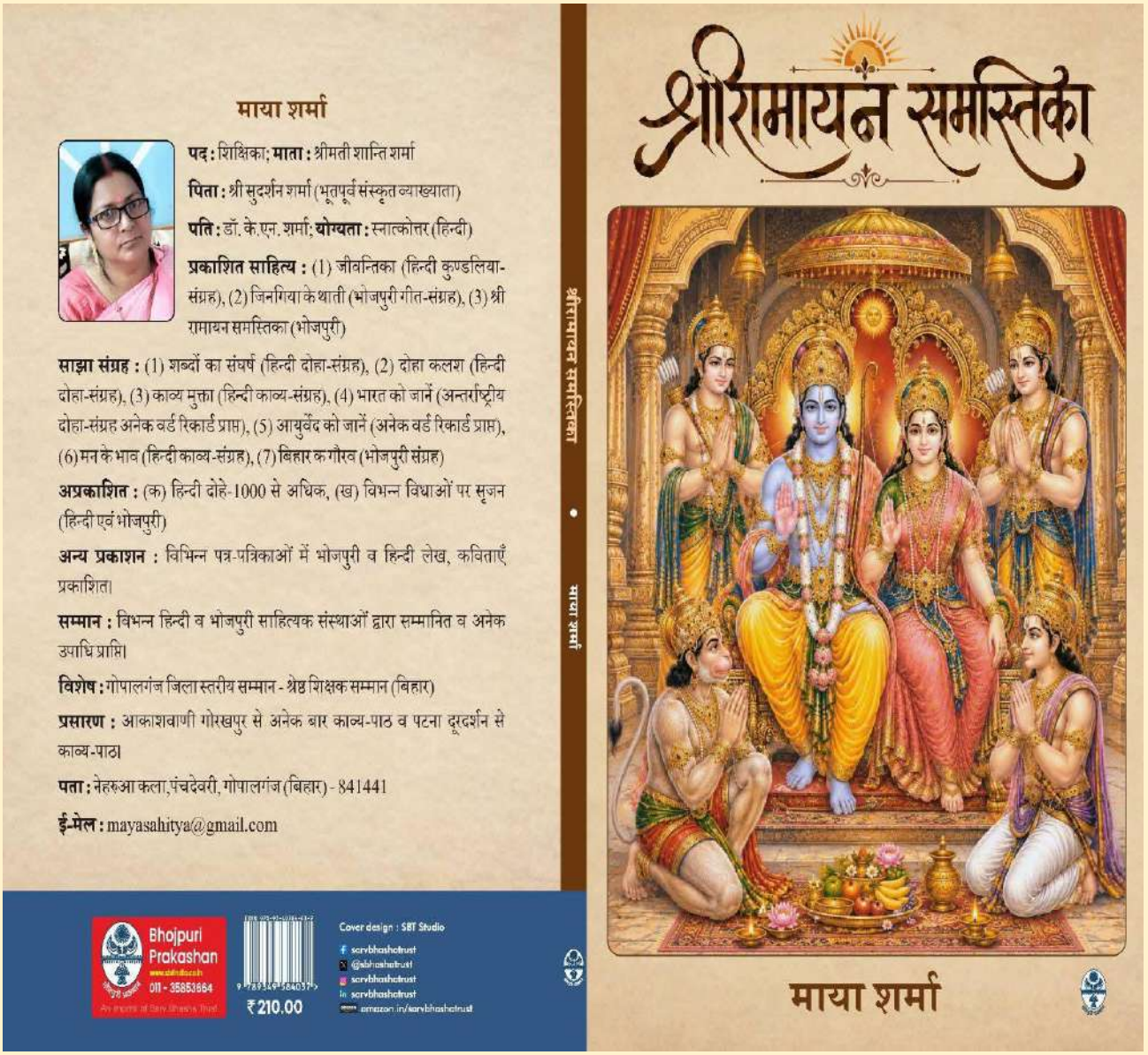

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, सरंक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के महत्वपूर्ण "माया शर्मा" जी के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।